सुरंगी संस्कृति

(निबंध-संग्रै)

ऋचा (इण्डिया) पब्लिशर्स, बीकानेर

सुरंगी संस्कृति

(निबंध-संग्रै)

ओम पुरोहित 'कागद'

ISBN : .....

© ओम पुरोहित 'कागद'

छापणहार	:	**ऋचा (इण्डिया) पब्लिशर्स** बिस्सां रो चौक, बीकानेर (राजस्थान) 334005
पूठै रो चित्राम	:	कुँअर रवीन्द्र
पैलो फाळ	:	2016 ई.
आखरसाज	:	संपत जोशी
मोल	:	अेक सौ पचास रुपिया
छापाखानो	:	सत्यं शिवं सुंदरम् प्रिंटर्स, बीकानेर (राजस्थान)

SURANGI SANSKRITI (Essay collection) by Om Purohit 'Kagad' **₹ 150**

आ पोथी
म्हारी लाडेसर बेट्यां
भारती व्यास, अंकिता व्यास
किंतु बिस्सा अर परंतु पुरोहित सारू

निबंध-निरख

मानता बिना अबोला : 9

बोलियां मिणिया : भाषा माळा : 12

भाषा बिना मान कठै ! : 14

बचावां भाषावां नै : 16

विधागत विविधता जरूरी : 19

संस्कृति में जीवण रा चितराम : 21

अपसंस्कृति रो खतरनाक पसराव : 27

समाज, साहित्य अर संस्कार : 29

साहित्य अर जथारथ : 31

अनुभव अर अर्थ री होड : 33

चिंतन री सांगोपांग पगडांड्यां : 35

सदा भवानी दाहिनी : 38

आओ, म्हारै कंठां बसो भवानी : 40

नौरता : नौ देवियां रा रूप : 43

शिव-शिव रटै, संकट मिटै : 52

स्यावड़ माता सहाय करी : 54

म्हैं रमण जास्यूं लूरड़ी : 56

गैरिया गैर रमै : 58

गणगौर पूजा : 61

63 : वसंत पांच्यूं

65 : मरजादा रो तिंवार रखपुन्यूं

68 : चौमासो : मुरधर रो उच्छब

70 : ठंडा झोला देई म्हारी माय

72 : छम छम करती लोहड़ी आई

74 : बीकानेर अर आखाबीज

77 : आखातीज रो कोड

79 : कवि भूंगर नै रंग

82 : बातां री रमझोळ

84 : आपां रो कल्पतरु

87 : सावण री डोकरी : बूढी माई

89 : बातां रुळगी भाषा लारै

91 : आपणा अजब-गजब सवाल

93 : आपणा इलाका : आपणा नांव

95 : मरुधर महिमा मोकळी

⌘

मानता बिना अबोला

राजस्थानी भाषा नै आठवीं अनुसूची में घालण अर राजस्थान री दूजी राजभाषा थरपण री मांग साहित्यकार करै, सांसद करै, विधायक अर पंच-सरपंच करै। विधानसभा संकल्प पारित करै, पण मानता रो काम और अळगो होवतो बगै। बोलणियां दस करोड़ सूं बेसी लोग आजादी रै बाद सूं लेय'र आज तक मायड़ भाषा रै नांव माथै ठगीज्योड़ा बोल तक नीं सकै। इण रो ओळमों किण नै? आम राजस्थानी री अंतस-पीड़ रो पारखी अर हेताळु कुण? उण री उण पीड़ माथै चोपा कुण लगावै कै उण री जुबान आजादी रै बाद कटी है? बो आजादी रो कांई अरथ लगावै? आजादी सूं पैली राजस्थानी भाषा री चेतना निरविवाद रूप सूं सबळी ही। आजादी रै बाद भी अेक-दो दसक तक राजस्थानी भाषा री प्रांतीय संपर्क खिमता प्रमाणित रैयी है। पण कालांतर में धीमै-धीमै अैड़ी पीढी सामनै आयी जकी नै कदैई 'रोजगारोन्मुखी शिक्षा' रै नांव माथै, कदैई 'राष्ट्रीय पिछाण री आड' में अर कदैई कथित 'आधुनिक जीवन-स्तर री कसौटी' माथै राजस्थानी भाषा सूं लगोलग दूरी अर हिंदी-अंग्रेजी री बेसी नजदीकी अेक लाजमी नियति रै रूप में सीकारणी पड़ी।

इण प्रवृत्ति रा भौतिक, व्यावसायिक, राष्ट्रीय या तथाकथित भूमंडलीय ओळावां में चावै पांच-सात प्रतिशत अस्थाई सुपरिणाम रैया हुवै, पण 'स्व' बोध री शाश्वत चेतना रो उत्तरोत्तर घाटौ अर उण रा दुष्परिणाम नब्बै प्रतिशत सूं बेसी ई सामनै आया है। दुख री बात है कै प्रदेश री बुद्धि अर चेतना 'धन' अर 'जस' कमावणै में ई खरच होय रैयी है। जे स्वनामधन्य राजनीतिक, लेखक, चिंतक, विचारक अर साहित्यकार राजस्थानी चिंतन, दर्शन, संस्कृति अर संवेदना री मूळ 'स्वभाषा' री आबरू री जाग्यां 'ठाठ-बाट' अर 'धन-दौलत' री ताकत नै सीकारण नै मजबूर है तो आम आदमी, खास कर पेट पाळण सारू रुजगार नै इन्नै-बिन्नै भटकती युवा पीढी नै 'स्वभाषा राजस्थनी' सूं कांई सरोकार है? केई लोगां नै पुरस्कारां री चिंत्या है, तो युवा पीढी नै रुजगार री। दोन्यूं वर्ग आप-आपरी भांत रा निरवाळा समझौता करयोड़ा गूंग में फिरै अर मायड़ भाषा आपरी ओळख सारू झुरै। जद कै ओ साव साच है कै दोन्यां री अबखाई राजस्थानी भाषा री राज-मानता सूं ई मिटसी। पण सोचै कुण?

घणकरा प्रांतां आप-आपरै चौगड़दै आप-आपरी राजभाषा री बाड़ लगा राखी है। इण बाड़ नै पार करणो राजस्थानी युवकां रै बस री बात नीं है। आं प्रांतां नियम बणा राख्यो है कै जको युवक बठै री राजभाषा में दसवीं पास नीं है वो बठै री किणी नौकरी सारू अरजी नीं लगा सकै। इण पेटै राजस्थान रो बेरुजगार देस रै घणकरै प्रांतां मांय नौकरी सारू अरजी ई नीं लगा सकै। पण राजस्थान हिंदी प्रांत होवण रै कारण किणी भी प्रांत रो बेरुजगार अठै अरजी ई लगा सकै अर नौकरी ई लाग सकै। देस री लूंठी धरमसाळा बणग्यो राजस्थान, भाषा रै अभाव में। आई.अे.अेस. अर आई.पी.अेस. परीक्षा में ई लगोलग 22 प्रांतां री राजभाषा रा पेपर हुवै, पण राजस्थानी भाषा रो नीं हुवै। दूजै प्रांतां रा बेरुजगार अेक आपरी मायड़ भाषा रो पेपर लेवै अर अेक अंग्रेजी रो। इणी रै कारण आं परीक्षावां में बां प्रातां रा बेरुजगार पास हुवै। पण राजस्थान रै बेरुजगार री अबखाई है कै उण री भाषा रो पेपर नीं हुवै। हिंदी उण री मायड़ भाषा नीं अर अंग्रेजी उणरै भोगै नीं बैठै। इण रो उपाय अेक ई है, का तो राजस्थान ई आपरै भाषा री बाड़ लगावै का पछै सगळां प्रांत आप-आपरी भाषाई बाड़ हटावै अर हिंदी रै पाण 'कम्पीटिशन' में उतरै। हिंदी नै राष्ट्रभाषा रो साचो मान देवै। अेकलै राजस्थान नै 'राष्ट्रभाषा हिंदी' रै मान सारू त्याग री मूरती बणाय'र भोळावणो बंद करै।

आज तथाकथित चिंतक राजस्थान रै लोगां नै समझावण में संको नीं करै कै प्रांतवाद अर भाषावाद रा मुद्दा उठावणा घातक है, पण बै बंगाल, केरल, पंजाब, गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गोवा, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा आद नै नीं समझावै कै आप री राजभाषा छोडो अर देस-हित में हिंदी अंगेजो। बै समझै कै राजस्थान त्यागी है, अठै बलिदान री जूनी परंपरा है, अै लोग मान सकै। पण बै ओ नीं समझै कै थे लोग बुद्धिजीवियां नै तो आटै में लेय सकै पण 'लोक' नै कियां परोटसो? बुद्धिजीवी तो बुद्धि पेटै पेट भर लेसी, लोक रो कांई बणसी? जको अदालतां अर राज रा दफ्तरां में आपरी भाषा रै अभाव में 1947 सूं अबोलो खड़्यो है।

हरेक भाषा रा तीन रूप हुवै— लौकिक, साहित्यिक अर कामचलाऊ या फंकसनल। 'लोक' रो आपरै काम सूं काम राखण रो सुभाव हुवै, साहित्यकार नै आपरै बौद्धिक कौशल रो प्रदरसण करणो पड़ै अर कामचलाऊ समाज (लोक) नै जियां-तियां आपरो काम काढणो हुवै। पण आं तीनां नै ई आपरी मायड़ भाषा री दरकार हुवै। साहित्य में मायड़ भाषा रो वौवार 'लोक' रो हित नीं कर सकै। 'लोक' रो हित तो रोज-रोज रा काम, राज सूं संबंध, अदालतां में आपरी भाषा में अभिव्यक्ति, विधानसभा, जिला परिषद, पंचायत समिति, पंचायत, नगरपालिका आद में आपरी भाषा में बोलण

री आजादी सूं ई सधै। आं संस्थावां में अपरोगी भाषावां रै वौवार रै कारण 'लोक' तो अबोलो रैय जावै अर उण री संवेदना अंतस में ई घुट जावै। आ स्थिति 'लोक' रै विकास में सैं सूं लूंठी बाधा है। अठै प्राथमिक शिक्षा आपरी मायड़ भाषा में नीं होवण रै कारण निरक्षरता बढी है अर सीखण री गति ई दस बार लारै रैयगी। अठै रा टाबर दसवीं तक तो हिंदी सीखता रैय जावै अर शिक्षा रा दूजा क्षेत्र हाथ सूं निकळ जावै। राजस्थान रो 'लोक' इण बाधा रो दंस 1947 सूं झेल रैयो है।

राजस्थान पेटै आ बात कैवणी भी गलत है कै अठै सारै प्रांत री भाषा राजस्थानी नीं है। आ बात तो दूसरै प्रांतां माथै ई लागू हुवै। पंजाब में खाली पंजाबी, गुजरात में अेकली गुजराती, बंगाल में अेकली बंगाली, महाराष्ट्र में अेकली मराठी ई नीं है। अपुठो आं प्रांतां रै दो-दो, चार-चार जिलां में दूजी भाषावां बोलीजै। पण बठै री अेक ई भाषा नै मानता है। राजस्थान रा अेक-दो जिला में दूजी भाषा है तो कांई फरक पड़ै? 28-30 जिलां में तो राजस्थानी भाषा ई बोलीजै। पण कुण समझावै?

साची बात तो आ है कै राजस्थानी भाषा री मानता रो विरोध अठै रा निवासी अर राजस्थान रा साचा हेताळु नीं करै। विरोध करै बारला ई लोग। पण लोकतंत्र में बहुमत री बात राखीजै। राजस्थान रो बहुमत राजस्थानी भाषा री राजमानता रै पख में है अर इण रो प्रमाण है विधानसभा में संकल्प रो ध्वनि-मत सूं पारित होवणो। राजस्थानी भाषा नै मानता नीं मिलणै सूं सईकां री जूनी संस्कृति नै ऊंचण आळी अेक सिमरथ भाषा रो दुनियां सूं लोप होवण रो खतरो पड़तख है, क्यूं कै दिनोंदिन लोक वौवार सूं आ दूर होवती जाय रैयी है। ओ तो विज्ञान रो नियम है कै जकी चीज वौवार में नीं रैवै वा नष्ट हू जावै, जियां कै आदमी री पूंछ।

⌘⌘

बोलियां मिणिया : भाषा माळा

नदियां रै जळ सूं ई समंदर भरीजै। भरियो समंदर ई सोवणो लागै। बिना जळ तो समंदर अेक दरड़ो। मोटो समंदर बो ईज जकै में घणी सारी नदियां आय मिलै। भाषा भी समंदर होवै। बोलियां होवै नदियां। बा ईज भाषा लूंठी जकी में घणी बोलियां। आ बात बतावै भाषा-विज्ञानी। आपरी निजर है कीं भाषा तणी बोलियां— उड़िया-24, बंगाली-15, पंजाबी-29, गुजराती-27, नेपाली-6, तमिल-22, तेलगु-36, कन्नड़-32, मळयाळम-14, मराठी-65, कोंकणी-16, हिंदी-43, अंग्रेजी-57 अर आपणी राजस्थानी में 73 बोलियां। अब बताओ कै कुणसी भाषा लूंठी? किणी भाषा रो सबदकोस बोलियां रै सबदां री भेळप सूं सामरथवान बणै। जकी भाषा में बोलियां कम, उण रो सबदकोस बित्तो ई छोटो। आपणी मायड़ भाषा राजस्थानी रो सबदकोस दुनिया रो सै सूं मोटो सबदकोस। राजस्थानी भाषा में अेक-अेक सबद रा 500-500 पर्यायवाची। अेक सबद रा इत्ता पर्यायवाची किणी भाषा में नीं लाधै। भाषा-विज्ञानी जॉर्ज ग्रियर्सन 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में, डॉ. अेल.पी. टैस्सीटोरी 'इंडियन एंटीक्यूवेरी' में अर डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी 'पुराणी राजस्थानी' में राजस्थानी नै दुनिया में सै सूं बेसी ठरकै आळी भाषा बताई है।

हरेक भाषा में बोलियां होवै। अेक भाषा मुख-सुख सूं बोली। अेक भाषा बोली री ओळ में बोलीजै। पण अकादमिक भाषा रो ठरको न्यारो। हिंदी तो घणा ई लोग बोलै। हरेक री हिंदी न्यारी-न्यारी। पण भणाई में पूरै देस री अेक ई हिंदी, जकी में पोथ्यां छपै। बा हिंदी अेक। आपणै पड़ोसी पंजाब नै ल्यो। पंजाब री राजभाषा पंजाबी। पंजाबी में पटियाळवी, दो आबी, होशियारपुरी, मलवई, मांझी, निहंगी, भटियाणी, पोवाधि, राठी, गुरमुखी, सरायकी आद 29 बोलियां। पण बठै जका राजकाज रा दफ्तरी हुकम, अखबार-पत्रिकावां अर भणाई री पोथ्यां निकळै, बै अेक इज भाषा में निकळै। बा है मानक पंजाबी। राज रा हुकम सूं ई किणी भाषा रो मानक थरपीजै। इकसार कायदो बणै। जकै दिन आपणी राजस्थानी राजकाज री भाषा थरपीजसी, उण दिन मानक राजस्थानी भी थरपीजसी। सगळै दफ्तरां, अखबारां,

पत्रिकावां अर पोसाळां री पोथ्यां में अेक ई भाषा चालसी। बा होसी मानक राजस्थानी। जद तक ओ काम नीं होवै, बठै तक लोग आप-आपरी बोली में लिखै। इण में हरज भी नीं है। अब देखो, पंजाब रै हर अंचल में न्यारी-न्यारी बोलियां बोलीजै। पण विधानसभा, कोट-कचेड़्यां, पोसाळां, जगत-पोसाळां अर अखबार-पत्रिकावां में राज री थरप्योड़ी मानक पंजाबी ई बपराईजै। पंजाब रै भी हरेक लेखक री भाषा में उणरै अंचळ री महक भी आयबो करै। आवणी लाजमी है। इण सूं भाषा रो फूठरापो बधै। आपणै राजस्थानी लेखकां री भाषा में भी आपरै अंचळ रो लहजो झलकबो करै। आपां हरेक अंचळ री भाषा रो संवाद चाखां तो ठाठ ई न्यारा। बगीचै री सोभा भांत-भंतीला फूलां सूं ई बध्या करै। अेक ई रंग-सुगंध रा फूलां रो किस्यो मजो!

राजस्थानी में भी मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, वागड़ी, हाड़ोती, मेवाती, भीली, ब्रज अर मारवाड़ी समेत 73 बोलियां। आं सगळी बोलियां नै भेळ'र ई राजस्थानी भाषा बणै। जकी भाषा में जित्ती बेसी बोलियां, वा भाषा बित्ती ई सिमरध। राजस्थान री अै सगळी बोलियां मिणिया है अर राजस्थानी भाषा आं मिणियां री माळा। जनकवि कन्हैयालाल जी सेठिया री कविता री अै ओळ्यां—

मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, वागड़ी, हाड़ोती, मरुवाणी,
सगळां स्यूं रळ बणी जकी बा, भाषा राजस्थानी।
रवै भरतपुर अलवर अळघा, आ सोचो क्यां ताणी!
हिंदी री मा, सखी बिरज री, भाषा राजस्थानी।
जनपद री बोल्यां है मिणिया, माळा राजस्थानी।।

⌘⌘

भाषा बिना मान कठै!

आपरी भाषा पिछाण बणावै। भाषा गमै तो पिछाण गमै। ठौड़ ठिकाणां रा नांव। गांवां रा नांव। चीज-बस्त रा नांव। भाषा पाण चालै। भाषा खुरै या मिटै तो ठौड़-ठिकाणां, गांव-स्हैर अर चीज-बस्त रा नांव ई खुरै-मिटै। दूजी भाषा रै राज में नांव बदळै। अंग्रेजां री टैम कोलकातां सूं कलकत्ता, चैन्नई सूं मद्रास, बैंगलुरु सूं बंगलोर अर मुंबई सूं बोम्बे या बम्बई होग्या। ओ बदळाव बठै री मायड़ भाषा री संकड़ाई अर अंग्रेजी रै बिगसाव पेटै होयो। अैड़ा उदाहरण इतिहास में पण भरयोड़ा पड़्या है। आ ई हालत आज राजस्थान री है। अठै री मूळ भाषा राजस्थानी माथै धूळ जमाय दी। हिंदी-अंग्रेजी रै प्रभाव में आय'र ठौड़-ठिकाणां, गांव-स्हैर अर चीज-बस्तां रा नांव ओळ-पचोळा होयग्या। अब अैड़ा नांव ना हिंदी रा रैया, ना राजस्थानी रा।

आपणै अठै मूंग-मोठ-चीणां री दाळ होवती। पण आ दाळ, दाळ सूं दाल होयगी। चावळ सूं चावल, बळीतै सूं बलीतो, कळ सूं कल, फळ सूं फल, बळ सूं बल, झळ सूं झल, टाळ सूं टाल, नाळी सूं नाली, फळी सूं फली, काळ सूं काल, पाणी सूं पानी, दळियै सूं दलिया, कांधळ सूं कांधल, बसीरोत सूं बनीरोत, बीकाणो सूं बीकानो, कांधळोत सूं कांधलोत होग्या। अैड़ा उदाहरण है। आप कीं मैणत करो अर फड़द बणावो।

इणी भांत गांव-स्हैरां रा नांव ओळ-पंचोळा होग्या। बिगड़्योड़ा नांव बांच-बांच हांसी भी आवै अर झाळ भी। पण करां कांई! किण रै आगै कूकां? आवो, आपणी निजरां साम्हीं कांई रैयो। कियां खुर रैयी है आपणी मायड़ भाषा राजस्थानी। गांव रा नांव आपां बोलां कांई हां अर लिखां कांई हां। गांव-स्हैरां रा नांव बदळतां-बदळतां अेहलकारां रै हाथां राज रै कागदां में कियां बदळग्या।

आपणो गांव धोळीपाळ हो। धोळी यानी सफेद। पाळ यानी 'बूट' का रेत री भींत। बदळ'र होग्यो धोलीपाल। अब कठै रैयो धोलीपाल में धोळीपाळ रो अरथ? इयां ई परळीका सूं परलीका, जसाणा सूं सजाना, कमाणां सूं कमाना, दुलमाणां सूं दुलमाना, दीपलाणा सूं दीपलाना, पीळीबंगा सूं पीलीबंगा, काळीबंगा सूं कालीबंगा,

अयाळकी सूं अयालकी, गोरखाणा सूं गोरखाना, ढाळिया सूं ढालिया, भिराणी सूं भिरानी, फेफाणा सूं फेफाना, गाढवाळो सूं गाढवालो, किळचू सूं किलचू, रूणीजै सूं रूनीचा, काळिया सूं कालिया, डबळी सूं डबली, काळू सूं कालू देखतां-देखतां ई बणग्या। राज रै कागदां में चढग्या। कीं रै कह्यां बदळ्या? कोई ठाह नीं। अब पण पाछा कियां बदळीजै। इण सारू खेचळ री पण दरकार। पाठकां! आप-आप रा गांवां रा नांव संभाळो। सागी जूनो अर इतिहासू नांव सोधो अर सूची बणाओ। आपरो इतिहास अंवेरण में संको क्यांरो!

भाषा राखै देस री, आन-बान अर स्यान।
भाषा खूट्यां आप री, नई बचैलो मान।।

⌘⌘

बचावां भाषा नै

भूमंडलीकरण रै इण दौर में सै सूं लूंठो खतरो जे किणी नै है तो बो है भाषा, संस्कृति, धर्म अर अध्यात्म नै। कदै ई इण सीगै विश्वगुरु बाजण वाळो भारत आज हीणो दिख रैयो है। भाषा रा तो अता-पता ई नीं है। भळै संस्कृति, धर्म अर अध्यात्म रो कुण धणी? विदेशी अर देशी चैनलां, अखबारां अर पत्रिकावां में देश री भाषावां रो कादो करण री होड मच रैयी है। इण खूंदा-खूंदी में छोटी भाषावां तो चिंथीज रैयी है, पण राष्ट्रभाषा हिंदी भी दम तोड़ती लखावै। देशी-विदेशी चैनलां माथै जकी हिंदी बोलीज रैयी है उण री सुरग में बैठ्या राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, आचार्य कृपलानी, मदनमोहन मालवीय, स्वामी विवेकानंद जैड़ा राष्ट्रभाषा रा हिमायत्यां नै ई सूग आवती होवैला। अैड़ी अबखी घड़ी में निबळा लोग मायड़ भाषा री थापना सारू निबळो आंदोलन चलाय'र कियां आस पाळ्यां बैठ्या है? समझ सूं बारै है।

लोकराज में निरवाळा मत होया करै। इणी धारणा अर कीं वोट री राजनीति रै चक्कर में धर्म अर अध्यात्म री सुध तो लेई ई नीं जाय सकै। संस्कृति-संस्कृति रटण वाळा लोग ई इण माथै अेकमत नीं कै भळै संस्कृति छेकड़ कैवै किणनै है? संस्कृति बणै भाषा, धर्म, अध्यात्म, रैवास, पैरवास अर खानपान सूं। पण अै सगळी चीजां तो आजादी रै बाद सूं अबै तांई रुळ ई गयी। तो सवाल ओ है कै भळै संस्कृति रैयी कठै? अर उणनै गमाई कुण?

संस्कृति नै गमावण में सै सूं सिरै है तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी राजनीतिज्ञ, देशी-विदेशी चैनल, कान्वेंट स्कूल, वोट री राजनीति, आथूणी संस्कृति रा अंधभगत देशी लोग। आं सगळां अेक री कांण राखण सारू दूजै री आंण लुकाई। इण लुकाव-छिपाव रै भूंडै खेल में ई आपणी रूड़ी पिछाण अर संस्कृति ई रुळगी। आज जद चैनल अेक अपरोगी भाषा बपराय'र उण खिचड़ी भाषा नै राष्ट्रभाषा हिंदी कैवै तो भाषा विज्ञानां नै ई उबाक आवै। आज मीडिया जकी अंग्रेजी में 'फ्राई' करयोड़ी हिंदी रो प्रयोग करै, उणरै चालतां हिंदी रै साम्हीं आपरै जींवती रैवण रो ई खतरो ऊभो होय

रैयो है तो पछै राजस्थानी जैड़ी राजमानता नै उडीकती भाषा रा कांई हाल होसी ? कुण सूं छानी है आ बात ?

ग्लोबलाइजेशन रो राग अलापणियां लोग बहुराष्ट्रीय संस्थान रै हाथां री कठपूतळ्यां बण्योड़ा बादी में बोलै। अंग्रेजी भाषा, पैराण अर खाण-पान बपरावै। खांदा उचकाय'र अंग्रेजी साहित्य री कोटेशनां बांचै जणै बां रो खुद रो देश तो गंवारियो ई है। अैड़ा लोग देशी शराब, देशी घी अर देशी कट्टा (पिस्तौल) रै अलावां कीं पण देशी नीं बपरावै। पीजा, सॉस, कॉल्डड्रिंक अर चाऊमिन आं रा लाडेसर है तो राबड़ी, गुलराबड़ी, सांगरी, फोफळियो, रोटी, भात, खीचड़ी अर चूरमो बोल्यां अै लाजै। अैड़ै लोगां रै हाथां भाषा अर संस्कृति री होय रैयी हत्या नै भळै कुण ढाबै ? ढाबै बै ई जकां नै आपरी भाषा अर संस्कृति सूं लगाव है अर इण हत्या पेटै काळजै में पीड़ है। पण फेर सवाल है कै पीड़ किणरै उठसी ? पीड़ उठसी हिमायत्यां रै, पण हिमायती तो सोध्यां ई नीं लाधै। हिमायती लाधै लेखां में अर पोथ्यां में। पण अै कागजी शेर दहाड़ ई सकै, शिकार नीं कर सकै। इस्या हजारूं है, पण है अेकला।

''विश्व-बाजार में रुजगार मोकळा है। बारै जायां नौकरयां अर देश सूं बेसी धन मिलै।'' इण सोच में रंगीज्योड़ा अै लोग लिखै तो राजस्थानी में है, पण घर में राजस्थानी रो अेक ई सबद नीं बपरावै। आपरै टाबरां नै अंग्रेजी री घूंटी देवै अर अंग्रेजी कान्वेंट स्कूलां में पढावै। उण लाडेसर रै कानां में राजस्थानी या हिंदी रो कोई सबद नीं पड़ जावै, इण सारू घर में अंग्रेजी या अंग्रेजी सूं फ्राई हिंदी ई बोलै। मायड़ भाषा तो मायड़ री गोदी में ई भ्रूणहत्या री शिकार होय जावै ! इण घड़ी मायड़ भाषा री रुखाळी भळै कुण करै ? 'कॉन्वेंट कल्चर' वाळा स्कूल तो हिंदी सूं मोकळी नफरत करै, भळै भारतीय भाषावां रो कठै कुण हिमायती ?

कम्प्यूटर शिक्षा पसर रैयी है। कम्प्यूटरां में अंग्रेजी, जापानी, फ्रेंच, उर्दू, चीनी, कोरियाई भाषावां रो राज है। हिंदी रा सॉफ्टवेयर तो लारली सदी रै छेकड़ में ई आया है। भारतीय भाषावां रा सॉफ्टवेयर तो नाममात्र रा ई है। कम्प्यूटर में राजस्थानी भाषा रो नाम ई नीं है। तो आपणी मायड़ भाषा साथै कांई बीतसी ? आ बात भी नीं है कै राजस्थान रा कम्प्यूटर इंजीनियर नीं है। पण बां कनै कम्प्यूटर में काम आवण वाळा राजस्थानी सबद नीं है। सवाल है कै आं सबदां री पूरती भळै कुण करावै ?

राजस्थानी भाषा री राजमानता री मांग रो विरोध करणियां नै इण अबखी घड़ी में राजस्थानी भाषा प्रेमियां रो साथ देवणो चाईजै, क्यूं कै इण घड़ी तो उणां री खुद री भाषा री भी हत्या होय रैयी है। ओ कळजुग तो सगळी भारतीय भाषावां नै लील रैयो

है। अैड़ी घड़ी में सगळी भारतीय भासावां रा हिमायत्यां नै भेळा होय'र खड़ो होवणो चाईजै। आज अेक भाषा री थरपणा री नीं, अपूठो सगळी भारतीय भाषावां नै बचावण री दरकार है।

आपरी विचारधारा री थापना सारू रात-दिन संस्कृति-संस्कृति रटणियां नै अबै समझ ई जावणो चाइजै कै संस्कृति नै रगदोळ्यां अर काट करयां मूळ संस्कृति मिटै। इयां भूंडी अर अधकचरी संस्कृति जलमै, जकी री छत्तर छियां में मायड़ भाषा नीं बच सकै, अपूठी नूंवी अर खिचड़ी भाषा ई जलमै, जकी पेट पड़ ई गई है। नूंवी खिचड़ी संस्कृति रै जलम माथै थाळी बजावण री चिंत्या नै छोड'र आपां नै आवण वाळी भूंडी घड़ी री चिंत्या करणी चाईजै।

⌘⌘

विधागत विविधता जरूरी

राजस्थानी साहित्य में काव्य री भरमार सदा सूं रैयी है। काव्य अर राजस्थानी अेक-दूसरै रा पर्याय ई मानीजै। प्राचीन राजस्थानी साहित्य में काव्यगत विविधता री भरमार रैयी है। उण घड़ी काव्य में नूंवा-नूंवा प्रयोग होया। छंद, अलंकार अर रसां रो सांगोपांग संयोजन गरब करण जोग होयो। इणरै लारै तरक है कै उण घड़ी कागजी संस्कृति नीं जलमी ही अर साहित्य मूंडां-दर-मूंडां भंवतो। इण सूं उण में परिष्कार अर परिमारजन होवतो रैवतो। वाचक अर श्रोता आम्हीं-साम्हीं रैवता। इण घड़ी पड़तख आलोचना-समालोचना चालती रैवती। साहित्यकार भी इण मोह में रैवता कै उणां रै रचना करम नै पड़तख सरावणा मिलै। आ खेचळ ई रैवती कै नित रा नूंवा प्रयोग करया जावै। देस-काळ अर दरसाव नै भेजै में राखतां काव्य रै ऊंचै मानदंडां री थापना करण री खेचळ, उण काळ रै साहित्यकारां री खास खेचळ ही। पण आज इण पेटै कमी लखावै।

नूंवी कविता राजस्थानी साहित्य में पग रोपती लखावै। अबै छंद-अलंकार तो कठै लारै ई छूटग्या। फ्री-वर्स सांगोपांग डेरा घाल राख्या है। नूंवा लिखारा 'काव्यशास्त्रां' रै सा'रकर ई नीं निकळणो चावै। गद्य रूप में लिखी फ्री-वर्स री कवितावां नै बै सीधी साफ ओळ्यां समझ'र धड़ाधड़ लिखण अर छपण री होड में लाग रैया है। इण सूं राजस्थानी साहित्य री काव्य सिरजणगत खास छिब में बदळाव आय रैयो है। पण आ घड़ी काव्य री कीं अरथां में अबखी घड़ी ई कैयी जाय सकै।

नूंवी कविता फगत गद्य में भावां अर संवेदनावां रो ई भंडार नीं है। फ्री-वर्स री कविता में फगत छंद ई छूट्या है, काव्य-सौंदर्य नीं। अलंकार अर रस तो उणी ठौड़ है। नूंवी कविता री बुणगट में भीतरली अर बारली लय री दरकार हुवै, इण साच नै भूल्यां कविता कद रैवै। इण माथै माथापच्ची आज रो नूंवो कवि कद करै? सोचण री बात है। साहित्यिक चिंतन अर साहित्यिक सिरजण सारू राजस्थान री जमीन बख पड़ती है। इण सारू नूंवी कविता में नूंवा प्रयोग करण री सांगोपांग गुंजाइस जींवती है। दरकार फगत खेचळ री है।

नूंवी कविता री भरपूर खेप मिलै। आं रचनावां सूं जे कवियां रा नांव अळगा करद्यां तो ओ ठाह ई नीं पड़ै कै अै कवितावां कुण सै कवि री है। ओ नूंवै काव्य रो कमजोर पख ई है। नूंवी कविता ई आपरै खास अंदाज रै कारण आपरै रचनाकार रो नांव ऊंच'र चाल सकै— इण माथै खेचळ री दरकार है। अर आ खेचळ ई राजस्थानी साहित्य नै अलग मुकाम दिराय सकै।

काव्य रै इतर दूजी विधावां माथै तो रचनावां रो काळ ई रैवै। गद्य पेटै आलोचना, निबंध, ललित निबंध, नाटक, अेकांकी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोर्ताज, बाल कविता, बाल कहाणी, बाल नाटक, बाल अेकांकी, लघुकथा, डायरी, यात्रा संस्मरण आद री बेजां कमी रैवै। गद्य री इण लूंठी विधावां नै आज री 'फटाफट' कविता जाणै भख ई गई। आं विधावां माथै काम करण री खेचळ नूंवै लिखारां में कम ई लाधै। अपूठो पुराणां गद्यकार भी छंदमुक्त फटाफट कविता लिखण नै ढूक रैया है। आ गद्य साहित्य सारू पीड़ री ई बात है।

राजस्थान री संस्कृति जुगां जूनी है। आपरी थापना सूं पैली रा अनुभव अठै री धरती आपरी गोदी में लियां बैठी है। आं अनुभवां नै कलम सूं अंवेरण वाळां री दरकार है। लोक-साहित्य, लोक-संस्कृति, लोककला, लोकसंगीत, लोकनृत्य, भाषा, व्याकरण, बिणज, प्रकृति, खान-पान जैड़ा अलेखूं विषय है जिण माथै निबंध लिख्या जाय सकै। इतिहास अर प्रकृति रै अकूत खजानै सूं साहित्यिक विधावां रा अमोलक पड़ाव करया जाय सकै। जूनी परंपरावां नै अंवेरयां ई घणो कीं लाध सकै। नूंवै साहित्य अर नूंवी विधावां रा मारग भळै मतै ई खुलण ढूक सकै।

राजस्थानी भाषा में अबार दूजी भारतीय भाषावां सूं कम साहित्य सिरजण नीं होवण री बात म्हैं नीं कर रैयो हूं। अठै म्हारो इसारो फगत विधागत विविधता कानी है। किणी भाषा री लूंठी पिछाण सारू फगत काव्य री ई नीं, गद्य री लूंठी परंपरा री दरकार हुवै। गद्य में ई भळै विधागत विविधतावां री भरमार हुवै तो कांई कैवणो!

⌘⌘

संस्कृति में जीवण रा चितराम

इसड़ी महमा मुरधर तणी, हिवड़ै उठै हुलास।
मुख स्यूं मुरधर कैवतां, मुंह में भरै मिठास।।
धन धोरा धन धोळिया, धन धरती मरु माय।
मरुधर महमा मोकळी, वरणन करी न जाय।।

चावा-ठावा कवि धोंकळसिंह चरला री अै ओळ्यां धोरा धरती राजस्थान री अकथ महिमा सारू अणमोल अर थिर परमाण है। राजस्थान री धरती देई-देवता नै ई रमण सारू ललचावै। इणी खातर मिनख जैड़ै निबळै जीव री कित्ती'क जाड़ कै बो इण री महिमा रै आगै पगां-नाड़ नीं करै। अठै रा जसगान तलवारां री टणकारां मांड्यां अर बैर्‌यां रै हिड़दै उठती धूजणी गाया। आ बात नीं है कै आ धरती हरमेस जुधभोम में ई लागी रैयी है। अठै री कळा, साहित्य अर संस्कृति सूं मूंडै बोलता चितराम ई आखै जग नै चेताचूक करण री सगती राखै। किणी भोम री महिमा उणरी कळा, साहित्य अर संस्कृति रै पसराव अर बिगसाव माथै ई होया करै। कला अर साहित्य रो दरसाव तो कलम री कोरणी करा ई देवै। पण संस्कृति रो पसराव कागदां, पत्थरां अर भींतड़्यां रै अंगेजण री चीज नीं होया करै। संस्कृति री लळक बठै रै जीवन-मूल्यां अर जीवण-सैली में ई देखी जाय सकै। संस्कृति नै निरखण अर पोखण सारू ना तो अेक मिनख अर ना बगत रो अेक काळ ई बोत होवै। इण सारू बो उण भोम रो इतियास, जीवण-शैली, खान-पान, रैवास, तीज-तिंवार, काल अर हाल नै झीणी तरै सूं निजरां मांय सूं काढणो पड़ै। इणी बात नै लेय'र जे आपां राजस्थानी संस्कृति री बात करां तो आपां नै आ कठै ई तो रजवाड़ां में पळती अर कठैई जंगळां में घास री सूकी रोटी खावती लखासी। इणी सारू राजस्थानी संस्कृति री झलक पावण नै बाळू री लै'रां अर खोळां में उतरणो पड़सी। जठै आपां नै दीखसी, राजस्थानी संस्कृति रो रूड़ो अर जूनो चितराम। राजस्थानी संस्कृति नै समझण सारू सगळां सूं पैली आपां नै अठै रै लोगां रै धरती सूं उपजतै लगाव नै देखणो पड़सी। मुरधर रा लोग आपरी धरती नै सुरग सूं ई मोवणी बतावता नीं धापै—

आ तो सुरगां नै सरमावै, ईं पर देव रमण नै आवै
ईं रो जस नर-नारी गावै, धरती धोरां री...
सूरज कण-कण नै चमकावै, चंदो इमरत रस बरसावै,
तारा निछरावळ कर ज्यावै, धरती धोरां री...

(मींझर : कन्हैयालाल सेठिया)

इणी धरती री आन-बान अर स्यान खातर मर मिटणो मुरधर रै अेक-अेक वासी रो पैलो काम। टाबर रै जलमण सूं पैलां ई मा उणनै आपरै दूध री आण दिरावती थकी अेक बीर होवण री आस करै। पालणै में हींडतै बाल नै 'बालो' सुणावै—

बालो पांख्यां बाहर आयो, माता बैण सुणावै यूं
बैर्‌यां रो सीस काट घर आईयै तूं

इण सूं ई आगै मा कामना करै कै म्हारो लाल सै सूं पैली इण धरती रो मोल जाणै। आपरै बडेरां री इण धरती रै कण-कण री रिछपाळ करै। बैरी चावै कित्ता ई लांठा होवो, इण धरती पर पग नीं राख सकै। इण सारू जे तनैं ज्यान ई गमावणी पड़ै तो मत ना संकी—

इळा न देणी आपणी, हालरियै हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय।।

(सूर्यमल्ल मीसण)

मुरधर में देस परेम री अैड़ी भावना जलमजात मिलै। जणै ईज तो पृथ्वीराज, दुरगादास राठौड़, महाराणा प्रताप, महाराणा कुंभा अर अमरसिंघ जैड़ा सूरमा धोरा-धरती पर जलम्या अर आपरी धरती पर निछरावळ होया। धरती सूं अणूतो लगाव ई उणरी कमियां अर अबखायां नै वरदान मान'र चालण री सगती देवै अर आ ईज सगती सिरधा उपजावै जलमभोम रै तांई।

बिना पाणी रै खेती करण रा मंतर जे कोई जाणै है तो वो है धोरां रो धोरी। राजस्थान खेती प्रधान तो है, पण 'खेती बिरखा सेती' जैड़ी अबखाई रो जीवतो-जागतो चितराम है। राजस्थान री इणीज अबखाई माथै दुखी होय'र डॉ. किरण नाहटा 'राजस्थानी साहित्य' में लिख्यो है कै स्यात विधना राजस्थान नै आपरी फूठरापै री गरमी देवण में सगळां सूं बेलसी किरपणता दिखाई है। पण राजस्थान रो बांकड़लो हाळी इण अबखाई नै सिर माथै लेवै अर आखातीज रै नैड़ै आवतां ई खळो काढ'र हठ उठा खेत कानी टुर व्हीर होवै। अब चावै छांट होवो चावै नीं होवो—

तपै अकासां तावड़ो, ना बादळ ना बीज।
हाळी हळ ले चालिया, आई आखातीज।।

(मरु महिमा, धोंकळसिंह चरला)

खेत में पूग'र हाळी बिरखा रा सुगन देखै। चिड़कल्यां रो धूड़ में न्हावणो, सांडै रो बिल रुक जावणो, किरड़कांट रो रंग बदळणो, गो'वां रो राग काढणो अर पपईयै रो बोलणो हाळी रै मन में उछाव भरै—

किरड़कांट रंग कई बतावै,
गो'वां राग जंगळ में गावै
आज सूरज रै मंड्यो कुंडाळो,
बिल रुकग्यो, सांडै आळो

(मरु महिमा, धोंकळसिंह चरला)

बिरखा होयसी, इणी आस में आभै साम्हीं जोवै। बिजळी खींवै। तीतर पंखी बादळी अर न्यारा-न्यारा रंग। अब बाकी कांई रैयग्यो— हाळी रै मन में। इण घड़ी रो चितराम नानूराम संस्कर्ता आपरी 'कळायण' में कोर्‌यो है—

बादीलै नभ बांधियो, पचरंग पेचो ताण।
हरखण लागी घण धरा, सजतो साजन जाण।।

बिरखा री पैली छांट पड़तां ई मुरधर में जीवण बावड़ जावै। गोर्‌यां भातै रा, टाबर डांगर चरावण रा, हाळी हळ रा, मोट्यार खळां रा, डैण-डैणती गुलगुलां रा अर कंवारा ब्यांव रा सपना देखण लाग जावै। पूरै मुरधर री आंख्यां साम्हीं कातीसरै री सोरम आवै अर काकड़िया, मतीरा, बोरिया, टींडस्यां, काचर, फोफळिया, सांगर्‌यां, मोठोड़ी अर गवारफळी रा सवाद निरत करण लाग जावै। कुल मिला'र मुरधर में सै रा सै सुगन सरगां रा—

मोट्यार गूंथै गोफिया, बूढा बट दी मूंज।
करसा बेगो सारलै, कै आभै री गूंज।।
डांगर बेगा टोरस्यां, मीठी दे टिचकार।
भातो आसी खोड़ में, आभै रा समचार।।
बादळ बीरा दाणां दे, मोटा-मोटा ढेर।
परणै कुंवारा गांव रा, आसीसां दै ढेर।।
टींडस्यां रा फोफळिया, फळ्यां सुकाऊं गुवार।
हरख कोड सूं जीमसी, चंपा रो भरताप।।

(काळ रा दूहा, ओम पुरोहित 'कागद')

बिरखा हुई अर समझो जमानो होयो। मुरधर में धाप'र खावण जोगा दाणियां होग्या। दाणियां बिक्या अर कंवारा परणीजग्या। काळ रा मार्‌योड़ा मोट्यार छक जवानी में बूढा दीसण लागग्या, पण अब घोड़ी चढण मुकलावणी लावण वहीर होग्या। मुरधर रा अै तौर मुरधर री धरोहर है। आं सूं धोरियां नै लगाव है। मुरधर रा वासी धान होयां काळ नै भूल जावै। चार महीना काम कर'र बाकी दिनां खाली बैठ'र खावणो धोरियां री तकदीर बणग्यो—

चार महीना काम रा, बाकी आठूं मास।
रैवै मौज उडावता, इण मुरधर रै वास।।

वैसाख रो महीनो तो मुरधर रो ईज, बाकी महीना नांव रा। झूंपड़ां में राबड़ी रा सबड़का अर नींद रा खर्राटा। रोही में चालता लूआं रा सरणाट जका मौत नै खींचै बरणाट। हिरणियां री तिरस, हिरण्यां रो कळप—

मा मरती रै हांचळां, लाग रै बाखोट।
लूआं मती उघाड़ज्यो, आतां-जातां ओट।।

(लू : चंद्रसिंह बिरकाळी)

रोही में डांगर चरावता टाबर। तपती बाळू माथै भाजै, पण छियां रो जे कठैई नांव होवै तो सांस लेवै। कठैई छियां का ठंड होवै तो पग ठंडा करै। समूळी आस छोड'र छेकड़ डांगरां रै पोठां पर पग मेल'र ठंडो करै अनै सुख पावै—

टाबरिया भाज्या बगै, झळती ताती लाय।
बळता पांव घसोड़ता, पोठां मांय चिरळाय।।

(कळायण : नानूराम संस्कर्ता)

लूआं रै बाद वसंत आसी। आ ईज खुसी है— झूंपड़ां में सूत्या धोर्‌यां री। इण सारू धोरी लूआं नै आसीस देवै—

सोभा सकल वसंत री, सौंपै मुरधर आप।
लूआं थे फूलो फळो, पावो सुख अणमाप।।

(लू : चंद्रसिंह बिरकाळी)

लूआं-आंध्यां रा दिन निकळै अर मुरधर में काळ रा दिन सरू हो जावै। लोग गांव छोड'र स्हैरां में कमावण-धमावण नै निकळै जका पाछा बिरखा होयां ई आवै। गोरड़्यां आपरै जोड़ीदार नै उडीकै अर बादळां सूं अरदास करै—

सड़कां भाटा कूटतां, काळा पड़ग्या साब।
जलमभोम में भेज दे, गोरा करल्यूं साब।।

कागद लिख-लिख मैं थकी, नीं आया भरतार।
थारै कैयां आवसी, बादळ दे समचार।।

(ओम पुरोहित 'कागद')

मुरधर में सावण री तीज। तीज पर हींडा अर सातू, छोरयां रा गीत। गीतां में माटी री महक। महक में जीवण री आस। आस मुरधर रो संसार। सावण लागतां ई लुगायां गावै

सावण आयो रे, म्हारी परणी जोड़ी रा भरतार
बलम जी, सावण आयो रे...

होळी रा रंग अर मुरधर में चंग। सुण्यां ई ठाह पड़ै कै रंगां सूं चंगां रो असर घणो। बूढा, जवान, टाबर, लुगायां नै जोध-जवान छोरयां रळ-मिळ जद नाचै-गावै तो सुरग रा सुख ई फीका लखावै। चंग री थाप ऊपर जद धमाळ गूंजै, मुरधर में जवानी वापरै। मुरधर रो अंग-अंग गावै—

मत मारो रे सांवरिया म्हारै लग जासी रे
मत मारो रे...

होळी रै बाद गणगौर। गणगौर छोरयां रो तिंवार। घर-घर माटी री, काठ री या चीणीमाटी री रंग-रंगीली गणगौरां बणै। छोरयां भागफाटी उठै। न्हावै-धोवै अर बाग सूं हरी दूध तोड़'र लावै अर गणगौर पूजै। गणगौर री खोळ भरणी, गणगौर नै पाणी पावणो, काजळ-टीकी लगावणी, ईसर नै पूजणो। कित्ता-कित्ता चाव होवै न्हानड़क्यां में। बात-बात सटै गीत। गीत-गीत सटै नाचणो। गणगौर नै सासरै भेज्यां पछै ढोकळां रो जीमण। ढोकळा में सक्कर अर देसी घी री महक इण तिंवार नै अमर बणायां राखै—

गौर अे गणगौर माता, खोल अे किवाड़ी,
बाहर ऊभी थांनैं पूजण वाळी।

अैड़ा मौकां पर घूमर, काजळी निरत, डांडिया, सांग अर गींधड़ री रुणक-झुणक देखतां ई बणै। इयां लागै जाणै मुरधर धोरा धरती नीं होय'र सपनां रो जींवतो-जागतो चितराम है। इणरै अलावा करवाचौथ, भाईबीज, काती न्हाण, आस माता, बासीड़ा, मळमास, रखपुन्यूं, दियाळी, लोहड़ी, तिलचौथ, सक्रांत, आखातीज, निरजळा इग्यारस जैड़ा तीज-तिंवार साल-भर चालता रैवै। आं अवसरां माथै मेळा मंडण, भेळा होवण अर नाचणै-गावणै रा कार्यक्रम होवता रैवै। भेळा बैठ'र गोठ में जीमणो। सगा-परसंग्या सूं मजाक करणो, ब्यांव-सावां माथै गाळ्यां अर गीत गावणो। अठै री संस्कृति रो निरवाळो रूप दरसावै।

खेतां मांय तेजाजी रा गीत। चोपाळां में पाबूजी, गोगैजी, हरिरामजी अर रामदेवजी री फड़ बंचणी। रामलीला अर दसरावै रो उच्छब रूड़ै राजस्थान नै अेकता में बांधै। कुरजां, मोरिया, बन्ना, बन्नी, बालो, पोदीणो, जीरो, तंबूरो, राणो काछबो अर केई और गीत मिनख नै प्रकृति सूं जोड़'र सांस्कृतिक विरासत नै सरजीवण करै। साच ई तो है, राजस्थानी संस्कृति रो जोड़ दुनियां में नीं मिलै।

⌘⌘

अपसंस्कृति रो खतरनाक पसराव

कोई तो कारक है जका हिंदुस्तान नै हिंदुस्तान अर राजस्थान नै राजस्थान बणावै। सोधां तो लाधै। बै कारक है मिनखामोल अर संस्कृति। आज आं दोन्यां रो तेजी सूं लोप होय रैयो है। मिनख आपरै निजू लोभ-लाभ नै पूरण सारू व्यापक समाज नै पड़तख घाटो पूगा रैयो है। जद कै उण री जिम्मेदारी है कै आपरै फायदै सारू इण भांत कारज करै जिकै सूं उणरै देश-समाज रो भी फायदो हुवै। भौतिक सुख अर हालत में खुद रै फायदै रो सोच अर इण सारू परदेशी भाषा अर लटका-झटका तक अंगेजण में आज रो मिनख लारै नीं है। मिनख री लोभीवृत्ति रै पाण आज मिनखामोल अदीठ होय रैया है अर अपसंस्कृति पसरती जाय रैयी है। थोड़ा दिनां में ई पंजाब अर राजस्थान अनै हिंदुस्तान अर आस्ट्रेलिया में भेद करण रो माप नीं रैवैला। इण कावळ स्थिति माथै चिंतन करण, आपणी जूनी संस्कृति अर मिनखा मोलां नै बचावण री महताऊ जिम्मेदारी साहित्यकारां माथै कीं बेसी है।

आज लोभ कुळाचां भरै। लोग नौकरी लागण, धंधै में आगै बधण, आपरा भौतिक सुखां में बधेपो करण अर कुरसी हथियावण सारू बेमेळ रा गठबंधन करण में ऊंधा-पाधरा करण तक सूं सरम नीं करै। लोभ पूरण सारू मिनख-मिनख रो बैरी बण रैयो है। परमारथ, सदाचरण, अहिंसा, अभय, शुचिता, अभेद, स्वाध्याय, सत्य, प्रेम, सहकार, दया, क्षमा, करुणा अर त्याग जैड़ा मिनखामोल दिखण में ई नीं आवै। इण कारण ई च्यारूं कूंटी आपाधापी मच रैयी है। दूजै नै हूंवतो फायदो अर त्याग रै कारण खुद नै हूंवतै घाटै नै देखण री थावस आज कम ई है। मिनखाजूण सारू आ अपरोगी घड़ी है।

आभो अर धरती यानी प्रकृति नै मिनख आपरी निजू भोग री सामग्री मान राखी है। जाणै बो दुनियां में अेकलो ई आयो हो। दूजा जीव-जिनावरां री चिंता उणरै अैड़ै-नेड़ै ई नीं है। धरती रा दूजा जड़-चेतन सूं उण रो लगाव लोभ तक ई है। अठै तक कै मिनख अर मिनख में झगड़ो हो। देस अर समाज सूं ई खुद नै ऊपर मानणै री प्रवृत्ति बधती जाय रैयी है। हिंदुस्तान रो दर्शन देश नै सुरग सूं लूंठी मानै तो राजस्थान री

संस्कृति सिर साटै रूंख अर मातभोम लारै माथा देवण री है। पण आज तो अै फिल्मां अर विज्ञापनां रा कथानक भर रैयग्या है। अै कुमोल कद जलमग्या, ठाह नीं पड़ी! आ अपसंस्कृति कद माखर पसरगी, लखाव ई नीं होयो? स्यात राजनीति, शिक्षानीति अर साहित्य में इण रा बीज लाधै।

राजनीति रो आपरो अेक न्यारो चरित्र है, क्यूंकै इणमें आ छूट है कै ओहदा लेवण सारू सौ-कीं जायज है। धोळै कनै लाल बैठ सकै अर लाल काळै सागै। पण साहित्य तो आजाद है। देश-समाज रै बिगड़तै इण रूप सारू आवण वाळै बगत में साहित्यकारां नै कुण माफ करसी? जिम्मेदारी तो *सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे भवन्तु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दु:ख भाग्भवेत्।। अर अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम।।* सूं भी आगै बधणै री ही बां माथै। पण सईकां रो चिंतन पग लारलै कियां दे दिया? स्यात विचारां रा खेवणहार भौतिक सुखां में उळझ'र *वसुधैव कुटुम्बकम्* री जाग्या *निजी कुटुम्बकम्* नै घणै फायदेमंद मान'र हुवै जियां हुवण दियो।

चिंतन देश अर समाज सापेक्ष होवणो चाईजै, नीं कै मिनख सापेक्ष। देश अर समाज री चिंता में मिनख री चिंत्या भिळ्योड़ी हुवै। फगत मिनख री चिंता सूं देश अर समाज तो लारै छूटै ई है। देश अर समाज रै पतन सूं मिनख रो पतन हुवै अर देश अर समाज री प्रगति सूं मिनख री प्रगति मतै ई हुवै।

अठै म्हारो मतलब कोई उपदेश देवण सूं नीं है। आपरै मन री बात अर सवालां रा सावळ उत्तर सोधण सूं है। आप री जिम्मेदारी अर म्हारी जिम्मेदारी कोई न्यारी-न्यारी नीं है। काळ में कळेस रो नीं, काम री दरकार हुवै। आज साहित्य में जिण चिंतन रो काळ है उण माथै चिंतन अर सिरजण री दरकार है। नूंवी विधा अर नूंवा चिंतन में ई आपणी भाषा, कला, साहित्य अर संस्कृति अर मिनखामोल माथै सांगोपांग सिरजण होय सकै। जियां दूध नै हांडी सूं काढ'र चावै चाडै में घालो चावै थरमस में, दूध तो दूध ई रैवै।

राजस्थानी भाषा रै विगसाव सारू राजस्थानी साहित्य रै विगसाव री जरूरत है। कला, लोककला, संस्कृति अर भाषा माथै ई सिरजण हुवै तो राजस्थानी भाषा रो गौरव और बधै।

⌘⌘

समाज, साहित्य अर संस्कार

साहित्य फगत मन री बात कैय देवण रो उपक्रम नीं है अर नीं मनोरंजन रो साधन। पड़तख रो हू-ब-हू कर देवणो भी साहित्य-सिरजण नीं है। मन री कुंठा नै कागद माथै उकेरणो भलां साहित्य कीकर होय सकै! साहित्य रा पारखी जूनै जुग सूं कैवता आया है कै साहित्य बो ई है जको समाज रो हित करै। कुंठा अर मैल नै धोवै। पड़तख अर असल सूं साच नै ढूंढणो अर साच नै थिर करणो ई साहित्य है। जूना मनीषी तो कैवै कै साहित्य समाज नै संस्कारित करै, मिनख नै मिनख बणावण री खेचळ करै। मिनखां मोलां री रुखाळी करै अर समाज हित रा देस काळ अर परिस्थिति मुजब नूंवां मिनखामोल घड़ै, जका मिनखपणै रै बधेपै री चिंत्या करै।

सहित्य प्रेम बपरावै-बरतावै। प्रेम भेळप में बधै। भेळप सारू अेक-दूजै री कांण राखणी पड़ै। त्याग करणो पड़ै। अेक-दूजै नै समझणो पड़ै। फगत आप रा हक अर पीड़ सारू दूजै नै पीड़ पुगावण सूं मन में विकार जलमै। अै विकार भेळप नै नास करै। कठोपनिषद री अेक रिचा कैवै— ''म्हे भेळा रैय'र अेक-दूजै री रक्षा करां। भेळा रैय'र उपभोग करां। अेक-दूजै रै शौर्य रो बधेपो करां। तेजस्वी बणां। अेक-दूजै री तरक्की सूं ईर्ष्या नीं करां!''

सहनाववतु सहनाभुनक्त सहवीर्य करवावहे।
तेजस्विनावधितमस्तु मा विद्वषवहे।।

अपणी अैड़ी पुरातन परंपरा नै छोड'र पच्छम री नकल माथै इकलग चिंत्या अंगेजणो घातक ई है। मतांतर, निजू सोच अर कुंठा नै सगळां रै सोच में घोळणो कठै रो चिंतन? पच्छम री संस्कृति अर समाजू सिद्धांत अपणै अठै री संस्कृति अर समाज में नीं रच-पच सकै। निजू गिंगरथ सूं समाज नै कांई सरोकार? दुनियां तो सौरफ रा गेला ढूंढ रैयी है। विकास री पगडांडी सोच रैयी है। अैड़ी अबखी घड़ी में दुनियां नै उळझावणो साहित्य रा सरोकार तय नीं करै। खुद रै मन में उपजी ईर्ष्या रै लारै भाज'र साच नै नकारणो, बडी लकीर नै छोटी करण सारू ढोवणो, कठै री स्याणप?

बात कैवण सारू अनुशासन होया करै। संस्कारित भाषा होया करै। बौवार होया करै। बात नै कठै कैवणी, कठै ढाबणी, इण रा ई कांण-कायदा होया करै। कीं सबद समाजू बौवार सारू चौपाळ में बोल्या जाय सकै। कीं सबद फगत सखा-मंडली में बोल्या जाय सकै अर कीं सबद घर में बपराया जाय सकै, पण कीं सबदां नै ओटै में ई बपराईज्या करै। अठै आं सबदां रा रूप थरपीजै— शील अर अश्लील। अश्लील सबद चौपाळ में नीं बपराईजै। अठै छोटा-बडा टाबर, बैन-बेटी अर मायतां सरीसा लोग होया करै। अश्लील सबदां नै ढाबणो अर मरजादा थरपणो अठै मिनख रो धरम हुवै। चौपाळ अर साहित्य रै कागदां में फरक भळै कित्तोक हुवै? चौपाळ सगळां री अर साहित्य ई सगळां रो। भळै अश्लील सबदां नै कुण सीकारै।

साहित्य साधक आपरी मरजी रा मालक हुवै। साहित्य सिरजकां नै समझावणो, म्हैं समझूं ठीक भी नीं हुवै। पण घर में तो सगळा भाई बैठ'र मतो विचार सकै। भलो-बुरो अनै दसा-दिसा माथै बंतळ कर सकै। अठै म्हारी चिंत्या साहित्य में बधती अश्लील, गाळी-गळोच अर निजू कुंठा अनै ईर्ष्या नै उकेरती भाषा रै बौपार माथै है। आप म्हारी बात माथै हामळ भरो, आ ई जरूरी नीं है, पण आछो-बुरो तो सोचणो ई पड़सी। साहित्य री भासा कैड़ी हुवै, इण माथै विचारणो ई पड़सी। अपसंस्कृति रै बधतै पगां में संस्कृति री बेड़्यां भाषा रै माध्यम सूं घालणी ई पड़सी। साहित्य अर असाहित्य में फरक करण री खेचळ तो करणी ई पड़सी। नीं तो इण घड़ी री साख भरतां भविख आपणी साख नै नकार ई सी। आपणै परोस्योड़ै नै पढ'र आज रा पाठक तो मून होय जासी पण भविष्य रै मूंडै चाती लगावण सारू उण घड़ी आपां रै हाथां कीं नीं रैवैला।

राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति दुनियां में निरवाळी है। आछो खावणो, आछो पैरणो, आछो बोलणो अर आछो ई सुणणो अठै री मरजादा है। आपणी संस्कृति माड़ै नै ई आछो बतावै। भूंडै माथै निजर ई नीं न्हांखै तो भळै भूंडै रो बखाण करै ई कीकर! अठै निरासा रो नीं, आसा रो सिद्धांत है। मांदा सबदां नै बधा'र बोलण री संस्कृति है। दीयो बुझै, पण कैवां दीयो बधग्यो। दुकान बंद हुवै पण कैवां दुकान मंगळ करीजगी। पाणी खूट्यां कैवां पाणी बधग्यो। काटणो-मारणो, खूटणो, बुझणो जैड़ा नकारात्मक सबदां रो बौपार अठै री संस्कृति में नीं है। भळै अपसंस्कारित अर अश्लील सबदां रो अठै कांई काम? जुगां सूं रचियोड़ी संस्कृति री अमोलक धारा नै ढाबणो आपणो काम कीकर होय सकै! आओ, आपां आपणी भाषा, साहित्य अर संस्कृति नै सवाई करां।

⌘⌘

साहित्य अर जथारथ

पच्छम रै चिंतन सूं जको सोच भारत में आयो उणमें जथारथ रो चित्रण करण री प्रवृत्ति साहित्य सिरजण में अबखाई खड़ी कर दी। आज साहित्य सिरजण में जथारथ चित्रण नै बडो गुण मानीजै। यथारथ चावै कित्तो ई भूंडो हुवै अर समाज नै तोड़ण रो काम करै पण बिड़दाईजै। जद कै ओ साव साफ है कै जथारथ रो चित्रण समाज नै संस्कारित नीं करै, अपूठो अपसंस्कृति नै जलम देवै।

साहित्य सिरजण दीठ रो नीं, हिड़दै रो काम है। बुद्धि अर चिंतन रो काम है। जथारथ सूं दीठ मिल सकै। सीख मिल सकै, उण माथै विचार, कूंत अर परिष्कार सूं नूंवी दिशा मिल सकै। इण सूं भूंडै जथारथ नै नकारण अर नूंवै सामाजिक परिवेश नै आकार मिल सकै। यथारथ हर बार समाज सारू महताऊ हुवै, आ जरूरी कोनी, पण जथारथ सूं सीख लेवणी महताऊ होय सकै।

आपां किणी दरसाव नै किण दीठ सूं देखां अर किण भांत अंगेजां, ओ सवाल होय सकै। दीठ रो पसराव ई सोच नै बिगसावै। दीठ नै सांवटां तो सोच ई सांवटीजै। सोच सांवटीजै तो विचार अर चिंतन ई सांवटीजै। दीठ अर सोच में जे जथारथ रो बासो अर मोह हुवै तो कुंठावां जलम लेवै। इण घड़ी बौद्धिक जड़ता पसरै जकी समाज नै फूठरो बणावण में अबखाई खड़ी करै। रामायण अर महाभारत री कथावां में आपां देखां कै उण काळ रै जथारथ रो परिष्कार महर्षि वाल्मीकि अर वेदव्यास किण भांत करयो है। उण परिष्कृत जथारथ सूं आज ई समाज सीख लेय रैयो है। उण काळ रा भूंडा पख बिड़दाइज्या नीं नकारीज्या है अर हीण दीठ सूं देखीज्या है। इणी कारण बै आज ई समाज सारू महताऊ ग्रंथ है।

जथारथ रो है ज्यूं रो ज्यूं बखाण साहित्य नीं होय सकै। इण नै रिपोर्ट कैयो जाय सकै, खबर कैयो जाय सकै। आज प्रिंट मीडिया अर इलैक्ट्रानिक मीडिया ओ काम तो बढ-चढ'र कर ई रैयो है तो पछै साहित्य सिरजण री दरकार ई कठै बाकी रैय जावै। आ बात साव साच है कै साहित्य समाज री आरसी है। आ ई साची है कै आरसी नागै

नै नागो अर पैरयोड़ै नै पैरयोड़ो दिखावै पण आपां नागै नै ई आरसी दिखावां कै थूं कित्तो भूंडो लागै अर उणनै पैरयोड़ा बिच्चै लेजाय'र दिखावां कै 'देख, पैरयोड़ा कित्ता फूठरा लागै' तो स्यात सिरजण धरम रो सांगोपांग निरवाह हुवै।

साहित्य सिरजण रो धरम है मिनखामोलां री रुखाळी करणो, मिनख नै अपसंस्कृति सूं अळगो राखणो अर समाज में समरसता, नैतिकता अर मिनखपणो बधावणो। सामाजिक टकराव ऊभो करणो तो स्यात नीं है।

आज री राजनीति पखधर राजनीति है। देस रै लोकतांत्रिक ढांचै नै खड़्यो करण में लाग्या 58 सालां में आ तर-तर बधी ई है, कम नीं हुई। पखधर राजनीति जथारथ में कूड़ रो पुट लगाय'र और भूंडो बणावै जको समाज री समरसता नै तोड़ै। पखधरां रा पख बधै अर बै उण माथै चढ'र बोटां री फसल काटै। साहित्यकार आं लोगां रा सारथी बणै तो समाज किसै कूवै में पड़ै! साहित्यकार रो धरम अठै तो जागणो ई चाईजै। बो कूड़ नै कूड़ अर साच नै सच कैवै, पण सिरजण में ऊजळा पख राखै जका मतै ई भूंडै पखां नै ढक लेवै। साहित्यकार जे पखधरां रै हित में काम करै अर कूड़ रै पांख लगावै यानी भूंडै यथारथ में कूड़ रो पुट लगाय समाज साम्हीं पेस करै तो इण में समाज रो हित कठै? अैड़ा भूंडा अनै घड़्योड़ा जथारथ सामाजिक टकराव ई खड़्या करै अर क्रिया माथै पड़क्रिया ई करै। क्रिया तो होय सकै, पण पड़क्रिया तो करयां ई हुवै। पड़क्रिया मतै ई नीं, उकसायां हुवै। ओ उकसावण रो काम पखधर राजनीति ई करै। साहित्यकार पखधर राजनीति रो मोहरो बणै तो बो साहित्यिक अपराधी ई कैईजसी।

फूठरै समाज में भूंडी क्रिया अनै भूंडी क्रिया माथै और भूंडी पड़क्रिया भूंडो दाग है। आं दागां नै हरयां राखणा पाप है अर पाप साहित्यकार जथारथ रै नांव माथै करै तो माफी कठै? भूंडै दागां नै जित्तो जल्दी हुवै उखाड़ बगावणा चाईजै। ओ काम साहित्यकार ई कर सकै, पखधर राजनीति, नीति नीं। समाज फूठरो बणै, इणरी बिड़द आवण वाळी पीढियां करै, इण सारू इण काळ में फेर कोई महाभारत, रामायण, मेघदूत, गीतांजलि रचीजै तो बात बणै। भौतिकता अर बौद्धिकता रै विकास री इण सबळी सदी रो कोई तो साहित्यकार वाल्मीकि, वेदव्यास, तुलसीदास, रवीन्द्रनाथ बणै जको सईका तांई विश्व साहित्य इतिहास में ऊबो रैवै।

⌘⌘

अनुभव अर अर्थ री होड

आजकाल हरेक क्षेत्र में आधुनिक सबद नै कीं बेसी बपराईज रैयो है। आधुनिक दरअस्ल है कांई ? इण माथै माथापच्ची कम ई करीजै। मोटै तौर पर बो कीं जको आज है या बीस-तीस साल पैली री स्थिति नै आधुनिक मान'र बातां, विचार अर कथन घड़ीजै ? साहित्य में ई आधुनिक रो बौपार बध्यो है। आधुनिक कहाणी, आधुनिक कविता अर आधुनिक आलोचना आद रो। आधुनिक कठै सूं सरू हुवै अर कठै जाय'र निवड़सी ? इण रो जवाब नीं है।

पश्चिम में आधुनिक बो है जको विज्ञान सूं प्रभावित अर नूंवै जुगबोध सूं नातो राखै। पैलै विश्वयुद्ध अर दूजै विश्वयुद्ध रै बिचाळै इण री प्रधानता मिलै। कला री दुनिया में नूंवा प्रयोग री ऊरमा ई आधुनिकता थरपीजगी। चलतै सूं हट'र सोचणो, पढणो, लिखणो अर बपरावणो ई आधुनिकता होयगी। आजकाल तो ढाळै सूं हट'र उठणो, बैठणो, खावणो-पीवणो, बोलणो भी आधुनिक बजै। परंपरा माथै चालणो रूढिवादिता बजै। अर इणरै चालतै ई नूंवी अर पुराणी पीढी में फरक आयग्यो जकै नै आधुनिकतावादी जनरेशन गेप कैवै। भलांई इण आधुनिकता रै चिंतन अर बोध सूं संबंधां में जड़ता आवै या संयुक्त परिवार खिंड जावै।

चिंता री बात तो आ है कै सनातन अर अधुनातन या आधुनिक में उळझ्योड़ै मिनख नै स्यांति क्यूं नीं ? सनातन भेळै रैवै तो दुनियां सूं कटण रो खतरो दिखाईजै तो आधुनिकता मिनख नै जडां सूं अळगो करै। जकै देश रो सनातन चिंतन आधुनिक चिंतन सूं सवायो हुवै उणनै आपरो चोळो बदळण सारू प्रेरित करण री प्रेरणा देवणी किणी षड़यंत्र सूं कम नीं है। सनातन आधुनिक सूं सिरै नीं हुवै या सिरै हुयां ई माथै वोट नाखण सूं पैली ऊंडी परख री दरकार हुवै। म्हैं समझूं, इण माथै हाल तांई नीं तो लंबी बहस हुई है अर नीं परख ई। बस आंधै झोटै दांई गेल बगण री होड लाग रैयी है, जकी जुगां रै अनुभवां सूं पोषित संस्कृति नै खारिज करण रो षड़यंत्र है। राजस्थानी साहित्यकारां नै तो इण माथै गंभीर चिंतन करणो ई चाईजै। साहित्य सृजन री आधुनिक

विधावां तो बपराईज सकै, पण आपरै जूनै चिंतन अर सांस्कृतिक धरोहर नै कियां बिसराईज सकै।

आज राजस्थानी साहित्यकारां साम्हीं खतरो है कै आधुनिकता री होड में कठैई बां रो राजस्थानी होवण रो गरब ई नीं किचरीज जावै। ग्लोबलाइजेशन रै इण भूंडै दौर में आखी दुनिया नै सनातनी देशां रै सामनै आपरो सांस्कृतिक रूप बचावण रो सोच है। इण अबखी घड़ी में आपरी मायड़ भाषा नै गमायां बैठ्यो राजस्थान फगत साहित्यकारां रै भरोसै बैठ्यो आस रो दिवलो चसावै।

कला रै क्षेत्र में आधुनिकता अर परंपरा री होठ जगजाणी है। परंपरा आपरा जूना अनुभव नीं छोडणो चावै तो आधुनिकता री पैली ई सरत आ है कै बा आपरी परंपरा रो मोड छोडै। तथाकथित वैज्ञानिक आविष्कारां री आड में परंपरा नै नकारण री गुंजाइश भी रैवै अर आधुनिकता में क्षणिक लाभ अर आनंद पड़तख रैवै। पण अंगेजणो तो बो ई हुवै जको सईकां रो साच है अर मिनख रै विकास री हाल तांई जातरा रो सारथी है।

आधुनिकता में नैतिक शून्यता भंवै। आधुनिकता दर्शन नै भूंडै अर आस्तिकता नै बिसरावै। साफ बात है कै आधुनिकता फगत पड़तख अनुभवां नै चितारै, अर्थ नै सिरै सूं खारिज करै। अनुभव पड़तख बाहरी रूप रो चिंतन करै, पण अर्थ ऊंडै बैठ्या भावां नै प्रगटावै। साफ है कै आधुनिक सृजन में अनुभवां रो इज चित्रण हुवै, अर्थ रो नीं। कोई चित्र देख्यां अनुभव तो हो सकै पण उणनै देख्यां काळजै में मंड्यै चित्राम नै देखण सारू अरथावणो ई पड़ै। फगत अनुभव तो संवेदना रो सांगोपांग विस्तार नीं कर सकै। इण सारू अनुभव, संवेदना, सबद, अरथ आप-आपरी ठौड़ राखै। फगत आधुनिकता री लपेट में आयां आ कड़ी टूट सकै।

आज रो चिंतन अर सृजन राजनीति री छत्रछाया में चालै, इणी कारण उण सूं दूर नीं व्है सकै। राजनीति रा आधुनिक तौर-तरीका अर भ्रष्टाचार साहितय सृजन नै भी प्रभावित करै। इणी कारण आज रै साहित्य-सृजन में राजनीति अर व्यंग्य मुखरित होय जावै। पण सृजन में बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय री भावना रो लोप होवणो सनातन संस्कृति सूं कटणो ईज कैईजसी।

⌘⌘

चिंतन री सांगोपांग पगडांड्यां

अेक कहावत है— 'घर रा जोगी जोगड़ा, आन गांव रा सिद्ध'। आ कहावत आपणै देस रा चिंतकां माथै सांगोपांग लागू होवै। हिंदुस्तान रै प्राचीन चिंतन में जूण रै सगळै पखां माथै सबळ नीत्यां मिलै। धरम-करम, विधि-विधान, मजूर-मालक अर श्रम-श्रमिक, चावै कोई क्षेत्र हुवो, अठै अणथाग ग्रंथ अनै विचार मिलै। पण आज रा चिंतक भाजै अर रूस, चीन अर अमेरिका रै चिंतन नै ल्या हिंदुस्तान्यां आगै पटकै। बो चिंतन चावै अठै री संस्कृति रै अनुरूप हुवै, चावै नीं हुवै। अठै री जूण रै ढब बैठतो हुवै, चावै नीं बैठतो हुवै। अैड़ा तथाकथित चिंतक हिंदुस्तान रै सईकां रै चिंतन नै फिरोळण तक सूं संको करै अर दूजै देसां रै अणभावणै चिंतन अनै दरसण री आरत्यां उतारै। संस्कृति-संस्कृति रटै, पण आपरै देस री संस्कृति टाळ'र अणजोगती संस्कृति नै लड़ावै।

आज मजूर-मालक रा आपसी संबंधां माथै मोकळी बै'स चालै। वेतन, बोनस, भत्ता अर मजूरी सारू आंदोलन हुवै। अै सारी बातां रूस, चीन अर अमेरिका रै चिंतन-दरसण ढाळै हुवै। जद कै हिंदुस्तान रै सईकां रै चिंतन में 'नियोजक-करमकार' संबंधां माथै सांगोपांग नीत्यां है। लूंठा ग्रंथ है। पण आज रा चिंतक बां नै बांच्यां बिना ई दकियानूस कैवण रै फैसन में खांगा हुयोड़ा बगै। देस रै श्रमिक आंदोलनां रा नेता अर रूस-चीन रा झंडा ऊंचा'र थूक बिलोवणिया चिंतक जे अेकर 'शुक्र नीति' दोरी-सोरी बांच लेवै तो बांरी आंख्यां खुल जावै।

'शुक्र नीति' में श्रमिक असंतोष रा कारण अर निवारण बताया है। सालीणो इनाम यानी 'बोनस' देवण अर घणो काम करणिया मजूरां नै 'प्रोत्साहन राशि' देवण री बात साफ-साफ लिख्योड़ी है। 'शुक्र नीति' में श्रमिक असंतोष रा छह कारण बताया है—

वाक्पारुष्यान्नयून भृत्या स्वामी प्रबलदण्डत:।
भृत्यं प्रशिक्षयेत्रित्यं शतुत्वं त्वपमानत:।।

अर्थात् कम मजूरी, करड़ो बरताव, अपमान, भूंडो बौवार, बेसी जुरमानो अर करड़ो दंड करमचारयां में असंतोष अर कुंठा पैदा करै। इण असंतोष नै दूर करण सारू उपाय है—

भृतिदानेन सन्तुष्टा मानेन परिवर्धिता।
सन्तित्वता मृदुवाचा ये न तयजन्त्याधिमं हिते।।

अर्थात् जे कर्मचारी नै पूरी मजूरी दी जावै, बगतसर प्रमोसन दियो जावै, उण साथै नरम बैवार करीजै अर उणरै निजू दुख-तकलीफां में सहभागी बणीजै तो करमचारी आपरै नियोजक रो साथ कदैई नीं छोडै। इण बात सूं साफ ठाह पड़ै कै हिंदुस्तान रा अर्थशास्त्री 'अधिकतम लाभ अर न्यूनतम मजूरी' रै सिद्धांत रा हिमायती नीं हा। आज रो 'श्राम विधि शास्त्र' भी इण सूं आगै नीं सोच सकै। दुनियां में बोनस रो सिद्धांत तो औद्योगिक क्रांति रै बाद ई जलम्यो है। 'शुक्र नीति' तो हजारां साल पैली इण सिद्धांत नै मान्यो है। 'शुक्र नीति' में हर बरस अनिवार्य रूप सूं बोनस देवण री बात कैईजी है अर कित्तो बोनस देवणो चाईजै, इण रो ई प्रावधान करीज्यो है—

अष्टमांशं परितोष्य दद्यादुभृत्याय वत्सरे।

अर्थात् हरेक करमचारी नै उण री महीनै री मजूरी रै आठवैं हिस्सै रै बराबर सालीणो इनाम यानी 'बोनस' दियो जावणो चाईजै। इत्तो ई नीं, कुसळता सूं अर घणै काम करणियै करमचारी नै निरवाळो सालीणो इनाम देवण री बात ई कैवीजी है—

कार्याष्टमांशं वा दद्यात कार्य द्रागधिकं कृतम्।

अर्थात् जे कोई करमचारी आपरो काम कुसळता सूं करै तो उणनै उणरै करयोड़ै काम सूं हुयै फायदै रो आठवों हिस्सो खास इनाम रै रूप में दियो जावणो चाईजै जकै सूं उण री कुसळता नै मानता मिलै।

'शुक्र नीति' मजूर री मौत हुवण माथै उणरै किणी जोगतै बेटै नै का परिवार रै किणी दूजै मैंबर नै उण री ठौड़ नौकरी देवण री बात साफ-साफ कैई है—

स्वामिकार्ये विनष्टो यस्तत्पुत्रे तदभृतिं बहेत।
यावद्गालोऽन्यथा पुत्र गुणान छष्ट्रां भृतिं बहेत।।

अर्थात् जे किणी करमचारी री मौत उण री सेवानिवृत्ति सूं पैली हुय जावै तो उणरो लायक बेटो उण री ठौड़ नौकरी लागण रो मतैई अधिकारी बण जावै। अैड़ै बेटै नै मोट्यार होवण माथै उण री जोगता सारू मजूरी तय कर'र देवणी चाईजै।

हिंदुस्तान रो चिंतन अर दर्शन 'वर्ग-संघर्ष' नै मानता नीं देवै। हिंदुस्तान रा मनीषी प्रकृति अर समाज में ई संघर्ष री बजाय 'सर्वत्र समन्वय' चावै। 'शुक्र नीति'

कैवै कै करमचारी आपरै नियोजक रो फायदो अर भलो सोचै अर नियोजक आपरै करमचारी रो। करमचारी दु:ख-संकट में है तो नियोजक उण रो अर जे नियोजक दु:ख-संकट में है करमचारी उण रो साथ नीं छोडै। नियोजक सारू साफ है कै बो आपरै करमचारी रै हितां सारू आपरै हितां रो त्याग करै, जणै ई बो अेक आदर्श नियोजक बण सकै।

भृत्यस्य एव सुश्रुलोको नापती स्वामिन त्यजेत।
स्वामी स एव विज्ञेयो भृत्यार्थे जीवितं त्यजेत।।

अर्थात् अेक आछो करमचारी बो है जिको आपरै मालक नै दुख री घड़ी में नीं छोडै अर अेक आछो मालक बो है जको आपरै करमचारी रै हित में आपरो बलिदान ई देवै।

वोट री राजनीति रै कारण आज रा श्रमिक नेता पारट्यां सूं बंध्योड़ा है अर दूजी पारटी सूं अलग दिखण सारू दूजै देसां रै दरसण अनै संस्कृत रै चिंतन नै हिंदुस्तानियां माथै लाद रैया है। इण सूं आपणी संस्कृति रो तो साव सत्यानास होय ई रैयो है अर बिना मतलब रा वर्ग-संघर्ष ई खड़ा होय रैया है। आपणो देस कोई आज-काल में खड़्यो करत्योड़ो देस नीं है। इण कनै सईकां रै चिंतन अर दर्शन री धरोहर है। आपां नै आपणी धारां में बगणो चाईजै। दूजी धारा में बगणै में डूबण रो खतरो रैवै। राजनीति रै लारै लाग'र सईकां रै चिंतन अर दर्शन नै धूड़ में नीं नाख'र रळकाय'र अंगेजणो चाईजै। साहित्यकार किणी रा दबेल नीं हुवै। किणी अणजोगती विचारधारा नै ऊंच'र खांधा माथै आईठाण उगावण सूं बेसी काम है समाज अर मिनखाजूण रै सौरफ सारू चिंतन करणो। इण चिंतन सारू हिंदुस्तान रै सईकां रै चिंतन में सांगोपांग पगडांड्यां है, इण गेलां माथै बगण री दरकार है।

⌘⌘

सदा भवानी दाहिनी

राजस्थान रजपूतां-रणबंकां री खान। पण सारू रण। पण पाळै अर रण भाळै। जीत री पाळै हूंस। हूंस पण स्यो-सगत रो वरदान। इणीज कारण स्यो रा गण भैरूं अठै पूजौ। मां सगत दुरग रुखाळी। इणीज कारण दुरगा बजै। रणबंका खुद नै सगत रा पूत बतावै। मरुधरा रै कण-कण में रण री छाप। रण री देवी रणचंडी री ध्यावना आखो राजस्थान करै। नौरतां में तो कैवणो कांई। घर-घर दुरगा री पूजा हुवै। सरुपोत में गजानंद महाराज अर सुरसत सिंवरीजै। भळै मात भवानी ध्यावै।

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख होय गणेश।
पांच देव रक्षा करै, ब्रह्मा विष्णु महेश।।

एक साल में च्यार नौरता आवै। चैत, आसाढ, आसोज अर माघ रै चानण पख री अेकम सूं नौमीं तांई। चैत रा नौरतां नै वासंतिक नौरता। आसाढ अर माघ रा नौरता। आसोज रा नोरता बजै शारदीय नौरता। नौरतां में जगजामण मां भागोती रै सैकड़ूं रूपां री पूजा होवै। तीन मूळ देवियां— महालक्ष्मी, महाकाळी अर महासरस्वती। शक्ति रा उपासक आंरी ध्यावना करै। शक्ति रा उपासक इणी पाण शाक्त बाजै।

दीठमान जग रै सरूपोत में बिरमा जी परगट्या। अेकला डरप्या। साथ री गरज पाळी। खुद रै ई रूप सूं देवी परगटाई। इण सारू बिरमा अर सगत में राई-रत्ती रो ई भेद नीं मानीजै। महादेवी कैवै— म्हैं अर बिरम सदीव एक हां। बुद्धि रै भरम सूं ई भेद लखावै। इणी जग जामण शून्य जगन नै पूरण करियो। महादेवी यानी महालक्ष्मी देवियां अर देव देव परगटाया। महालक्ष्मी पैली महाकाळी अर महासरस्वती नै प्रगट करी। भळै आं दोन्यां नै एक-एक स्त्री-पुरुष सिरजण री आज्ञा दीवी। खुद बिरमां अर लक्ष्मी नै सिरज्या। महाकाळी शंकर अर त्रयी नै। महासरस्वती विष्णु अर गौरी नै। पछै आपस में जोड़ा बणाया। शंकर-गौरी, विष्णु-लक्ष्मी, बिरमा-त्रयी (सुरसत) रा जोड़ा बण्या। भळै बिरमा अर सुरसत जगत रच्यो। विष्णु अर लक्ष्मी जगत नै पाळ्यो। शंकर अर गौरी परळै बेळा में जगतसंहार कर्‌यो।

महालक्ष्मी-महाकाळी अर महासरस्वती ई नौ देवियां प्रगट करी। शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी अर सिद्धिदात्री। आं रा दूजा रूप है— चामूंडा, वाराही, ऐन्द्री, वैष्णवी, महेश्वरी, कौमारी, लक्ष्मी, ईश्वरी अर ब्राह्मामी। नौरतां में इणी नौ देवियां री पूजा देवी भागवत, कार्मण्डेय, पुसण अर दुर्गासप्तसती में बताई विधि मुजब नौ दिनां तक होवै। पैलै दिन केश-संस्कार। दूजै दिन केश-गूंथण-संस्कार। तीजै दिन सिंदूर-आरसी संस्कार। चौथे दिन मधुपर्क तिलक संस्कार। पांचवैं दिन अंगराग-आभूषण संस्कार। छठै दिन पुष्पमाळा संस्कार। सातवैं दिन ग्रहमध्य पूजा। आठवैं दिन उपवास अर पूजन। नौवैं दिन कुमारी पूजा। कुमारी कन्यावां नै जीमाईजै। दसवैं दिन पूजा करणियै री पूजा अर जीमण, दान-दक्षिणा। नौ रातां ताणी अेकत करै। इणी कारण अै नौ दिन नौरता बजै।

नौरता रो पूजन विधान

पैली घट थापना होवै। बेकळा री वेदी थरपीजै। वेदी में जौ-कणक रा ज्वारा बाईजै। इण माथै सोनै, चांदी, तांबै या माटी रो कळसियो धरै। कळसियै माथै देवी री फोटू लगावै। फोटू नीं होवै तो कळसियै रै लारै साथियो। असवाड़ै-पसवाड़ै त्रिसूळ। पोथी या साळगराम धरै। पैलै नौरतै में स्वस्तिवाचन अर शांति पाठ कर'र संकळप लेईजै। भळै गणपत, षोडष मात्रिका, लोकपाळ, खेतरपाळ, नवग्रह, वरुण, ईष्टदेव री ध्यावना करै। प्रधान देवळ री षोडषोपचार सूं पूजा होवै। अनुष्ठान में महाकाळी अर महासरस्वती री पूजा होवै। नौ दिन तक दुर्गा-सप्तशती रा पाठ करै। नौ रातां दिवलो चेतावै। आधीरात, भखावटै अर दिनूगै जोत करीजै। संपदा चावणिया आठवैं दिन अर आखी धरती रै सज री मनस्या राखणिया नौवैं दिन माताजी री कढ़ाई करै। कढ़ाई रै दिन कुमारी पूजन होवै। कन्यावां नै देवी मान पग धोय'र गंध पुहुप सूं पूजा करियां पछै जीमावै। चूनड़ी-गाभा भेंटै। नौरतां में कन्यावां री पूजा रा फळ बखाणीजै। अेक सूं अेश्वर्य। दो सूं भोग अर मोक्ष। तीन सूं धर्म, अर्थ अर का। च्यार सूं राज्यपद, पांच सूं विद्याड्डक्तबुद्धि। छै सूं षटकर्म सिद्धि। सात सूं राज्य। आठ सूं संपदा अर नौ सूं पिरथी री प्रभुता मिलै। दस वर्ष सूं कम री कन्यावां न्यारी-न्यारी देवी मानीजै। दो बरस री कन्या कुमारी। तीन बरस री त्रिमूर्तिनी। च्यार बरस री कल्याणी। पांच बरस री रोहिणी। छह बरस री काळी। सात बरस री चंडिका अर आठ बरस शांभवी। नौ बरस री दुर्गा अर दस बरस री कन्या सुभद्रा या स्वरूपा बाजै।

⌘⌘

आओ, म्हारै कंठां बसो भवानी

राजस्थान में सगत पूजा री खास परंपरा। अठै रै जोधावां री सगती अपरंपार। मिंदरां में गूंजै बाणी, तरवारां री टणकार आभै ताणी। जण-कण तरवारधणी। तिरसी मरुधरा री तिरस रगत सूं मेटी। रणचंडी रण में अर दुरगा दुरग में रिछपाळ करी। इणी रै पाण आखै राजस्थान में जगजामण मा सगत भवानी रा अलेखूं थान। थानां-मिंदरां में गूंजै बाणी—

आओ, म्हारै कंठां बसो भवानी,
थे धौळा रे गढ री राणी।

राजस्थान में देवी रै सगळै रूपां री ध्यावना। नौरतां में पण देवी री खास पूजा। 27 मार्च सूं 3 अप्रेल ताणी रैया नौरता। नौरतां रो बरत राखणिया आज बरत खोलसी। पूजा करणियां नै दक्षिणा दिरीजसी। इणी रै साथै ई नौरतां री पूजा पूरीजै। आगो, जाणां राजस्थान में किण-किण ठौड़, किण-किण मिंदरां में होई माताजी री पूजा।

शास्त्रां में बखाणीजी मूळ देवियां। लोकदेवियां। चौफेर चावी देवियां। चारणी-देवियां। वन-देवियां। सगत-देवियां। मावड़ियांजी। चौसठ जोगणियां। नौ दुरगा, दस महाविद्यावां। सोळा मातावां। कोई नगर-गांव अैड़ो नीं जठै देवी रो मिंदर नीं।

अठै महालक्ष्मी, महासरस्वती अर महाकाळी सरीखी मूळ देवियां सूं लेय'र सतियां तक रा मिंदर। शास्त्रां में बखाणीजी पार्वती, उमा, सरस्वती, लक्ष्मी, राजलक्ष्मी, गंगा, गायत्री, यमुना, महेश्वरी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, वाराही, नारसिंही, कौमारी, काळी, चामुंडा, ऐन्द्री, शाकंभरी, भ्रामरी, त्रिपुरा-सुंदरी, भवानी, जया, विजया, शाम्भवी, वनदुर्गा, मातंगी, कराला, विमला, कमला, नारायणी, भद्रकाळी, कात्यायनी, सावित्री, भगवती, अन्नपूर्णा, संतोषी, ईश्वरी, जयंती, धात्री, जगदंबा, महादेवी, महामाया, गौरी, रमा, शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चंद्रघंटा, महातारा, बुगलामुखी, छिन्नमस्ता, घूमावती,

भुवनेश्वरी, कमला, त्रिपुरा, भैरवी, ललिता, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री तकात री ध्यावना।

देवियां रा मिंदर ठौड़-ठौड़

आई माता (बिलाड़ा), जमवाय माता (अजमेर), ऊंटा देवी (जोधपुर), खोखरी माता (तिंवरी), उष्ट्रवाहिनी (बीकानेर), सचियाय माता (ओसियां), जीण माता, आवड़ माता (झुंझनूं), अरबुदा, अधरदेवी, अगाई, ज्वाला देवी (आबू), शिला देवी (आमेर), लक्ष्मीनारायण मंदिर (जयपुर, बीकानेर), सास-बहू (नागदा), अंबिका माता (जगतपुरा), सामीजी नसियां (अजमेर), सावित्री (पुष्कर), काळका माता (चित्तौड़), दधिमति माता (जायल), भांवल माता (भांवल-मेड़ता), सात सहेली (झालरापाटन), गंगा मंदिर (भरतपुर), शारदा देवी (पिलाणी), शाकम्भरी (शाकम्भरी), मंदोदरी माता (महेदरा-जोधपुर), त्रिपुरा सुंदरी (तलवाड़ा), भद्रकाळी (अमरपुरा थेड़ी), बिरमाणी (पल्लू), मुसाणी (मोरखाणा), जाबर (उदयपुर), केलांदेवी (करौली), संगियां-स्वांगिया (जैसलमेर), सकराय (जयपुर), शीलादेवी (झालावाड़), चाहिनी (लोद्रवा), शीतळा माता (वल्लभनगर), बीज माता (देवगढ़), नरकंकाळी (बिजोळिया), मनसा, खेरतल, राजेश्वरी (भरतपुर), सूंधा (जालौर), जोबनेर, वसुंधरा, विंध्यांवासिनी, भवाळ (जोबनेर), बकेरण (भींडर), जोगण्यां (बेगूं), काळका (भींडर) आई माता (मीठी धाम), करणी माता (देशनोक), जीण माता (सीकर), जिळाणी (बहरोड), सकराय (उदयपुवाटी), इया माता (गावड़ी), आमजी (केलवाड़ा), आशापुरा (पोकरण), लटियाळ (लुद्रवा, फळोदी, बीकानेर), भादरिया माता (भादरियाजी), चक्रेश्वरी (जोधपुर), नागणेचियां (नागाणा), कातणियां, मेहरवाणियां (जैसलमेर), तन्नौट माता (तन्नौट), सड़द्रीजी, बायांसा (सिरोही), हेमड़ेराय माता (भू-गोपा), हिंगळाज, आवड़ा, कालेडूंगर, भादरिया, पवगादरिया, नारायणी (राजगढ़), नागणेची (बीकानेर), दसविद्या मंदिर शनिशक्ति पीठ (जोधपुर), इण रै अलावा चारणी देवियां रा अलेखूं मिंदर। चारणां री आद देवी हिंगळाज देवी। हिंगळाज रो अवतार आवड़ अर आवड़ री अवतार करणी माता। चारणां रै अठै देवी रा नौ लाख साधारण अर चौरासी असाधारण अवतार होया है। हिंगळाज, बांकळ, खूबड़, आवड़, खोडियार, गुळी, अंबा, बिरवड़ी, देवल, लाछा, लाल बाई, फूल बाई, करणी, बैचरा, बीरी, मांगळ, सैणी, नागल, कामेही, सायर, नेहड़ी, माल्हण, राजल, गीगाय, मोटवी,

चांपल, अणदू, साबेई, शीला, देमा, इंदूकंवरी, सोनल आद चावी चारण देवियां मानीजै।

राजस्थान में रावयिां, रावरियां, रेवतियां सात लोकदेवियां री पूजा। रावतियां में सात ऊजळी अर सात मैली। अै सप्तमातृका सात मातावां अर सात मावड़ियां बाजै। बायांसा जोगणियां ऊपरलियां, बींझबायल्यां अर काळी डूंगरच्यां री गांव-गांव में ध्यावना। देवियां रै इण मिंदरां में नौरतां में जागण होवै। जोत करीजै। चरजा करीजै। शांति में सिंघाऊ चरजा। भक्ति-विपत्ति में धाड़ाऊ चरजा, पण सुख में चरजा नीं करीजै। माताजी जियां हाल तक तूठ्या उण सूं सवाया तूठै आपनै। जय माताजी री!

⌘⌘

नौरता : नौ देवियां रा रूप

पैलो नौरतो : शैलपुत्री पैलां सिरै

नौरता देवियां रा रूप। देवी सगती री नौ रातां अर नौ दिन। देवी अर रातां अेकूकार। इणी नौ दिनां में महालक्ष्मी परगटाई नौ देवियां। इणी नौ देवियां नै नवदुरगा बखाणीजै। नौरतां रै नौ दिनां अर नौ रातां में इणीज नवदुरगा री ध्यावना होवै। श्री लक्ष्मणदान कविया (खेंण—नागौर) रचित दुरगा सतसई में नवदुरगा री विगत इण भांत है—

सैलपुत्री पैलां सिरै, ब्रह्माचारिणी दुवाय।
तीजी चंद्रघंटां'र चव, कुषमांडा कहवाय।।
स्कंध माता पांचवीं, कात्यायनी छटीज।
कालरात्रि सातमी, महागौरी अस्टमीज।।
नवौ नांव दुरगा तणो, सिद्धदात्री संसार।
प्रतिपादित बिरमा किया, सह जग जाणणहार।।

नवदुरगा में पैली दुरगा शैलपुत्री। मां भागोरी रो पैलो सरूप। परबतराज हिमवान री लाडेसर बेटी। सैल नाम परबत रो। इणी कारण नांव थरपीज्यो— शैलपुत्री। शैलजा भी इण रो नांव। शैलपुत्री री सवारी बळद। इण रै डावै हाथ में तिरसूळ। जीवणै हाथ में मनमोहणो कमल पुहुप। सिर माथै सोनै रो मुगट अर आधो चंद्रमा। पैलड़ै जलम में राजा दक्ष री कन्या रूप में जलमी। उण जलम में नांव पण सती। उण जलम आप घोर तप करियो। भगवान शिव नै राजी कर वर रूप में हासल करयो, पण दक्ष नै बेटी री बात नीं जची। उणां शिव री सती रै वर रूप में अणदेखी करी। सती नै आ बात अणखावणी लागी। सती रा बापूसा अेकर यज्ञ करयो। सती रा वर शिव री अणदेखी करी। सती नै आ बात दाय नीं आयी। बै रिसाणी होय'र बापूसा रै यज्ञ-कुंड में बळ परी भस्म होयगी। उणां भळै हिमालय री कन्या रै रूप में दूजो जलम लियो।

भळै तप करयो अर पाछी भगवान शंकर री अधडील बणी। उणां नै मनमुजब शंकर भगवान वररूप में मिल्या।

शैलपुत्री नै मिली मनवांछित सिद्धि। इणरै पाण बै मनसापूर्ण हुयी। मनसा पूरण सारू लोग उणां नै हाल ताणी धोकै-ध्यावै। घोर तपियां अनै जपियां नै दुरगा रो शैलपुत्री रूप घणो भावै। जोगी शैलपुत्री नै ध्यावै। आंनै पड़तख राख जोग करै। जोग करतां मन नै मूळ आधार में थिर करै। इणरी ध्यावना सूं जोग्यां रा जोग जमै। तपियां रा तप सधै। जपियां रा जप फळै। जोग रा संजोग बैठै। जोग-साधना री मूळ थरपीजै। नौरता पूजन रै पैलै दिन शैलपुत्री री उपासना सूं मन मुजब इंछा पूरण होवै। जग जामण मां दुरगा री पूजा में हर दिन मां रा सिणगार करीजै। हर दिन पण निरवाळा सिणगार। पैलै नौरतै में माता रा केश संस्कार करीजै। इण दिन माता जी री देवळ नै द्रव्य आंवळा, सुगंधित तेल भेंटीजै। केश संवारिजै। केश संवारण री जिन्सां भेंटीजै। आखै दिन अेकत राखीजै अर दुरगा सप्तशती रा पाठ करीजै।

दूजो नौरतो : धीरज धिराणी ब्रह्माचारिणी

नवदुरगा रा नव रूप निराळा। हर रूप मनमोवणो-मनभावणो। रूपां री पण छिब निरवाळी। अैड़ी ही निरवाळी छिब मात ब्रह्माचारिणी री। जग जामण महालक्ष्मी ब्रह्माचारिणी नै दूजी देवी रूप प्रगटाई। ब्रह्मा सबद रो मतलब तप। ब्रह्माचारिणी घोर तप अर धीरज री धिराणी। आं में तप री सगति अपरंपार। आं रै तप नै नीं कोई लख सकै, नीं लग सकै। चारिणी सबद रो मतलब चालण वाळी। यानी तप रै गेलां चालण वाळी। घोर तप रै गेलां चालण रै कारण नांव थरपीज्यो— ब्रह्माचारिणी। इण नांव सूं जगचावी। बडा-बडा रिसी-मुनि, जोगी, सिद्ध, ग्यानी-ध्यानी, तपिया-जपिया अर हठियां भी आं रो तप देख'र चकरी चढ्या। आंख्यां तिरवाळा खायगी।

ब्रह्माचारिणी रो रूप भव्य। लिलाड़ माथै तप रो ओज। आं रो सरूप जोता-जोत। ज्योतिर्मय। डावै हाथ में कमंडळ। जीवणै हाथ में जपमाळा। सिर माथै सोनै रै मुगट री सोभा निरवाळी। नौरतां रै दूजै दिन इणी मां दुरगा री पूजा होवै। उपासना करीजै। मां दुरगा रो सुरंगो रूप भगतां नै भावै। आं री ध्यावना सूं भगतां, सिद्धां, जोग्यां, ध्यान्यां, तपियां अर जपियां रा मनोरथ पूरीजै। भगतां-सिद्धां नै अखूट-अकूत फळै ब्रह्माचारिणी रा दरसण। धीरज-धिरणी ब्रह्माचारिणी री ध्यावना मिनखां में धीरज बपरावै। मिनखां में त्याग, वैराग्य अर धीरज रो बधैपो करै। इण री किरपा चौगड़दै।

चौगड़दै सिद्धि चारूंकूंट विजय दिरावण वाळी। धीरज धिरणी ब्रह्माचारिणी मिनखां में सदाचार अर संयम बगसावै। जोग्यां नै जोग सारू तेड़ै। जोग-साधक दूजै दिन आपरै मन नै स्वाधिष्ठान चक्र में कथर करै। इण चकर में थिर मन माथै ब्रह्माचारिणी री किरपा बरसै। अैड़ो साधक देवी री किरपा अर भगती नै सूंपै।

नौरतां रै दूजै दिन मां दुरगा री खास पूजा होवै। इण दिन माता रा केश गूंथीजै। बाळ बांधीजै। चोटी में रेसमी सूत का फीतो बांधीजै। माता रै बाळां री सावळ संभाळ करीजै। लगोलग श्री दुरगा सप्तशती अर मार्कंडेय पुराण रो पाठ करीजै। अेकत पण चालतो रैवै। आज रो बरत नौरतै रो दूजो बरत बाजै।

तीजो नौरतो : मस्तक घंटाधारिणी चंद्रघंटा

तीजै नौरतै री महिमा न्यारी। ध्यावै जगती सारी। तीजो नौरतो जगजामण मात रै तीजै सरूप चंद्रघंटा रै नांव। मात चंद्रघंटा रै मस्तक माथै घंटैमान चंद्रमा बिराजै। चंद्रमा मस्तक माथै सोभा पावै। इणी कारण माताजी रो तीजो सरूप चंद्रघंटा। मात चंद्रघंटा दस हाथ धारै। जीवणै पसवाड़ै रा पांच हाथ अभय दिरावण री छिब में। सरीर सोनै वरणो। एक हाथ में कमल। दूजै में धनुखा, तीजै में बाण। चौथै में माळा। पांचवों हाथ आसीस में उठ्यो थको। माताजी रै डावै हाथां में भी अस्तर। अेक हाथ में कमंडळ, दूजै में खड़ग। तीजै में गदा। चौथै में तिरसूळ। अर अेक हाथ वायुमुद्रा में। चंद्रघंटा रै शेर री सवारी। कंठां पुहुपहार। कानां में सोनै रा गैणा सोवै। सिर सोनै रो मुगट। चंद्रघंटा दुष्टां रो खैनास करण नै उंतावळी। दुष्टदमण सारू हरमेस तयार। मानता कै चंद्रघंटा नै ध्यावणियां शेर री भांत लूंठा पराकरमी अर भव में डर-मुगत भंवै। मात चंद्रघंटा आपरै भगतां नै भुगती अर मुगती दोन्यूं अेकै साथै देवै। मन-वचन-करम अर निरमळ हो, विधि-विधान सूं चंद्रघंटा रै सरणै आय जको ध्यावै उणनै मन-माफक वरदान मिलै। अैड़ा भगत सांसारिक कष्टां सूं मुगत होय परमपद ढूकै। तीजै नौरतै री खास बात। इण नौरतै में माताजी नै खुद रो फूठरापो गोखाईजै। इण दिन उणां नै आरसी में मूंडो दिखाईजै। इणीज दिन माताजी नै सिंदूर भेंटीजै।

गणगोर पूजा :

नौरतै रै तीजै दिन यानी चैत रै चानण-पाख री तीज नै गौरी-शंकर री पूजा होवै। गौरी मात जगदंबा यानी पार्वती। पार्वती रा धणी शंकर। इण दिन आं दोन्यां री पूजा ईसर-गणगौर रै रूप में होवै।

चौथो नौरतो : मधरी-मधरी मुळक कूष्मांडा

चौथे नौरतै री धिराणी कूष्मांडा माता। कूष्मांडा कैवै कूम्हड़ै अर पेठै नै। ब्रह्मांड पेठै-कुम्हड़ैमान। इणी कूष्मांडामान ब्रह्मांड री सिरजणहार माता कूष्मांडा। दुरगाजी रै इण चौथै सरूप रो नांव कूष्मांडा माता। कूष्मांडा री मधरी-मधरी मुळक। इणी मधरी मुळक सूं अंड अर ब्रह्मांड नै सिरज्या। अंड अर ब्रह्मांड री सिरजणां रै पेटै दुरगा रै इण सरूप नै कैवै कूष्मांडा माता। ब्रह्मांड री सिरजणहार होवण रै पाण ई आप स्रिस्टी री आद-सगत। आपरै सरीर रो तप अर ओज सुरजीमान पळपळावै। कूष्मांडा माता रै आठ हाथ। इणी पाण आप अष्टभुजा देवी भी बखाणीजै। आपरै जीवणै पसवाड़ै च्यार हाथां में कमंडळ, धनुख, बाण अर कमल बिराजै। डावै हाथां में इमरत कळस, जपमाळा, गदा अर चक्कर सांभै। सीस सोनै रो मुगट। कानां सोनै रा गैणा। शेर री सवारी। कूष्मांडा माता री ध्यावना सूं भगतां रा सगळा संताप मिटै। रोग-सोग समूळ हटै। उमर, जस, बळ अर निरोगता बधै।

चौथै नौरतै में साधक रो मन अनाहज चक्र में बास करै। इण सारू माणस नै निरमळ मन सूं कूष्मांडा माता री ध्यावना करणी चाइजै। माताजी रा जप-तप अर ध्यावना भगत नै भवसागर पार उतारै। माणस री व्याध्यां रो मूळनास होवै। दुख भाजै। सुख रा डेरा जमै। इण लोक अर आगोतर री जूण सुधारण सारू कूष्मांडा माता री ध्यावना करीजै।

पांचवों नौरतो : कार्तिकेय जननी स्कंद माता

पांचवैं नौरतै री धिराणी स्कंद माता। स्कंद माता दुरगाजी रो पांचवों सरूप। स्कंद रो अेक नांव कार्तिकेय भी। कार्तिकेय पण माताजी रो लाडेसर बेटो। कार्तिकेय री जामण होवण रै कारण ई इण सरूप रो नांव स्कंद माता। देवतावां रै बैरी तारकासुर नै स्कंद माता जमलोक पुगायो। माताजी रै च्यार हाथ। जीवणै पसवाड़ै रै अेक हाथ सूं आपरै लाडेसर नै गोद्यां बैठाय'र झाल्योड़ो, दूजै हाथ में कमल पुहुप। डावै पसवाड़ै रै अेक हाथ में आसीस छिब। दूजै हाथ में भळै कमल पुहुप। सिर माथै सोनै रो मुगट बिराजै। कानां में सोनै रा गैणा। सिंघ री सवारी। स्कंद माता संसार्‌यां नै मोक्ष दिरावै। ध्यावणियां भगतां री मनस्यावां पूरै। पांचवैं नौरतै में ध्यावणिया जोग्यां रो मन विशुद्ध चक्र में थिर रैवै। इण कारण ध्यावणियां रै मन बारै री अर भीतरली चित्त वृत्तियां रो लोप हो जावै। पांचवैं नौरतै नै साधक माताजी रै अंगराग अर चनण रा लेप करै। भांत-भांत रा गैणा-गांठा पैरावै।

लिछमी पांच्यूं : आज लिछमी पांच्यूं भी। लिछमी भी माताजी रो अेक सरूप। लिछमीजी कमल आसन माथै बिराजै। कमल मतलब पदम। इण सारू आपरो अेक नांव पदमासना भी। बिणज-बौपार करणियां नै माताजी रो ओ रूप डाढो भावै। अै लोग माताजी रै लिछमी रूप नै ध्यावै। बिणज अर धन रै बधेपै री कामना करै। माताजी बां रा मनोरथ पूरै।

खाता उल्टा-पल्टी रो दिन : बिणज-बौपार में आज रो दिन रोकड़ खाता पल्टी रो। वित्तीय लेख। बरस रो पैलो दिन। इण दिन बौपारी हिसाब फळावै। लेण-देण चुकावै। तळपट मिलावै। आपरै बिणज री बहियां बदळै। रोकड़, खाता अर चौपड़ी पल्टै। लेण-देण री खतोन्यां खतावै। नूंवी बहियां री पूजा करै। नूंवी रोकड़, खाता अर चौपड़ी रै पैलै पानै माथै 'गणेशाय नमः' लिखै। सेळी सूं साथियां (साखियो) मांडै। उण माथै पान-सुपारी, रोळी-मोळी अर फळ-प्रसाद चढावै। दूजै पानै माथै लिखै— 'लिछमीजी महाराज सदा सहाय छै। लाभ मोकळो देसी।' इणी माथै लिछमी सरूप 'श्री' इण भांत मांडै—

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
।। शुभ।। श्री श्री श्री श्री ।लाभ।।
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

इणरै असवाड़ै-पसवाड़ै 'शुभ-लाभ' अर 'रिद्धि-सिद्धि' लिखै। रोळी-कूंकूं चिरवै। चावळ भेंटै। नूंवी लेखणी-कलम-कोरणी बपरावै। इण माथै भी मोळी बांधै। अब पण लोगड़ा कम्प्यूटर-लेपटाप बपरावै तो इण जूनी परंपरा नै कठै ठौड़।

छठो नौरतो : लाडकंवरी कात्यायनी

दुरगा रै कात्यायनी सरूप रै निमता माता कात्यायनी महारिखी कातयायन रै घरां लाडकंवरी रूप जाई। इणी कारण नांव थरपीज्यो— कात्यायनी। महारिखी कात्यायन दुरगाजी री ध्यावना करी। जप-तप करयो। इणी रै पेटै कात्यायनी आसोज रै अंधार-

पख री चवदस नै उणां रै घरां जलम लियो। जलम रै बाद आसोज रै चानण-पख री सात्यूं, आठ्यूं अर नौम्यूं नै महारिखी री पूजा सीकारी। दसमी नै भैंसासुर नै सरुगां रै गेलां घाल्यो। इण रो बखाण लक्ष्मणदान कविया आपरी 'दुरगा सतसई' में इण भांत करयो—

उछळी देवी कैय आ, चढी दैत रै माथ।
दबा परो पग भार सूं, सूर वार कंठाथ।।
पगां भार सूं दाबियो, मुखां निकळ नव भाव।
ठमग्यो आधो निकळ नै, देवी तणै प्रभाव।।
अरध निकळियो जुध करै, देवी सूं म्हादैत।
बडखम सूं सिर काटियो, देव भलाई हेत।।
सेन मझां मचियो जबर, असुरां हाहाकार।
सेना सगळी भाजगी, देवां हरख अपार।।

माता कात्यायनी रो सरूप सोवणो अर मनमोवणो। आं रै च्यार हाथ। जीवणै पसवाड़ै रै अेक हाथ में खड़ग। दूजै में पोयण (कमल) रो पुहुप। सिंघ आपरी सवारी। सिर माथै पळपळाट करतो सोनै रो मुगट सोभा बधावै। कात्यायनी माता ब्रजमंडळ री अधिष्ठात्री ई बाजै। आं री पूजा छठै दिन करीजै। इण दिन माताजी नै पुहुप अर पुहुप-माळा भेंटीजै। ध्यावणियां नै माताजी इंछा-फळ देवै। भगतां रा दुख-दाळद मेटै। साधक नै अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष सगळा भेळै ई सौरप सूं मिलै। आज रै दिन ध्यावना करणियै रो मन आज्ञाचक्र में थिर रैवै। जोग-साधना में आज्ञाचक्र री ठावी ठौड़, अणूती महिमा। इण चक्र में थिर मन रो भगत माताजी रै चरणां में सो-कीं निछरावळ कर देवै। भगत नै पड़तख माताजी रा दरसण होवै। आंनै ध्यावणिया इण लोक में रैवता थकां आलौकिक तेज राखै।

जमनाजी रो जलम दिन : आज जमनाजी रो जलमदिन भी है। यमुना जंयती। सूरज भगवान रै घरां आज रै ई दिन जमनाजी जलम्या। आज नौरतै रै साथै-साथै जमनाजी री भी पूजा होवै। लुगायां जमनाजी री कथा सुणै। सूरज महातपी। प्रजापति विश्वकर्मा सुरजी नै आपरी बेटी संज्ञा रै वर लायक मान्यो। संज्ञा रो ब्यांव सुरजी साथै कर दियो। संज्ञा रै तीन औलाद होयी। दो छोरा अर अेक छोरी। छोरां रा नांव मनु अर यम। छोरी रो नांव यमुना। आपणी भाषा में कैवां जमना। जमनाजी भी तपी-जपी। भगतां रा दुख-दाळ मेटै। पाप मुगत करै। जको जमनाजी में न्हावै-ध्यावै उणनै जमनाजी रा भाई जमराज नीं सतावै।

सातवों नौरतो : सदा सुभ करै काळी माता

माता दुरगाजी रो काळरात सरूप। माताजी रै इण रूप नै काळी माता अर काळी माई बखाणीजै। कालरात्रि पण आपरो नांव। इण माताजी रो डील अंधारैमान काळो। सिर रा बाळ खिंडायोड़ा। गळै में बीजळी दांई चमकती माळा। काळी माता रै तीन आंख्यां। नासां री सुंसाड़ सागै अगन री लपटां निसरै। आं री सवारी गधेड़ो। काळी माता रै च्यार हाथ। जीवणै पासै रो अेक हाथ डरमुगत करण री अर दूजो हाथ वरदान देवण री छिब में। डावै पासै रै अेक हाथ में लोह रो कांटो अर दूजै हाथ में तरवार। काळी माता रो सरूप देखण में जबर डरावणो। विकराळ। अै माताजी पण हरमेस भला फळ देवण वाळी। हमेस सुभ-सुभ ई करै। इण कारण इणां नै शुभंकरी भी कैईजै।

काळी माता नै घोर जपिया जपै। तपिया तपै। जादूगर इण माताजी रा लूंठा भगत। इंदरजाळ अर काळै जादू सीखण वाळा काळी माता नै ध्यावै। लोगड़ा आपरै टाबरां नै ऊपरली बीमारयां सूं बचावण रै मिस धोकै। भूत-प्रेत, टूणा-टसमण अर लाग-बांध नै टाळण सारू काळी माता नै ध्यावै। काळी माता री पूजा सात्यूं नै करीजै। इण दिन माताजी री पूजा घर रै बिचाळै करीजै। जोग्यां अर साधकां रो मन इण दिन सहस्र चक्कर में थिर रैवै। इण चक्र में थिर मन रै लोगां सारू सिध्यां रो दरूजो खुल जावै। इण दिन साधक, तपिया, जपिया अर जोग्यां रा मन काळी माता रै मन में बिराजै। माता काळका भगतां रा दुख मेटै। सुख बधावै। दुष्टां रो खैनास करै। गिरै-गोचर री भिच्चियां दूर करै। माताजी रा साधक डर मुगत होय भंवै।

बंगाल में काळी माता री पूजा रा न्यारा ठरका। बंगाल रै घर-घर में काळी पूजा होवै। बठै री परापर में काळी पूजा री ठावी ठौड़। मिंदरां में आरत्यां गूंजै। माताजी रै सरूप नै माटी सूं बणावै। भांत-भांत सूं सजावै। लूंठी-लूंठी देवळ्यां री सोभा-जातरा काढै। बंगालवासी जे बंगाल सूं बारै होवै तो इण दिनां पाछा बावड़ै। पाछो बावड़णो जे दौरो होवै तो जठै रैवै बठैई काळी पूजा करै। राजस्थान में रैवणिया बंगाली चावना अर ध्यावना सूं काळी पूजा करै।

आठवों नौरतो : दुरगा अष्टमी री धिराणी महागौरी

माता दुरगाजी रो आठवों रूप महागौरी। आपरो रूप जबर गोरो। आपरो पैराण भी गोरो। धोळा गाभा। आपरी उमर आठ बरस री मानीजै। दुरगा अष्टमी री धिराणी महागौरी। आपरै च्यार हाथ। जीवणै पासै रै अेक हाथ में तिरसूळ। दूजो हाथ वरदान

देवण री छिब में। डावै पासै रै अेक हाथ में डमरू। दूजो हाथ डर भगावण री छिब में। महागौरी री सवारी बळद। आपरी पूजा सूं तुरत-फुरत अर ठावा फळ मिलै। फळ पण अचूक अर बिना मांग्यां मिलै। इणां री ध्याावनां सूं पापां रो हरभांत सूं कल्याण होवै। भगतां रा पुरबला पाप मिटै। आगोतर सुधरै। परलै लोक री सिद्धियां मिलै। जका भगत दूजां नै टाळ फगत महागौरी नै ध्यावै, वांरा मनोरथ फळै। इंछाफळ मिलै।

महागौरी पूजा आठ्यूं नै होवै। इण दिन ध्यावणिया वरत करै। आठ्यूं नै कढ़ाई भी बणै। कढ़ाई में रंधै सीरो। सीरै रो माताजी रै भोग लागै। चूनड़ी-गाभा अर दक्षिणा भेंटीजै।

नौवों नौरतो : अष्टसिद्धि अर नवनिधि री दात्री सिद्धिदात्री

माताजी रा नौवों सरूप सिद्धिदात्री। संसार में नव निधियां अर अष्ट सिद्धियां बाजै। आनै देवण वाळी माताजी सिद्धिदात्री। निधियां अर सिद्धियां री भंडार। सामरथवान। आद देव स्यो भी सिद्धियां बपरावण सारू आंरी सरण गया। जगजामण मात भवानी सिद्धिदात्री रै च्यार हाथ। जीवणै हाथां में गदा अर चक्र। डावै हाथां में पदम अर शंख। सिर माथै सोनै रो मुगट। गळै में धोळै फूलां री माळा धारै। कमल पुहुप आसन। इणी कारण अेक नांव कमलासना। मात भगवती सिद्धिदात्री री ध्यावना सिद्ध, गंधर्व, यक्ष, देवता, असुर अर माणस सगळा करै। नौवैं नौरतै आंरी खास पूजा। खास आराधना। नौवैं नौरतै री पूजा होवै। नूंत जीमईजै। दान-दक्षिणा देईजै। इण कारण ओ दिन कुमारी पूजा रो दिन बाजै। जपियां, तपियां, हठियां, जोधावां, क्षत्रियां अर जोग्यां री साधना फळै। मनवांछित फळ मिलै। अलभ लाभै। भगतां में सो-कीं करण री सहज सगती संचरै।

रामनवमी सांवटै परूबला पाप : आज ई श्री रामनवमी भी। आज रै दिन पुनरवसु नखत में भगवान विष्णु अयोध्या में राजा दशरथ अर माता कौशल्या रै घरां श्रीराम रूप औतार लियो। श्रीराम औतार रो दिन होवण रै पाण ई आज रो दिन रामनवमी। आज रै दिन विष्णु भगवान रा भगत विष्णुजी नै धोकै। बरत करै। खास पूजा करै। इण दिन झांझरकै ई संपाड़ा कर पूजा सारू ढूकै। घर रै उतराधै पसवाड़ै पूजा मंडप बणावै। ऊगतै पासै शंख, चक्र अर हनुमानजी री थापना करै। दिखणादै बाण, सारंग, धनख अर गरुड़जी। पच्छम में गदा, खड़ग अर अगंदजी। उतराधै पदम, साथियो अर नीलजी थरपै। बिचाळै च्यार हाथ री बणावै वेदका। वेदका माथै सोवणा-मोवणा

गोखड़ा तोरण सजावै। इण मोवणै मंडप में श्रीराम री थापना करीजै। कपूर अर घी रो दीयो चेतन करै। दीयै में अेक, पांच या इग्यारा बाट धरीजै। थाळी में धूप, गर, चनण, कमल, पुहुप, रोळी-मोळी, सुपारी, चावळ, केसर अर अंतर धर'र आरती करीजै। आखै दिन श्रीरामचरितमानस रा अखंड पाठ चालै। आठ्यूं-नवमी भेळी होयां विष्णु-भगत वरत दस्यूं नै खेालै। मानता है कै रामनवमी रो वरत-पूजा करणिया पुरबला पापां सूं मुगत होवै। सगळै जलमां रा पाप सांवटीजै। भगतां नै विष्णुलोक में परमपद मिलै।

आज छेकड़लो नौरतो। इणी दिन नौरतां री महापूजा। काल दस्यूं। दस्यूं नै पूजा-पाठ करणियां नै दान-दक्षिणा देय बिदा करीजै। राजस्थान रै सगळै देवी-मिंदरां में नौ दिनां ताणी देवी री पूजा होवै।

⌘⌘

शिव-शिव रटै, संकट कटै

तीन महादेव— ब्रह्मा-विष्णु-महेश। अै तीन देव अैड़ा, जकां रै मा-बाप रा नांव किणी ग्रंथ मांय नीं लाधै। आं में ओ भेद भी नीं कै तीनां मांय सूं कुण पैली प्रगट हुयो। रिखी-मुनि सोध-सोध थक्या। छेकड़ आदि-अनादि-अनंत कैय'र पिंड छुडायो। इण में सूं भगवान महेश नै देवां रो देव महादेव बतायो। इणी महादेव रै ब्रह्मा-विष्णु रै बीच ज्योतिर्लिंग रूप में प्रगटण री रात नै कैवै— स्योरात। आ फागण रै अंधार-पख री चवदस नै आवै। मानता है कै जको इण दिन वरत राखै, अभिषेक करै, गाभा, धूप अर पुहुपां सूं अरचना करै, जागण करै, ऊँ नमः शिवाय' पांचाखर रो जाप करै, रुद्राभिषेक, रुद्राष्टाध्यायी अर रुद्री पाठ करै, बो शिव नै पड़तख पावै। उणमें सूं विकारां रो खैनास व्है जावै। उणनै परम सुख, शांति अर अखूट सुख मिलै।

स्योरात नै शिवपुराण में महाशिवरात्रि, इणरै वरत नै वरतराज कैयीज्यो है। स्योरात जम रो राज मिटावण वाळी। शिवलोक ढुकावण वाळी। मोक्ष देवण वाळी। सातूं सुख बपरावण वाळी। पाप अर भै नास करण वाळी मानीजै।

राजस्थान सूरवीरां री धरा। शिव अर सगती री मोकळी ध्यावना। अठै गढ़ां अर किलां में माताजी, भैरूंजी अर शिवजी रा मोकळा मिंदर। धरणीधर महादेव, शिवबाड़ी, गोपेश्वर महादेव, जैनेश्वर महादेव (बीकानेर), नीलकंठ महादेव (अलवर), हरणीहर महादेव (भीलवाड़ा), मंडलनाथ महादेव, सिद्धनाथ महादेव, भूतनाथ महादेव, जबरनाथ महादेव (जोधपुर), गुप्तेश्वर महादेव, परसराम महादेव (पाली), एकलिंगनाथजी (उदयपुर), ताड़केश्वर महादेव, रोजगारेश्वर महादेव, गळताजी (जयपुर), शिवमंदिर (बाड़ोली), पाताळेश्वर महादेव, पशुपतिनाथ महादेव (नागौर) रा मिंदर नामी। महादेवजी रा इण मिंदरां में महाशिवरात्रि रा मेळा भरीजै।

बांचो अेक लोककथा—

मैणत-सार

अेकर महादेवजी अर परवतीजी गिगन में उडता जावै हा। कांई देख्यो कै अेक जाट सूखा में ई खेत खड़ै। परसेवा में घाण हुयोड़ो। लत्थौबत्थ। भोळै बाबै मन में

इचरज करयो कै पाणी बरसियां नै तो बरस हुयो, पण इण मूरख रो ओ कांई चाळो! विमाण सूं नीचै उतरया। चौधरी नै पूछ्यो, ''बावळा, बिरथा क्यूं आफळै? सूखी धरती में क्यूं पसीनो गाळै? पाणी रा तो सपना ई को आवै नीं।''

चौधरी बोल्यो, ''साची फरमावो। पण खड़ण री आदत नीं पांतर जावूं, इण खातर म्हैं तो आयै साल सूड़ करूं, खेत जोतूं। जोतण री जुगत पांतरग्यो तो म्हैं पाणी पड़ियां ई नीं जैड़ो।''

बात महादेवजी रै हीयै ढूकी। मन में विचार करयो— म्हनै ई संख बजायां नै बरस बीत्या। संख बजाणो भूल तो नीं गियो। खेत में ऊभा ई जोर सूं संख पूरियो। चौफेर घटा उमड़ी। आभै गड़गड़ाट माची। अणमाप पाणी पड़्यो। जठै निजर ढूकै, उठी जळबंब ई जळबंब!

⌘⌘

स्यावड़ माता सहाय करी

धीरज-धरम अर आस्था राजस्थानियां री पिछाण। खेती पण अठै री आन-बान अर स्यान। आखै राजस्थान री जीयाजूण खेती सूं पळै। कैबा चालै— खेती खसमां सेती। पण राजस्थान रो किरसो खुद नै खेती रो खसम नीं मानै। उणरी आस्था है कै 'देव तूठै तो खेती ठूठै'। खेत अर खेत री कांकड़ में देई-देवतावां रा थान थरपै। आपरै बडेरां रा थान। बोरड़ी, खेजड़ी या जाळ तळै भोमियां, भैरूंवां अर खेतरपाळां रा थान। मन में पण स्यावड़ माता। केई लोग पण स्यावड़ी माता भी कैवै। खेती सरू करती बगत सूं लेय'र खळै तक स्यावड़ माता धोकै—

स्यावड़ माता सहाय करी
अन्न-धन्न सूं भंडार भरी।

केई ठौड़ बोलीजै—

स्यावड़ माता सत करियै,
बीज म्होड़ो भळ करियै।

किरसो मानै कै फगत स्यावड़ धोक्यां धान नीं वापरै। हाड-तोड़ मेहणत करणी पड़ै। 'जको खट्टै, वो मोठ पट्टै'। आ भी मानता है कै हाड-तोड़ मेहणत करणियै किरसै नै स्यावड़ माता तूठै। ईं सारू राजस्थानी किरसो हाड-तोड़ मेहणत करै। अर स्यावड़ माता नै धोकै। कागडोड या डोडकाग अनै सोनचिड़ी रै दरसण नै स्यावड़ माता रा पड़तख दरसण मानीजै। आं रै दरसण नै सुभ मानै। दरसण वेळा जकी चीज हाथ आवै, बा भेंट करै। और कीं नीं तो पैरियोड़ा गाभा मांय सूं सूत री तांत काढ'र बीं दिस में अरपित करै, जिण दिस डोडकाग या सोनचिड़ी बैठी होवै। अै पंखेरू हरी डाळी माथै बैठ्या डाढा सुभ मानीजै। दरसण सूं कोड चढै अर मेहणत में दूभरिया लागै। कोडकाग सूं सीख लेवै कै खेती में डोड-चेष्टा करयां ई फळ मिलसी।

खेती सरू करतां किरसो स्यावड़ धोकै। खेळो काढतां कोड करै। खळै री वेळा डाभ री स्यावड़ बणावै। गाभा नीं पैरावै। पण डाभ सूं बणायोड़ी उघाड़ी स्यावड़ माता रै डील माथै लोह री बसत बांधै। इणनै धान री ढिगली में राखै। धान री ढिगली गाभै सूं

ढकै। ढिगली रो मूंडो दिखणादै राखीजै। अन्न काढणियो उतराधै कानी मूंडो राखै। धान बोरां में भरै। जठै तक धान नीं भरीजै, बठै तक सगळा मून रैवै। अेक जणो इकलंग ढिगली कानी देखतो रैवै। खळो सलट्यां पछै स्यावड़ माता रै नांव माथै गरीब-गुरबां अर सवासण्यां नै अन्नदान करीजै।

स्यावड़ माता ही कुण? मार्कंडेय पुराण रै त्हैत रचीज्योड़ी दुर्गा सप्तशती में शाकंभरी देवी रो बखाण आवै। विद्वान बतावै कै दुर्गा रूप माता शाकंभरी रो ई राजस्थानी रूप स्यावड़ी या स्यावड़ माता है। किरसाणां री लुगायां स्यावड़ माता रा वरत करै। वरत आळै दिन भेळी हुय'र कथा सुणै— अेक किरसै रै गणेशजी रो इष्ट हो। उण रो बिस्वास कै खेती रा सगळा काम गणेश भगवान री किरपा सूं हुवै। अेक दिन गणेशजी किरसै नै समझावै, तूं स्यावड़ माता नै धोक। खेती में बधेपो हुसी। पण बो नीं मान्यो। गणेशजी नै धोकतो रैयो। अेक दिन गणेशजी स्यावड़ माता नै साथै लेय'र किरसै रै खेत ढूक्या। स्यावड़ माता रा गाभा अेकदम मैला हा। गणेशजी बोल्या— आपरा गाभा उतार'र म्हनै देवो। म्हैं सारलै तळाव में धोय ल्याऊं। स्यावड़ माता खळै में बड़'र गाभा उतारया। गणेशजी नै झलाया। गणेशजी गाभा लेय'र इस्या गया कै आज आवै। बो दिन अर आज रो दिन। स्यावड़ माता किरसाण रै खळै री ढेरी में वास करे। किरसाणां रै अन्न-धन बपरावै।

इण कथा री आण में आज भी डाभ री स्यावड़ माता बणाय'र खळै री ढेरी में राखीजै। पग-पग माथै धोकीजै। खेत में जद बाजरी रा च्यार सिट्टा भेळा दिखै तो स्यावड़ माता रो पधारणो मानीजै। हळोतियै री बगत स्यावड़ माता अर गणेशजी धोकीजै। हळ रो पैलो ऊमरो काढती वेळा आंनै गुड़, लापसी अर सीरो चढाईजै। स्यावड़ माता सूं अरदास करीजै— हे स्यावड़ माता, सहाय करी, सगळां रै भाग रो अन्न देई। गायां रै भाग रो, चिड़ी-कमेड़ी रै भाग रो। हाळी-बाळदी रै भाग रो, बैन-सवासणी रै भाग रो। राजा-प्रजा रै भाग रो।

खळो काढती वेळा कोई बेतियाण नीं आवै, इण सारू अेक कैवै, ''हरे स्यावड़ माता!'' दूजो कैवै, ''स्यावड़ माता ढिग करै।'' खळै रै अेक पासै स्यावड़ थरपै। गोबर रो थान बणावै। च्यार सिट्टां नै उण माथै स्यावड़ माता रै रूप थरपै। गुळ-घूघरी चढावै। धान री ढिगली गाभै सूं ढक'र राखीजै। ढिगली रै च्यारूंमेर राख सूं लिछमीजी रै नांव सूं कोर काढीजै। किरसो आज भी समूळ चावना-भावना सूं स्यावड़ धोकै। खेती रा नूंवा लटका-झटका बपरावता मोट्यारां-किरसाणां में पण आ भावना मौळी पड़ रैयी है।

⌘⌘

म्हैं रमण जास्यूं लूरड़ी

फागण बाजै मदन-मास। कामदेव रो धरती पर वास। बसंत पंचमी सूं सरूआत। भळै कामदेव अर रति रा करतब। लोग-लुगायां रै मन पर धणियाप। सुरसत तजै रसना। आय बिराजै कामदेव अर रति। लोग-लुगायां री बूरीज्योड़ी कामचेतना कोठै सूं होठै आवै। मोट्यार इण भड़ास नै डफ री ताल अर धमाळ में काढै। छोरै नै छोरी यानी मै'री बणावै। मै'री भेळा नाचै। फीटा बोलै। फीटा गावै। भाठां सूं खेलै। गई रात तांई माल्ला ऊंचावै। छैल कबड्डी खेलै। 'हाड़ मिरकली हड़ियो चोर, हड़िया री मां नै लेयग्या चोर' रमै। गधा-गधेड़ी री सवारी करै। भोजायां साथै रिगळ करै। भांत-भांत सूं मन री हबड़ास काढै। लुगायां पण लारै क्यूं रैवै! देवर-भोजायां में कोरड़ा, लट्ठ, डोलची सूं फागण रमीजै।

मोट्यार आपरी दब्योड़ी भावना धमाळां में काढै। धमाळ अर चंग री थाप माथै नाचता काढै। इणी भांत लुगायां लूर गाय'र मन री हबड़ास काढै। लूर राजस्थानी लोकगीत-निरत। फगत लुगायां रो। होळी माथै ई गाईजै। लूर मतलब मन री लहर। लूर गावै छोरयां-छापरयां, जवान-बूढी डोकरया अर बीनण्यां लूर सारू गांव सूं कीं अळगी जावै। गौरवै भेळी हुवै। गोळ घेरियो बणावै। नाचै-गावै— 'खेत तो खड़ियोड़ो पड़ियो, धरती धान मांगै रे!' लुगायां चंग, खड़ताळ, खंजरी, थाळी-बेलण अर ताळी-पटको करै। अेक जणी मिनख बणै। उणसूं सगळी लुगायां किलोळ्यां करै— 'धोती में लांग है तो घाघरै में नाड़ो रे, खदबद बोलै राबड़ी गायां में पाड़ो रे, जमानो बोदो रे, हां हां रे जमानो बोदो रे, अखन कंवारी ले भागै जवान जोधो रे! जमानो बोदो रे!' कंवारी पण परणावण सावै छोरयां गावै—

अे मां काकीजी नै कैयी कै मनै चुड़लो मंगवादयै अे,
म्हैं रमण जास्यूं लूरड़ी
अे मां भावज नै कैयी कै मनै रखड़ी मंगवादयै अै,
म्हैं रमण जास्यूं लूरड़ी

लूर खेलण सारू लुगायां दो दळ बणावै। अेक दळ गावतो-नाचतो दूजै दळ री लुगायां साम्हीं जावै। सांमली लुगायां गावती-नाचती उण रो पडूत्तर देवै। पैलड़्यां नै पाछी आपरै पाळै ढुकावै। उण घड़ी रै गीतां मांय बांकी-बावळी बातां। फीटा इसारा होवै— 'काजळियो काढूं तो म्हारै नैणां पाणी आवै रे, ओढणियो ओढूं तो कोई लारै पड़ जावै रे, बाल रांडापो, हां रे बालम रांडापो, रामजी हराम होग्यो रे, बालम रांडापो।'

लूर रै खेल में सवाल-जबाब होवै। अेक दळ बोलै— ''बाई अे आंटी-डोरा कांगसी, सीस गुंथाबा जाय।'' दूजो दळ उथळो देवै— ''साजन फेरी दे गया सज कर जोगी को भेष।''

लूर रमती लुगायां नै गांव रा मोट्यार ओलै-छानै देखै। सांवळा होठां, मूंछ पाटता मोट्यार सगळां सूं आगै। पण जे किणी लुगाई री निजर उण माथै पड़ जावै तो मत पूछो बा गत बणै उणरी कै केई साल बो तो लूर रो नांव ई को लेवै नीं।

लूर नै लूअर, लूवर, लूरड़ी, लोहर, लूमर अर लूम्बू भी कैवै। लूर लगोलग दोय हजार बरसां सूं धुर मध्य एशिया में गाईजै-नाचीजै। भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कजाकिस्तान अर उज्बेकिस्तान में लूर री गूंज। मध्य एशिया अर हिंदुकुश परबत रै ताळ सूं ओमान नदी नै लांघतां लूर ढूकी मेसोपाटामिया रै सुमेरियन नावां में। पच्छम रा सम्राट मिहिस्कुल अर भारत रा खिलजी सम्राट अल्लाउद्दीन खिलजी रै दरबार में भी लूर रा रंग बरसता। गिरासिया अर नाग जाति इणरी खेवणहार। अब जणां मायड़ भाषा राजस्थानी में ई बीखो, तो लूर रै खूटण-टूटण-छूटण नै कुण ढाबै ?

⌘⌘

गैरिया गैर रमै

रंगरूड़ो राजस्थान। चौगड़दै रंगां री रेळ-पेळ। रंग-रंगीलै तीज-तिंवारां री छौळ। तातै लोही री राती होळी रमण री रीत। मोट्यार रंगारा। धरा रंगीजै। सीलवंत्यां हथळेवै सूं सीधी अगन री पीळी झाळां साम्हीं। रंगां री ऊजळी कीरत। आ कीरत होळी सूं कमती कद!

बसंत पांच्यूं धरा रंगीजै। रूंखां-झाड़कां, बांठकां माथै कूंपळां फूटै। फोगड़ा पांगरै। चीणा अर कणक माथै होळा लागण ढूकै। हरिया पानका। लाल, पीळा, केसरिया, हिरमिच, बैंगणियां अर धोळा पुहुप। फागण रो बाजै बायरियो। फूल-पानका लहरियो करै। फागणियो फरफरावै। लोगड़ा कैवै— भगवान क्रिसण फाग रमै। आठ्यूं सूं लागै होळका। होळी रो डांडो रुपै। मोट्यार सांभै डफ, झींझा, बांकिया, थाळी, झालर, घूघरा, चिमटा अर ढोला चूनड़ी रा साफा, लेहरियो, मोलियो, पंचरंगी पेचा बांध आय ढूकै चौपाळ। डांडिया रमै। तरवारां भांजै। लट्ठ बजावै। झीणी-झीणी गुलाबी सरदी पड़ै। धूणी चेतन करै। डफ ताता करै अर बजावै। भेळा होय गोळ में गावै—

उठ मिल लै रे भरत भाई, हर आयो रे
कै उठ मिल लै।

दूजो गावै—

थारै तो कारण म्हैं मोहन हिरणी होई,
होय हिरणी जंगळ सारो हेरयो रे।
ढोली, ढोल बजावो, गैरिया गैर रमै।

छोर्‍यां आठ्यूं सूं ई गोबर रा बडकूलिया बणावणा सरू करै। गोबर सूं शंख, तारा, झेरणो, गट्ट, चांद, सूरज, पान, दिवलो, होळका री मूरत आद बणावै। होळी मंगळावण सूं पैली बड़कूलिया सूकै। आं री माळा बणावै। होळी रै दिनां बैनां भायां रै

सिर सूं उंवारै। वारणा लेवै। भाई री लांबी उमर री कामना करै। आई उतार'र बड़कूलियां री माळा नै झळती होळी में न्हांखै। पुन्यूं रै दिन होळी मंगळाईजै। इण दिन लोगड़ा छाणा, थेपड़ी, लकड़ी आद बळीतै री चौक में ढिगली करै। बड़कूलियां भेळीजै। ढिगली रै सूंअै बिचाळै प्रह्लाद रूपी खेजड़ी रो हरियो डाळो रोपीजै। पंडितजी मंगळावण रो मुहरत काढै। पूजा करै। बडेरो लांपो लगावै। होळी मंगळाईजै। कुंवारा मोट्यार इण प्रह्लाद नै काढ भाजै। सुगनी झळ में सुगन देखै। झाळ जिण दिस जावै उण दिस जमानो जबर बतावै। लोग-लुगाई होळी रै खीरां में पापड़, खीचिया, कणक रा सिट्टा सेकै। होळा करै। आंनै बारा म्हीनां सांभै। मानता है कै अै पापड़-खीचिया टाबरां रो खुलखुलियो ठीक करै। कुंवारी छोर्‌यां राख सूं पिंडोळ्यां बणावै। आं पिंडोळ्यां सूं सोळा दिन गवर पूजै।

होळका मंगळावण रै दूजै दिन गैर रमीजै। इण दिन नै छारंडी, धुलंडी अर धूड़िया-फूसिया कैवै। लोग-लुगाई अर टाबर-बडेरा झांझरकै ई घरां सूं निकळै। हाथां में रंग-गुलाल, पिचकारी अर रंग री बोतलां। साथी-संगळी, भायेला-भापेला अर सग्गा-सोई नै रंगै। टोळ रा टोळ बगै। धमाळां गावै। डफ बजावै। सूगला बोलै। मसखरियां करै। गळी-गळी में भाठा, डोलच्यां रा फटीड़ अर कोरड़ां रा सरड़ाट सुणीजै। देवर-भोजाई रंगण नै खसै। काठो मसळै। थोबड़ा अैड़ा रंगीजै कै बेमाता ई नीं पिछाणै। गधेड़ां चढै। मींगणां री माळा। खल्लां रा मौड़। डील माथै राख-धूड़ कादो मसळै। मै'री नचावै। गैर रम्यां पछै भोजायां देवर अर दूजां नै पैलड़ै दिन बणायोड़ा पकवान परोसै। कनाणा (बाड़मेर) री गैर, शेखावाटी री गींदड़, बीकाणै री अमरसिंह, हेड़ाऊ मै'री री रम्मत अर हर्षा-व्यासां री होळी। भरतपुर री लट्ठमार होळी अर रसिया इणी दिन रंग में आवै।

हिरणाकुस री बैन होळका। होळका नै अगन-सिनान रो वरदान। अगन-सिनान सूं उणरो रूप निखरै। होळका रो भतीजो प्रह्लाद विष्णु रो भगत। हिरणाकुस विष्णु नै मानै दुस्मण। होळका प्रह्लाद नै बाळ मारण री धारै। प्रह्लाद नै गोदी में लेय'र बा अगन-सिनान करै। वरदान फुरै। होळका बळै पण प्रह्लाद बच जावै। इण री साख में होळी मंगळाईजै। हिरणाकुस री बैन होळका रो ब्यांव राजस्थान रा ईलोजी साथै बसंत पांच्यूं नै तय। ईलोजी जान लेय'र ढूकै। होळका रै बळ मरण रो समाचार मिळै। ईलोजी बगना व्है जावै। गैलायां करै। भोमका जाय'र राख में लिटै। धूड़-कादो मसळै। लोगड़ उण माथै पाणी फेंकै। गुलाल-कादो न्हांखै। ईलोजी बसंत पांच्यूं सूं पुन्यूं तक गैला

हुयोड़ा फिरै। छेकड़ हरिसरण होय देवता बणै। लोगां नै परचा देवै। अेकर सीतळा माता वरदान देवै। ईलोजी रूसो मती ना, जिका थानै होळी रै दूजै दिन पूजैला, वांका कारज सरैला। बस, उणी दिन सूं धुलंडी मनाईजै। इण दिन लोगड़ा ईलोजी दांई बगना होय गैलायां करता। दोपारै तांई गैर रमै। दोपारां पछै जाणकारां रै घरां राम-रमी करण निसरै।

⌘⌘

गणगौर-पूजा

नौरतै रै तीजै दिन यानी चैत रै चानण-पख री तीज नै गौरी-शंकर री पूजा होवै। गौरी मात जगदंबा यानी पारवती। पारवती रा धणी शंकर। इण दिन आं दोन्यां री पूजा ईसर-गणगौर रै रूप में होवै। पारवतीजी शंकर नै वर-रूप पावण सारू तप कर्‌यो। शंकरजी राजी होया। वरदान मांगण रो कैयो। पारवतीजी शंकरजी नै ई वर-रूप मांग्यो। पारवती री मनसा पूरण होई। बस, उणी 'ज दिन सूं कुंवारी छोर्‌यां मनसा-वर पावण सारू ईसर-गणगौर पूजै। सुहागणां धणी री लांबी उमर सारू पूजै। गणगौर री पूजा चैत रै अंधार-पख री तीज सूं सरू होवै। होळका री राख सूं छोर्‌यां बत्तीस पिंडोळिया बणावै। घर में थरपै अर सोळै दिनां तांई गणगौर पूजै। सोळै दिनां तांई भागफाटी उठ दूब ल्यावै। बाग-बाड़ी में गावै—

बाड़ी आळा बाड़ी खोल,
बाड़ी री किंवाड़ी खोल,
धीवड़ियां आई दूब नै।

दूब लेय घरां आवै। माटी का काठ री गणगौर री देवळ नै दूब सूं काचै दूध रा छांटा देवै। राख री पिंडोळ्यां माथै कूंकूं री टिक्की लगावै। कुंवार्‍यां अर सुहागणां भींत माथै कूंकूं अर काजळ री टीकी काढै। गावै—

टीकी सम्मा क झम्मा
टीकी पानां क फूलां।

कांसी री थाळी में दई, पाणी, सुपारी अर चांदी री टूम धर दूब सूं गणगौर नै संपड़ावै। गावै—

केसर कूंकूं भरी अे तळाई,
ज्यां में बाई गवरां अे न्हाई।

आठवैं दिन ईसर, बाई गवरजा नै लेवण सासरै ढूकै। इण दिन छोर्‌यां कुंभार रै घर सूं पाळसियो अर माटी ल्यावै। घरां माटी सूं ईसर, ढोली अर मालण बणावै। सगळी

देवळ नै गणगौर भेळै पाळसियै में बैठावै। आगलै आठ दिन तक बनौरा काढै। दाख, काजू, बिदाम, मिसरी, मूंफळी, पतासा सूं दोन्यां री मनवार करै। सोळवैं दिन दायजै रो समान— दूब अर पुहुप भेळा करै।

जीमण सारू बाजरी रा ढोकळा बणावै। ढोकळा चूर'र सक्कर बुरकावै अर ऊपर धपटवों घी घालै। जीमा-जूठो कर्‌यां पछै बाई गवरजा नै आज रै दिन सासरै पधरावै। नदी, तळाब का कूवै नै सासरो मानै। भेळी होय ईसर-गणगौर री सवारी गाजै-बाजै सूं काढता थकां बठै ढूकै। देवळ्यां नै बिद्‌या दिरीजै। कूवै, नदी का तळाब में पधरावै। गवर पूजण आळ्यां सोळै दिन अेकत राखै। इण दिन वरत खोलै। पग रै आंटै सूं ढोकळा जीमै। सुहागणां ब्यांव रै बाद गणगौर में अजूणो करै। अजूणै में ढोकळां री ठौड़ खीर-पूड़ी अर सीरो बणै अर सोळै सुहागणां नै नूंत जीमावै।

गणगौर पूजा आखै राजस्थान में। उदयपुर री धींगा गवर, बीकानेर री चांदमल ढढ्ढा री गवर नामी। उदयपुर रा महाराज राजसिंह छोटी राणी नै राजी करण सारू चानण-पख री तीज री जाग्यां अंधार-पख री तीज नै गणगौर री सवारी काढी। ओ काम धिंगाणै करीज्यो। इण सारू आ धींगा गवर बाजै। बूंदी रा राजा जोधसिंह हाड़ा चैत रै चानण-पख में तीज नै गणगौर री देवळ अर आपरी जोड़ायत भेळै नाव चढ तळाब में सैर करै हा। अचाणचक नाव पलटी अर दोन्यूं धणी-लुगाई गणगौर समेत डूबग्या। बस, इणी दिन सूं बूंदी में गणगौर पूजण रो बारण। बूंदी में कैबा चालै—

'हाडो ले डूब्यो गणगौर!'

⌘⌘

वसंत पांच्यूं

माघ महीनै रै चानण-पख री पांच्यूं वसंत पंचमी बाजै। आपां राजस्थानी इणनै बस्त पांच्यूं कथां। वसंत पांच्यूं नै विद्या, बुद्धि, ग्यान, वाणी, सिरजण, प्रकृति, कळावां, अभिव्यक्ति, अन्न अर धन री धिराणी मा सुरसत रो जलम होयो।

विष्णु जी री भोळावण परोटतां बिरमा जी स्रिस्टी बणाई। आ स्रिस्टी गूंगी ही। स्रिस्टी रा जीव-जंत अबोला। कठैई कोई ध्वनि नीं ही। च्यारूं कूंट सूं-सप्प। आ देख विष्णुजी बेराजी होया। ब्रह्माजी नै भळै भोळावण दी कै जगत में ध्वनि अर जीव-जंत नै वाणी बपराओ। ब्रह्माजी आपरै कमंडळ सूं महालक्ष्मी माथै जळ छिड़क्यो। उण सूं च्यार हाथां वाळी मा सुरसत प्रगटी। मा सुरसत रै दो हाथां में वीणा, एक हाथ में पोथी अर अेक हाथ वर मुद्रा में।

मा सुरसत प्रगट होवतां ई वीणा रा तार झंकार्‌या। उण सूं समूळी स्रिस्टी नै ध्वनि मिली। पोथी खोली तो लोगां नै बुद्धि अर ग्यान मिल्यो, कळा, संगीत, आखर, सबद, भाख, वाणी, गायन, सिरजण, अभिव्यक्ति आद रो ग्यान पसर्‌यो।

अेक दिन सुरसत क्रिसणजी रो मोवणो रूप देख उणां माथै रीझगी। ब्यांव रो प्रस्ताव राख्यो। क्रिसणजी बोल्या, ''म्हैं तो रुकमण सागै परणीज्योड़ो हूं अर म्हारै साथै राधा भी है। इण करण म्हैं आप साथै ब्यांव नीं कर सकूं।'' सुरसत जी अणमणा होया तो क्रिसणजी उणां नै वरदान दियो। वै बोल्या, ''आज पछै आपरी पूजा माघ महीनै रै चानण-पख री पांच्यूं नै आखी स्रिस्टी करसी।'' इण पछै मा सुरसत री पैली पूजा वसंत पंचमी नै खुद भगवान क्रिसण करी। दूजी पूजा स्रिस्टी रा सिरजणहार बिरमा जी करी। इण भांत वसंत पंचमी थरपीजी।

मा सुरतस विद्या, बुद्धि, वाणी, भासा, आखर, सबद री जलम देवाळ बाजै। इणी'ज कारण भारतीय संस्कृति में विद्या वसंत पंचमी नै ई सरू करीजती। गुरुकुळ में गुरुजी टाबर नै पाटी माथै पैलो आखर सिखावता। आज रो भारत तो पच्छम रो पिछलग्गू बणग्यो। अंगरेजां रै ढाळै जुलाई में पोसाळ खोलै। गुरुवार सेवा रो होवतो।

इण दिन भणाई री छुट्टी होवती। रविार ओज अर तेज रो दिन होवतो। इण दिन गूढ ग्यान दिरीजतो। पण अब तो अंगरेजां री भोळायोड़ी रविवार री छुट्टी होवै। शुक्रवार राखसगुरु शुक्राचार्य रो बाजै। इण दिन तंत्र-मंत्र अर तामसी ग्यान री शिक्षा दिरीजती।

मा सुरसत कळावां री धिराणी बजै। साहित्य, संगीत, गायन, वादन, नृत्य आद कलावां रा कलाकार आज रै दिन ई मा सुरसत नै ध्यावै। मा सुरसत ई सगळै रसां री जामण बाजै।

प्रकृति नै सोवणी अर मनमोवणी मा सुरसत ई बणाई। रूंख, बेलां, भांत-भांतीला पुहुप, पखेरू, पतंगा अर भंवरा बणाया। झरना अर अर नद्यां में कळ-कह री वाणी। भंवरां री गुंजार। पंखेरुवां रो कलरव। मोरियै री पीहू, कोयल री कहूक आद सो-कीं मा सुरसत रो वरदान। इण कारण आज सुरसत नै याद करतां प्रकृति री पूजा होवै।

वसंत में कामदेव जागै। आज रै ई दिन बै काम नै जग में पसारै। रति सूं भेंटा करै अर उण माथै रीझै। इण सारू आज रै दिन कामदेव री भी पूजा होवै। कामदेव अर रति रो मिलाप फागण में हावै। फागण में कामदेव रा काम-बाण चालै अर समूळी जगती काम री भेंट चढै। इणीज कारण फागण नै मदन-मास भी कैवै।

⌘⌘

मरजादा रो तिंवार रखपुन्यूं

रखपुन्यूं रो तिंवार आखै भारत में हरखां-कोडां धोकीजै। ओ तिंवार सावण री पुन्यूं नै आवै। रखपुन्यूं बैन-भाई री प्रीत रो तिंवार बाजै। ओ तिंवार पण फगत बैन-भाई री प्रीत रो इज तिंवार नीं, उणां री मान-मरजादा रो भी तिंवार है। ओ तिंवार बैन-भाई रै आपसरी रै बिस्वास रो भी तिंवार है। इण दिन बैनां आपरै भाई रै लिलाड़ माथै टीको काढ'र जीवणै हाथ री कळाई माथै राखी बांध परी आपरी रिछपाळ रा वाचा लेवै। बैन भाई री लांबी उमर री कामना अर चावना करै। आखै देस रा बैन-भाई इण तिंवार री उडीक राखै अर कोड करता उच्छब सूं मनावै। बैन-भाई राखी बांधण रै मौरत तांई आखै दिन निरणो काळजो राखै अर वरत करै। बैन भाई री कळाई माथै राखी बांध्यां पछै ई कीं अरोगै तो भाई बैन सूं टीको कढवाय'र उणनै उणरी रिछपाळ रा वाचा दियां पछै ई जीमै। इण दिन बैन-भाई अेक-दूसरै रै सुख-दुख में आडा आवण अर लांबी उमर री कामना करै।

राखी बांधण री सरुआत भोत जूनी है। रखपुन्यूं पेटै वेद-पुराण आद ग्रंथां में भोत कीं लिखीज्यो है। इण रो इतिहास सिंधु घाटी री सभ्यता सूं भी जुड़ियो थको बताईजै। उण बगत तांई तो वैदिक समाज में सभ्यता री सरुआत ई हुई ही। असल में रखपुन्यूं री परापर बां बैनां थरपी ही जिकी मा जाई बैनां नीं ही। चावै बां आपरी आन-बान-स्यान री रिछपाळ सारू ई राखी बांधण री रीत टोरी हुवै। पण आज भी बा परापर लगोलग इकसार निभ रैयी है अर इणरी मानता भी थिर है। इतिहास रा पानां में देखां तो इण तिंवार री थरपणा लगैटगै 6 हजार साल पैली हुई। इण बात रा केई प्रमाण भी इतिहास रै पानां में अटकाईज्योड़ा है।

रखपुन्यूं री पैलड़ी सरुआत राजा बलि रै बगत हुई मानीजै। राखसां रै राजा बलि अेकसौ यग्य पूरा कर'र सुरग माथै राज री इंछ्या करी। उण री इण हरकत सूं इंदर रो सिंघासण डोलग्यो। इंदर दूजै देवतावां नै साथै लेय'र भगवान विष्णु री सरण

लीवी। उणां विष्णु सूं सुरग नै बचावण री अरज करी। विष्णु अेक बावनै बिरामण रो भेस धार्‌यो अर बलि कनै गया। उणां दान में नामी बलि सूं दान में तीन पग धरती मांगी। राजा बलि हांमळ भरदी अर वाचा देय दिया। राखसां रो गुरु शुक्र पिछाणग्यो कै ओ बावनो ब्राह्मण कुण है। बो राखसराज बलि नै दान सूं पग पाछा देवण सारू कैई पण बलि वाचां में बंध्योड़ो हुवण सूं नटग्यो। विष्णु पैलड़ै पग सूं सुरग अर दूजै पग सूं धरती नापली। अेक पग जमीं कम रैयगी तो विष्णु पूछ्यो कै अबै तीजो पग कठै मेलूं? राखसराज बलि बोल्यो, ''और तो जमीं कोनी, अब आप तीजो पग म्हारै सिर माथै इज धरो।'' विष्णु तीजो पग उणरै सिर माथै धर दियो। विष्णु रै पग सूं बो पताळ में धंसग्यो। बो भी विष्णु सूं पैली वाचा लेय लिया हा कै आप हरमेस म्हारै साम्हीं ई रैवोला। भगवान विष्णु उणरी आ बात मान'र पताळ रा द्वारपाल बाग्या। इण सूं लिछमी जी डरपग्या कै विष्णु बिन्यां अबै बैकुंठ रो कांई बटसी? लिछमी जी भगवान विष्णु नै पाछा बैकुंठ ल्यावण री तजबीज लगाई। उणां राखसराज बलि नै भाई बणायो अर उण री कळाई माथै राखी बांधी अर आपरी अर आपरै धणी री रिछपाळ रा वाचा ले लिया। वाचा में बंध बलि विष्णु नै जावण रो कैय दियो। लिछमी विष्णु नै पाछा बैकुंठ लेय आयी। उण दिन सावण री पुन्यूं ही। बा पुन्यूं हरमेस सारू रखपुन्यूं रूप थरपीजगी।

अैड़ो ई अेक और उदाहरण है महाभारत रो। भगवान क्रिसण जी दुष्ट राजा शिशुपाल नै मार्‌यो। जुध में क्रिसण जी रै डावै हाथ में लागगी अर लोही आयग्यो। आंगळी लोहीझार होयगी। इणनै देख'र द्रौपदी भोत दुखी होई। उण झट आपरी धोती री कान्नी फाड़'र क्रिसण जी रै हाथ अर आंगळी माथै पाटी बांध दी। पाटी बांध्यां लोही थमग्यो। क्रिसण जी रो जीव सौरो होयग्यो। उणां उणीज बगत द्रौपदी नै आपरी बैन बणायली। बरसां बाद जद पांडव द्रौपदी नै जूवै में हारग्या अर दुर्योधन भरी सभा में लाज उघाड़ण ढूक्यो तो आगै बध'र उणरो चीर बधाय'र द्रौपदी री लाज बचाई।

वेद, पुराण अर धरम-ग्रंथां रै अलावा भी इतिहास में राखी री आण-काण रा किस्सा मिलै। चित्तौड़ रै राजा री बिधवा राणी करुणावती अर हुमायू रो भी किस्सो है। अेकर राजपूतां अर गुजरात रै सुल्तान में भारी जुध मच्यो। गुजरात रो सुल्तान भारी पड़ै हो। राणी री पार नीं पड़ै ही। उण गुजरात रै सुल्तान बहादुर शाह सूं आपरी अर आपरै राज री रिछपाळ सारू दिल्ली बादशाह हुमायू नै राखी भेज दी। हुमायू करुणावती री राखी री लाज राखी। उणरै बाद उण करुणावती नै आपरी बैन बणायली।

रखपुन्यूं मनावण री विगत

रखपुन्यूं आळै दिन झांझरकै उठ'र सिनान-ध्यान करणा चाइजै। घर रै दरूजै रै दोन्यां कानी गेरू सूं साथियो मांडै अर राधा-क्रिसण लिखीजै। आखै दिन बैन-भाई वरत धारै। राखी बांधण रो मौरत निकळवाय बैन भाई नै अर भाई बैन नै नूंतै। बैन थाळी सजावै। थाळी रै बीचोबीच साथियो मांडै। थाळी में रोळी-मोळी, अखत-चावळ, पुहुप, पान-सुपारी अर बैन भाई नै भावै जिकी मिठाई राखै। भाई सारू हाथ सूं गूंथ्योड़ी सोवणी-मोवणी राखी अर भावज सारू हाथ सूं इज गूंथ्योड़ो लूंबो राखणो चाइजै। मौरत में भदरा नै टाळ'र राखी बांधणो तै करीजै। भाई अर भोजाई नै ऊगतै कानी मूंडो कर'र पाटै माथै बैठाईजै। पछै टीको काढ'र आरती उतारीजै। भाई अर भोजाई रै हाथां में नारेळ थमाईजै। इणरै बाद बाई रै राखी अर भोजाई रै चुड़लै माथै लूंबो बांधीजै। राखी बांध्यां पछै मिठाई सूं अेक-दूसरै रो मूंडो अैंठाईजै। भाई बडो है, तो बैन अर बैन बडी है तो भाई पगां लागै। आसीस लेवै। भाई बैन नै उणरी इंछ्यां री चीज भेंट सरूप देवै। दरूजै माथै मांड्योड़ा साथिया अर राधा-क्रिसणजी रै चितरामां रै भोग लगाईजै। इण रै बाद वरत खोलीजै।

⌘⌘

चौमासो : मुरधर रो उच्छब

चौमासै री बिरखा रा रंग न्यारा। तपती गरमी अर फंफेड़ण वाळी लू। इणरै बिच्चै छांटां रो छमको। सूकी धरती। कळझळता रूंखड़ा। लटपटाईजता घास अर बांठका। तिरस सांभ भटकता डांगर। पाणी-पाणी करता प्राण छोडता पंखेरू। रूंआंड़ी उपाड़तो किरसो। मुरधर में मोरां रै कंठां में टसकता बिरखा रा गीत। डेडरां रै ताळवै चिपती जीभ। काछबां रा पग पिंड में कैद। चौगड़दै हाहाकार। आस, कै कदैई तो होसी जळजळाकार। च्यारूं कूंट बिरखा री चावना-ध्यावना। क्या कैवणा है अैड़ी चाईजती घड़ी में बिरखा रा।

मुरधर में बिरखा री पैली ई छांट री रंगत निरवाळी। बिरखा रा अणूता कोड। मोरिया नाचण ढूकै। डेडर कंठ संभाळै अर लांबी तान टैरै। काछबा देखै जळव्हाळा। रूंखड़ा लैरिया करै। बांठका-झाड़का पान सोधै। सींवण, धामण, बूर, भुरट, मुरट, खींप, बूई, सिणिया अर डचाब पसवाड़ो फोरै। रोही आप रा हरियल गाभा अंवेरै। किरसो हळ पंजाळी सीध में करै। धरती पेट पड़िया बीज उजाळै। चौमासो मुरधर में उच्छब रै उणमान। चौगड़दै पाणी रा गुणगान। बिरखा रा नाप आंगळ्यां माथै अर आंगळ्यां खेत कानी। खेत में चिग बापरै तो डांगरां रा मन उडारू।

खेतीखड़ आपरै धंधै। टाबरिया रम्मतां में। रम्मत में माटी रा घर। छोरयां हींडा री होड में। लुगायां तीजां री त्यारयां में। नूंवी बीनण्यां तकावै पीवरिया। नूंवा परणीज्या मोट्यार पैलै सावण धण अळगाव में बटबटीजै। खेतां में लुगायां भेळी होवै। साथै रैवै। जोध-जवान छोरयां-छापरयां-बीनण्यां। खेत मं रूंखां रै ऊंचा लांबा डाळां माथै घलै हींडा। पकै पकवान। पकोड़ा। चीलड़ा। चूरमा। गुलगुला। मालपूआ। पुड़ा। पछै हींडीजै हींडा। लांबी-लांबी ऊबल्यां मचकाईजै। ऊबली अेकल अर जोड़ै सूं। ताळी। नाच। हंसी। ठट्ठा। गीत। किलोळ। इण सब में छूटै हांफड़ा। भळै थक-हार बनभोजन नै ढूकै। सगळी भेळी जीमै। जीम-जूठ घरां आवै। खेत में बणाई चीजां घर रै बाकी लोगां में बंटै। घर में सगळा कोड सूं जीमै। छेकड़ सगळी थक-हार सोवै।

बिरखा में तळाब, कुंड, बावड़ी आद स्सै भरीजै। लबालब। मोट्यार आं में न्हावण ढूकै। गंठा बीड़ै। चुभ्यां लगावै। पाणी में ऊंधा-सूंआ तिरै। गंठा बीड़णा अेक कळा। हरेक नीं बीड़ सकै गंठो। गंठो, ऊंची जागयां सूं पाणी में कूदण री अेक कळा। अेक पग सीधो अर दूजै पग में पंजो पैलड़ै पग रै गोडै माथै। तीखो रूप। सीधो पाणी में— देड़ेंदा। हब्बीड़ ऊपड़ै। पाणी में जळेबी बणै अर सगळा ताळी देवता बोलै— फलाणै जबरो गंठो बीड़ियो। तळाब रै किनारै बिजिया भांग घोटीजै। सगळा मिल भांग पीवै। भांग पीयां पछै न्हावण री अेक झुट्टी भळै लागै। न्हावतां-न्हावतां भांग असर सरू करै। भूख बधै।

न्हावण रै बाद तळाब माथै ई गोठ होवै। सीरा-पूड़ी, दाळ-बाटी-चूरमो अर पकोड़ा बणै। मोगरी रो चूरमो भांग रै नसै में दूभरिया लगावै। बीकानेर रै हंसोळाव-संसोळाव, हरषोळाव, कोलायत अर सागर रै तळाबां माथै आं दिनां गोठां रा दौर चालै। बजरंग धोरै माथै भी रंग जमै। जोधपुर, उदयपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, कोटा, बूंदी री तो गोठां नामी है। देस-दिसावर गया लोग आं गोठां रा सुख लूटण सारू पाछा आवै। मुरधर री गोठां री महिमा निरवाळी!

⌘⌘

ठंडा झोला देई म्हारी माय

राजस्थान में बारै म्हीना त्योहार। रुत रा त्योहार पण लूंठा अनै अरथाऊ। गरमी, सरदी, बसंत अर बरसाळै री महिमा निराळी। वरतां रा खान-पान ई रुत मुजब रुत बदळण अर दूजी रुत आवण रै बिचाळै रा वरत। नूंवी रुत नै सैं'न करण रा वरत। आखातीज, संकरांत, निरजळा इग्यारस, सावणी तीज, भादूड़ै री तीज अर बासीड़ा भी अैड़ा ई त्योहार। राजस्थान सारू बासीड़ां री महिमा मोकळी। आखो राजस्थान धोकै। सीतळा-बासीड़ा-सेडळ रूपा काळका री ध्यावना करै।

सीतळा अष्टमी ई बासीड़ां रो त्योहार। ओ त्याहार चैत रै अंधार-पख री आठ्यूं नै आवै। पण सोरफ सारू होळी रै बाद पैलै सोमवार का बिस्पतवार नै भी धोकण री छूट। नवदुरगा मांय सूं मा 'कालिरात्रि' यानी काळका माता नै ई लोक में सीतळा माता कैवै। मा काळका रै गधै री सवारी। उणी भांत सीतळा माता री सवारी भी गधो। मा काळका पड़तख काळ रूप। बिरमा-विष्णु अर महेश ई डरै। भूत-प्रेत, रोग, रोग-बिजोग, काळ-अकाळ, देव-मिनख अर राखस रो तो डोळ ई कांई। काळका माता रै सीतळा माता रूप री भी आ ई महिमा। इणी कारण राजस्थान्यां री मानता कै सीतळा माता नै धोक्यां अबखो नीं पड़ै। इण दिन वरत राखै। मानता कै वरत करणियां रै कुटुंब-कबीलै में तातो ताव, पीळियो, हाडतोड़ बुखार, बांसणियां-दुखणिया, आंख रोग, गुरांदणी, बडी माता, छोटी माता, ऊपरलै रा रोग अर भूत-प्रेम री मार नीं हुवै।

बासीड़ां सूं पैलै दिन भोग बणाईजै। मीठा चावळ, खीर, भांत-भांत री पूड़्यां, छिलका, मूंग री दाळ, कढ़ी, राबड़ी, कांजीबड़ा, दई बड़ा, सांगरी, फोफळिया, कैरिया-कूमट, भे, मोठोड़ी, गुवार फळी रा साग, मूंग-मोठ-बाजरी रो रंधीण, दई, पापड़, मोठ-बाजरी रा बी'रा भोग सारू त्यार करीजै। बासीड़ां रै दिन रसोई में घर-धिरयाणी घी सूं हाथ रा छापा छापै। छापां माथै रोळी-चावळ चिरचै। पुहुप चढावै। दीयो चेतन करै। धूप-बत्ती करै। हाथाजोड़ी कर सीतळा माता सूं अरज करै—

म्हारै टाबरियां नै ठंडा झोला देई म्हारी माय।
म्हारै टाबरियां रा सगळा जतन पुराई म्हारी माय।।

गीत रै बीच में घर रै सगळै टाबरां रा नाम ई लेवै। झांझरकै ई बास-गळी री लुगायां भेळी होवै। थाळी में पूजा रो समान— रोळी, मोळी, कूंकूं, चावळ, काजळ, टीकी, होळका री सखरी सात पिंडोळ्यां, जळ रो लोटियो, धूप-अगरबत्ती अर पुहुप सजावै। भोग सारू बणाई बासी रसोई थाळी में सजावै। घर रै सगळां रा हाथ लगुवावै। हाथां ऊंचाया गीत गांवत्या सीतळा माता रै मिंदर पूगै। पूजा करै। भोग लगावै। पाछी घरां आय पिंडोळ्यां पळींडै थरपै। घर रा सगळा बठै धोक लगावै। पूजा रो जळ आंख्यां लगावै। लुगायां चौक माथै भी पूजै। मोठ-बाजरी रै बी'रां माथै रिपियो राख सासू नै भेंटै। पगां लागै। सासू आसीस देवै— ''दूधां न्हावो-पूतां फळो।'' पछै सगळी लुगायां सीतळा माता री कथा सुणै। जीमै अर बरत खोलै।

शीतळा माता री कथा

रामजी भला दिन देवै तो... अेक ही बूढळी। ठंडो ई खावती, ठंडो ई पीवती। ठंडो ई पैरती अर ठंडो ई बोलती। बासी खावती। बासीड़ा धोकती। पूरो परिवार निरोगो। अेक दिन गांव पाटै उतरग्यो। आग में सगळां रा घर बळग्या, पण डोकरी रो घर बंचग्यो। लोगां पूछ्यो, ''डोकरड़ी इयां-कियां? के टूणा-कामण कर्‌या?'' डोकरी बोली, ''म्हनै तो सीतळा माता तूठ्या है। म्हैं तो बासीड़ा धोकूं। बासी खाऊं। सीतळा माता रा वरत करूं। म्हारी अर म्हारै परिवार री रिछपाळ सेडळ माता करी है।'' छेकड़ में कथा कैवण वाळी बोलै— ''हे सेडळ माता! हे सीतळा माता! जियां डोकरी नै तूठी, बियां ई सगळां नै तूठी!''

⌘⌘

छम छम करती लोहड़ी आई

राजस्थानी धरा उच्छबां री खान। बा'रा म्हीनां उच्छब। देई-देवतां रा। भोमिया-पितरां रो। मौज-मस्ती रा। रीत-प्रीत रा। रुत-कुदरत रा। खेती-बाड़ी रा। रास-रम्मत रा। तिथ-तिंवारां रा तिथि-तिंवारां रा। महीनै में तीसूं दिन तिंवार। अै तिंवार मिनखाजूण में मस्ती रा रंग भरै। इस्यो ई अेक तिंवार, सकरांत रो तिंवार। जिणनै मकर-संक्रांति भी कैवै। सूरज भगवान माघ म्हीनै में धरती रै दिखणादै अधगोळ सूं उतराधै अधगोळ में आवै। मकर रासि सूं मेळ करै। इणी दिन उतराधै अधगोळ में गरमी सरू हुवै। मानता है कै इणी महीनै सूत्या देव जागै। देवै जका देवता। देव सरीखी परकत, मतलब कुदरत मिनखां नै सौरफ री सौगात देवै। ठंड सूं पिंड छुडावै। गरमी पसारै। फसलां माथै कूंपळां फूटै। फूल आवै। इणी कोड में सकरांत रो तिंवार आखो राजस्थान मनावै।

सुहागणां तिल सकरिया लाडू, घेवर, मोतीचूर रै लाडू माथै रिपिया मैल'र सासू नै परोसै। सासू आसीस देवै। भावज देवर नै घेवर अर जेठ नै जळेबी परोसै। सुहागणां कोई न कोई आखड़ी, मतलब संकळप लेय'र किणी जिन्स रा चवदै नग जेठाणी, देवराणी, नणंद, काकी, सासू, भुआ, सासू, मासी सासू, मामी सासू, बडिया सासू अर बामणां नै दान करै। सुरजी री पूजा करै। भोजायां सासरै रै टाबरां नै मूंफळ्यां, रेवड़्यां, गज्जक अर तिल सकरिया बांटै। सनातनी पख बतावै कै इण दिन क्रिसण जी नै मारण सारू कंश लोहिता नांव री राखसणी नै गोकळ भेजी। लोहित नै क्रिसणजी खेल-खेल में ई पाधरी करदी। इण घटना री याद में लोहड़ी मनाईजै। सिंधी समाज भी सकरांत सूं अेक दिन पैली इण तिंवार नै 'लाल लोही' रै मिस मनावै।

राजस्थान अर पंजाब रा आपस में रोटी-बेटी रा नाता। आं नातां माथै संस्कृति अर भाषा रा मेळ-मिळाप होया। इणी रै पाण पंजाब सूं वैसाखी अर लोहड़ी रा तिंवार राजस्थान पूग्या। आज आखै राजस्थान में मकर संक्रांति सूं अेक दिन पैली लोहड़ी रो तिंवार मनाईजै। लोहड़ी रै दिन, दिनूगै-दिनूगै बास-गळी रा टाबर भेळा होवै। घरां सूं लकड़ी-छाणां मांगै। उछळता-कूदता गावै—

लोहड़ी-लोहड़ी लकड़ी, जीवै थारी बकरी।
बकरी में तोतो, जीवै थारो पोतो।
पोतै री कमाई आई, छम-छम करती लोहड़ी आई।

लकड़ी-छाणां भेळा कर'र रात नै चौपाळ में लोहड़ी मंगळावै। लोहड़ी री धूणी माथै आखो गांव भेळो हुवै। सिकताव करै। मूंफळी, रेवड़ी, गज्जक अर तिल-सकरिया खावै। लोहड़ी री आग में तिल अरपण करै। पंजाबी लोग-लुगायां गावै— ''आ दलिदर, जा दलिदर, दलिदर दी जड़ चूल्हें पा।'' इणी भांत राजस्थानी लोग बोलै, ''तिल तड़कै, दिन भड़कै।''

पंजाबी लोकथा है— अेक बामण रै कुंवारी कन्या ही। नांव हो सुंदर-मुन्दरी। बा भोत फूठरी ही। उणनै अेक डाकू उठाय'र लेयग्यो। दुल्लै भट्टी नै ठाह पड़ी। दुल्लो भट्टी जको मुसळमान हो। बो उण कन्या नै डाकू सूं छुडाई अर अेक बामण रै बेटै साथै परणाई। साथै सेर सक्कर भी भेंट करी। इण भलै मिनख नै आज भी लोग याद करै। टाबर दुल्लै भट्टी रा गीत गा-गा'र लोहड़ी सारू बळीतो भेळो करै— ''सुंदर-मुंदरियै... हो, तेरा कौण बिचारा... हो, दुल्ला भट्टी वाळा... हो, दुल्लो धी ब्याही... हो, सेर सक्कर पाई... हो, कुड़ी दा लाल पिटारा... हो।''

जिकै पंजाबी घर में नूंवी बीनणी जावै, उण में न्यारी-निरवाळी लोहड़ी मनावै। बीनणी रै पीरै सूं मूंफळ्यां, रेवड़्यां, गज्जक, तिलकुट्टा, घेवर, फीणी आवै। लोहड़ी री धूणी माथै बांटीजै। लोहड़ी रा गीत गाईजै। आजकालै नूंवा लटका-झटका भी बपराईजै। डी.जे. लगाय'र घर रा सगळा जणां नाच-तमासा करै।

⌘⌘

बीकानेर अर आखाबीज

तिंवारां री खाण राजस्थान। सातूं दिन तिंवार। पग-पग थान। थान थरपणा रा तिंवार-उच्छब। अैड़ो उच्छब-तिंवार आखाबीज। आखा देश में मनाईजै आखातीज। यानी अक्षय तृतीया। जूनै राज बीकानेर में पण आखातीज सूं पैली आखाबीज धोकीजै। इणीज दिन बीकानेर राज री थापणा श्री करणी माता जी रै सुभ हाथां होई। राव बीकाजी आसोज सुदी दस्यूं विक्रमी सम्वत् 1522 नै जोधपुर राज सूं रिसाणा होय नूंवो राज थरपण निकळ्या। साथै हा काकोसा राव कांधळ जी। काकै-भतीजै जोधपुर री सींव सूं जांगळू, सिरसा, अबोहर, भटिण्डा, साहवा तक री धरती जीती। जाटां रा छह राज लाघड़िया-शेखसर (पांडू गोदारा), भाड़ंग (पूला सारण), सिधमुख (कंवरपाल कस्वां), रासलाणा (रायसल बेनीवा), बलूंदा (काना पूनिया), सुई (चोरण सिहाग), भेळ्या। नापा जी सांखला रै सगुनां माथै श्री करणी माता जी रै हाथां विक्रमी सम्वत् 1542 में बीकानेर राज री थापना होई। हाल रै लक्ष्मीाथजी रै मिंदर कनै नागौर-मुल्तान मारग माथै रातीघाटी में किलै रो नींव भाटो थरपीज्यो। किलो बणन में तीन बरस लाग्या। किलो बण्यां पछै थापना उच्छब विक्रमी सम्वत् 1545 री वैसाख सुदी दूज, थावर नै मनाईज्यो।

पनरै सै पैंताळवै, सुद वैसाख सुमेर।
थावर बीज थरप्पियो, बीके बीकानेर।।

आज भी जूनै बीकानेर राज रै गांवां-स्हैरां में आखाबीज मनाईजै। ओ दिन बसंत अर गरमी री रुतां रो बीचलो दिन। इण कारण ओ मौसम रो तिंवार। मौसम रो तिंवार तो पक्को ई किसानां रो तिंवार। आं दिनां नूंवो धान खळां सूं घरां ढूकै। नूंवी फसल बाईजै। बीज नै आखा भी कैईजै। आगली बुवाई सारू आखा सांभीजै। आखाबीज नै अणबूझ मोहरत अर अणबूझ सावो भी मानै। ब्यांव मंडै। चंवर्‌यां मंडै। नूंवै कामां री थरपणा भी इणी दिन करीजै। आखाबीज नै साम्हो खीचड़ो रांधीजै। अै खीचड़ा आखातीज सूं अेक दिन पैली रांधीजै। इण सारू साम्हा खीचड़ा बाजै। बाजरी

अर मोठ रो खीचड़ो। ऊपर धपटवों घी। काचरी-भेळ खीचड़ो चरको। गुड़-सक्कर बुरकायां मीठो। दूध मिलायां सबड़क्यां राफां री आफत। पण सुवाद रा ठाट। कणक-बाजरी नै भेळ बणायोड़ै खीचड़ै रा रंग न्यारा। इण खीचड़ै में कणक दाखां रो सुवाद पुरावै। अमलवाणी रा गुटकां पछै पेट करै और ल्याव... और ल्याव... बाजरिया थारो खीचड़ो लागै घणो सुवाद। रंधीण रै साथै चरका-मरका सारू भी सुआंज। पापड़-खीचिया, गुवारफळी अर कैरिया तळीजै। लूण-मिरच बुरका'र परोसीजै। आखी बड़ी, फळी-काचरी, मोठोड़ी-कोकला-काचर-गोटकां रा साग छमकीजै। थाळी में फूठरा अर बाकै में सुवाद लागै। पछै दुनियां री सगळी नमकीनां ईसका करै।

रंधीण, अमलवाणी, मोठ, बाजरी, काचरी अर कैर री आयुर्वेदिक महिमा। बाजरी बुढापो भजावै। आदमी नै जवान बणायां राखै। काम-वासना बधावै। लुगायां रो रूप निखारै अर थिर राखै। चंचलता अर फुरती बधावै। गुरदै री पथरी, गभर्वती, बावासीर अर पेट रै रोग्यां नै पण खावण सारू बरजै। मोठ पाचक अर पित्त-कफहर होवै। मोठ घणा खायां पेट आफरै अर पेट में कीड़ा पड़ै। इण सारू हींग-ल्हसण भेळीजै। काचरी नै आयुर्वेद में मृगाक्षी कैवै। काचरी पण जूनो बिगड़्योड़ो जुखाम, पित्त, कफ, कब्ज, परमेड अर पैसाब रै रोगां नै ठीक करै। कैरिया गरम करै। पित्त बणावै, पण सोजन मेटै अर पेट साफ करै। इमली अर गुड़ घोळ'र बणै अमलवाणी। आ अमलवाणी धान पचावै। भूख बधावै। बाय-बादी मेटै। आखाबीज माथै आखै जूनै बीकानेर राज में खावणै-पीवणै, पैरणै-ओढणै अर सजणै-धजणै रा ठाट। इणी कारण कैईजै—

ऊंठ, मिठाई, इस्तरी, सोनो, गहणो, साह।
पांच चीज पिरथी सिरै, वाह बीकाणा वाह।।

आखाबीज माथै पतंगबाजी री परापर। बीकानेर स्हैर रै आभै रा तो इण दिन भाग ई जागै। समूळो आभो किन्ना रै रंगां सूं हळाडोभ। सूरज दिखै न आभो। च्यारूं कूंट किन्ना ई किन्ना। घर-गळी डागळां माथै 'बोई काटा' री गूंज। किन्ना उडावणियां अर लूटणियां री भीड़ अेकूंकार। ना कोई छोटो अर ना कोई मोटो। किन्ना रा नांव पण सांतरा। अध्धो, पूणो, झांफ, तिग्गो, टिकलियो, कोयलियो, फरियल, आंखल, मकड़ो, टीकल, ढूंगल, पूंछल, भूतड़ आद नांव किन्ना रा। ढूंगै वाळो किन्नो अर बिना ढूंगै वाळो बजै किन्नी। पतंग उडावण वाळी डोर बजै मंझो। मंझो अैड़ो कै नस काट देवै। ओ मंझो तीन भांत रो होवै। सूतो या सादो, लुगदी आळो अर घोळियै आळो। सूती बजै अणसूंत्यो

धागो। लुगदी आळो अर घोळियै आळो मंझो सूंतीजै। लुगदी आळो मंझो चावळां री मांड सूं सूंतीजै। पिसियोड़ा काच, साबण, ईसबगोळ अर चावळ री मांड भेळ'र सूंतीज्योड़ै धागै नै घोळियो मंझो कैवै। ओ मंझो जबरो पक्को। इण मंझै सूं पेच लड़ाईजै। पेच ई लड़त बजै। लड़त में टाबर, बूढा-बडेरा अर लोग-लुगाई सब सामल। बीकानेर में कोठारी-कोचरां री लड़त, हकीम-काजी री लड़त अर नाई-धोबियां री लडत नामी। पतंगां री लड़त रात ढळ्यां पछै तक चलै। इनाम राखीजै। होड मचै। साथै-साथै पण खावणा-पीवणा चालता रैवै।

⌘⌘

आखातीज रो कोड

राजस्थान में रुतां रा अलेखूं तिंवार। पण आखातीज सिरै। यानी अक्षय तृतीया। वैसाख सुदी तीज नै आवै। बसंत अर गरमी री रुतां बिचाळै। इण तिंवार पेटै विष्णु धर्मसूत्र, मत्स्य पुराण, नारदीय पुराण, स्कंद पुराण अर भविष्यादि पुराण में मोकळा बखाण। मानता है कै इण तिथ रो खै मतलब क्षय नीं होवै। इण दिन करयोड़ा भलै कामां अर पुन्न रो फळ भी अखै रैवै। अखै बजै सत्य। सत्य नै मानै ईश्वर। ईश्वर अखंड अर सरब-व्यापक। तो आखातीज ईश्वर री तिथि।

मानता कै संसार खैमान। मतलब नासवान। भगवान पण अखै। जगत खैमान। तो खै नै नीं, अखैमान मतलब ईश्वर नै ध्यावणो। खैमान कारजां नै छोड, अखैमान कारज करणा। असद भावना, असद्धिचार, अहंकार, सुवारथ, काम, किरोध अर लोभ भी खैमान। त्याग, परोपकार, भाईचारो, भेळप, करुणा, दया, प्रेम अर स्यांति अखैमान। आखातीज रो तिंवार चेतावै कै आपां अखैमान नै परोटां-बपरावां-बरतां। मिनखामोल अर जीवण-मोलां नै धारां-अंगेजां। आखातीज रो तिंवार इण री विरोळ करण रो तिंवार। आपणै करमां री चींत, कूंत अर निरख रो तिंवार। अक्षय ग्रंथ 'गीता' इण री साख भरै।

जोतक में च्यार अणबूझ मौरत बाजै। गुडीपडवा (चैत सुदी अेकम), आखातीज, दसरावो अर दियाळी। आखातीज पण अणबूझ सावो भी। आखातीज माथै राजस्थान में हजारूं चंवरयां मंडै। मकान, दुकान, बिणज, बौपार, खरीद-बेचान, बुवाई-बिजाई रा काम इण दिन करीजै। गैणा-गांठा, असतर-ससतर, गाभा-लत्ता, जमीन भवन री खरीददारी इण दिन सुभ मानीजै। अनाज आखा बजै। आखा रैवै आखा। इण सारू किरसाण जतन करै। खळै सूं अनाज घरां ल्यावै। भखारी में राखै। अगली फसल में बुवाई सारू बीज साम्है। भगवान सूं अरज करै, आखा अखै राख्या, सात सिलाम।

अक्षय तृतीया यानी आखातीज नै परशुराम तिथ भी बखाणीजै। इण दिन नर नारायण, हयग्रीव अर भगवान परशुराम रो जलम होयो। परशुरामजी, अश्वत्थामा,

बलि, हड़मानजी, विभीषण, वेद व्यास अर कृष सात चिरंजीवी बाजै। परशुरामजी आं सातां में सूं अेक। इण कारण आखातीज चिरंजीवी तिथि बजै। टीपणा अर पुराणां मुजब च्यार जुग सतजुग, त्रेता, द्वापर अर कळजुग। आं जुगां में त्रेताजुग री सरुआत आखातीज सूं मानीजै। इणीज कारण आखातीज जुगादतिथ बाजै। आखातीज नै ई भगवान बदरीनारायण रै मिंदर रा पट खुलै। इण दिन नै बदरीनारायण दरसण तिथि भी कैवै। बिंदरावन में बिहारीजी रै चरणां रा दरसण भी इणी दिन होवै।

आखातीज माथै गंगा-सिनाज री महिमा। मानता है कै इण दिन करयोड़ा त्याग, तप-जप, दान-पुन्न अर होम-हवन अखै रैवै। बैन-सुवासणी, बाई-बेटी, गरीब-गगुरबां अर बिरामणां नै अखै चीजां दान करीजै। घड़ै, पंखी, खड़ाऊ, जूतै, छातै, गाय, जमीन, गन्नै, सतनाजै, सोनै, पुहुप, खरबूजै अर तरबूज रा दान पण सिरै। गन्नै रै रस सूं बणायोड़ी चीजां रै दान री महिमा अपरंपार। आखातीज रै दिन ई पितरां रो तिल सूं अर जळ सूं तरपण करीजै। पिंडदान करीजै। छोरियां इण मौकै बीन-बीनणी रा स्वांग रचावै। टोळी बणा'र घर-घर जावै, नेग मांगै, गावै—

आखातीज बांडाबीज, गुळवाणी अर गळियो खीच।
घालो आखा घालो गुळ, नीं घालो तो पईसा दयो।।

आज रै दिन छोरयां-छापरयां अर लुगायां-पतायां गौरी पूजा करै। झुंड में बैठ बिरखा री ध्यावना-चावना करै। बिरखा रा सुगन देखै। लुगायां घर रै आंगण में मेट सूं मांडणा मांडै। देवी-देवतावां रा पगलिया कोरै। आखातीज रै दिन मोठ-बाजरी अर कणक-बाजरी रो खीचड़ो रांधीजै। धपटवों घी घालीजै। खीचड़ै साथै गुवारफळी-काचरी अर अखै बड़ी, मोठोड़ी-कोकला-काचर-गोटकां रो साग अर कढी बणाईजै। चरकै-मरकै सारू पापड़, खीचिया, गुवारफळी अर कैरिया तळीजै। गुड़, इमली, काळी मिरच, लूंग अर इलायची भेळ'र सरबत बणावै। ओ सरबत अमलवाणी बाजै। पछै घर रा सगळा मिनख भेळा जीमै। आखातीज रा कोड करै।

⌘⌘

कवि भूंगर नै रंग

राजस्थानी लोक-साहित्य जग में सिरै। राजस्थानी लोक-साहित्य में बात, ओखाणा, कैवतां अर आड्यां अजब-गजब। साहित्य अजब-गजब तो कथणियां भी अजब-गजब। अैड़ा ई अजबधणी हा भूंगर कवि। भूंगर कवि बेमेळा सबदां री भेळप सूं बेरथी कविता लिखता। अै कवितावां आज भी भूंगर रा घेसळा सिरैनांव सूं लोक में भंवै। भूंगर रो जलम कद अर कठै हुयो, इण रो कोई परमाण नीं। केई विद्वान उणनै अमीर खुसरो रै बगत रो बतावो। भूंगर रो ठिकाणो केई लोग बीकानेर संभाग रै नोखा या रतनगढ नै बतावै तो केई बतावै कै भूंगर नागौर रै साठीका या भदोरै गांव रा हा। खैर कर रा या कठै ई रा हा, पण हा राजस्थान रा ई। बां आपरै घेसळां सूं राजस्थान अर राजस्थानी भाषा रो जस चौगड़दे पुगायो।

अब आप पूछस्यो कै घेसळो कांई हुवै? घेसळो हुवै बोरटी री अणघड़ जाडी अर बांकी-बावळी लकड़ी सूं बणायोड़ो चलताऊ सौटो, जकै सूं खळै में बाजरी रै सिट्टां नै कूट'र दाणा काढ्या करै। इणनै रेरू, खोटण या घेसळो कैवै। भूंगर रा घेसळा भी इण भांत ई बांका-बावळा अर बेरथा हुवै। हिंदी में अमीर खुसरो, घासीराम अर वासूजी ई घेसळां माफक ढकोसळा लिख्या। इण भांत रै बेअरथै छंद नै हिंदी में ढकोसला, घरकोसला या झटूकला कैईज्यो। आं सगळां में सिरै पण भूंगर रा घेसळा ई थरपीज्या। इणी रै पाण भूंगर रै नै राजस्थानी लोक साहित्य मं बो मुकाम मिल्यो जको अमीर खुसरो नै हिंदी साहित्य में मिल्यो।

भूंगर राजस्थानी भाषा में हंसावणियां अर बेरथा घेसळा लिखता। आं घेसळां री खास बात आ है कै आं में बेमेळा सबद है अर छेकड़ली तुक नीं मिलै। घेसळा बेतुका होवता थकां भी रसाळ है। भूंगर नै किणी री फटकार ही कै थारी कविता में जकै दिन लारली तुक मिलसी उण दिन थारी मौत हुय जासी। मौत तो हरेक नै आवै। भूंगर नै भी आवणी ई ही। पण भूंगर री मौत फटकार नै साची करगी।

अेक दिन री बात। भूंगर सांढ माथै गांवतरो करै हा। गेलै में अेक सूनो कूवो आयो। कूवै मांय कोई कूकै हो— बचाओ! बचाओ!! भूंगर कूवै में देख्यो तो अेक माणस टिरै। भूंगर नै दया आयगी। माणस नै काढण री जुगत बैठाई। उण सांढ नै कूवो डकावण सारू तचकाई। सांढ लखायो ही, इण सारू ताती अर बेगवान ही। सांढ अेक फाळ में कूवो डाकगी। सांढ रै डाकता थकां भूंगर कूवै में टिरतै माणस री टांग पकड़ली। सांढ तो परलै पार, पण भूंगर धैं कूवै में। अब भूंगर भी माणस री टांग थाम्योड़ो कूवै में टिरै। कवि मन इण विपदा में ई कविता कर दी जको कोठै सूं होठै आयगी— ''डाकणी ही सांढ, डाकगी कूवो, अेक तो हो ई, अेक और हूवो।'' उणनै अचाणचक चेतै आई कै आज तो कविता में हूवो री तुक कूवो सूं मिलगी। आज आयगी दिखै मौत। पण उणनै लखायो कै फटकार बेअसर होयगी दिखै। फटकार रो असर होवतो तो मर नीं जावतो? बण इणी खुसी में ताळी बजाई कै धररर-धम्म, कूवै रै पींदै जा लाग्यो। कूवै में पड़तां ई भूंगर रो हंसलो उडग्यो। इयां निभी फटकार भूंगर री लोक सूं विदाई हुई, पण उण रा घेसळा आज ई लोक में भंवै। आवो बांचां भूंगर रा कीं घेसळा—

(1)

बरसण लाग्या सरकणा, भींजण लागी भींत।
ऊंठ सरिसा बैयग्या, दाळ रो सुवाद आयो ई कोयनी।

(2)

गुवाड़ बिचाळै पींपळी, म्हैं जाण्यो बड़बोर।
लाफां मार्‌यो घेसळो, छाछ पड़ी मण च्यार।
लुगायां कांदा चुगल्यो अे, चीणां री दाळ-सा।

(3)

भूंगर चाल्यो सासरै, सागै च्यार जणां।
भली जिमाई लापसी, वा रै कस्सी-डांडा।

(4)

भिड़क भैंस पींपळ चढी, दोय भाजग्या ऊंठ।
गधै मारी लात री, हाथी रा दो टूक।
लुगायां लाठी ल्याओ अे, गूदड़ै में डोरा घालां।

(5)

चूल्है लारै के पड़्यो, म्हे जाण्यो लड़लूंक।
पूंछ ऊंचो कर'र देखां, तो टाबरां री माय।

(6)

चरड़-चरड़ फळसो करै, फळसै आगै दो सींग।
आगै जाय'र देखूं तो, कुतड़ी पालो खाय।
चरणद्यो बापड़ी नै, गऊ री जाई है।

(7)

गुवाड़ बिचाळै गोह पड़ी, म्हैं जाण्यो गणगौर।
पूंछड़ो ऊंचो कर'र देखूं, तो दियाळी रा दिन तीन ही है।

⌘⌘

बातां री रमझोळ

नातां-रिस्तां री रमझोळ फगत राजस्थानी भाषा में। रिस्तां री झणकार। झणकार में टणका। कठैई मीठा। कठैई चरपरा। पण नाता-रिस्ता सरजीवण राखण सारू महताऊ। सुणावणियो सुणाय'र राजी। सुणणियो सुण'र।

मा री ठौड़ जग में सै सूं ऊंची। पण मासी ई कम नीं। मा सी ई होवै— मासी। मासी सागै भाणजा रमै। हांसी करै। खारी कैवै। पण मासी नै ाावै। अेक भणियो मासी नै कैवै— ''मासी, ओ मासी, तन्नै काळा कुत्ता खासी, तन्नै भाणजो छुडासी।'' मासी मुळकै। भाणियै रै लारै भाजै। मासी नैड़ी आवै जद भाणियो आपरा सबद पाछा लेवै— ''मरो मा, जीवो मासी। दूध नीं तो, छाछ तो पासी।''

सासू-बहू रा झगड़ा तो जग जाहर। फळ रो पाछो फूल बण सकै पण सासू-बहू में बणनी दोरी। सासू नै बहू बुरी लागै तो बहू नै सासू। इणी खातर कैईजै— सासू तो माटी री ई बुरी। आ भी कैईजै कै हाथी पाळणो सौरो, बहू परोटणी दौरी। बहू माथै सासू रा टणका न्यारा ई। माड़ो काम कुण करियो? सासू बोलै— कु-घरां री जाई... छोटियै री बहू। कोई गळत काम होवतां ई मैंणो त्यार। बहुवां कनू चोर मरावां, चोर बहू रा भाई। पण आ भी कैबा कै सासू बिना के खासरो, नदी बिना के नीर। बैन सारू कैईजै— बैन हांती री धिराणी है, पांती री नीं। मामा रा कोड करतो भाणियो बोलै। मा सूं मामो चोखो। मा में अेक पण माता में दो-दो भायां सारू औखाणो है— रैवणो भायां में, हुवो चायै बैर ई। बैठणो छाया में, हुवो चायै कैर ई। भाई हुवै तो बावड़ै, गया बेगाना छड्डु। भाई बेटी ई नीं परणीजै, बाकी कीं नीं छोडै। भाई मरियै रो धोखो नीं, भोजाई रो नखरो तो भंग्यो!

राजस्थानी संस्कृति में जंवाई जम बरोबर मानीजै। लाडां-कोडां सूं पाळ्योड़ी छोरी नै उणी भांत ले जावै, जिण भांत जम सरीर सूं आदमी नै। अेक औखाणो है— सिंघ नीं देख्यो तो देख बिलाई, जम नीं देख्यो, तो देख जंवाई। ढुकाव री घड़ी गीत गाईजै। आं गीतां में मसखरी होवै। बात-बात में चूंठिया बोड़ीजै—

सात सुपारी लाडा सिंघोड़ां रो सटको।

ओछा ल्यायो जानी, लाडा क्यांरो करसी गटको?

राजस्थानी सगै नै लडाईजै। पण जान में ढूक्योड़ा सगां नै गीतां में गाळ्यां काढीजै। अै कोडायती गाळ्यां बाजै। सगा सुण-सुण राजी हुवै। उथळा देवै। सग्यां गावै— सगो जी री लीला न्यारी, अै तो बोल्यां घणी बणावै रे, अै तो सेखी घणी बघारै रे, आं सूं राम बचावै रे! दूजी गावै— पांच बरस रा सगो जी, बीसां ढळ गई सगी जी। सग्यां भेळी गावै— थे सगा जी म्हारा आया, मोटा म्हारा भाग, थे सगा जी थारै माथै धरल्यो पाग, लाजां मरगी ओ थारो उघाड़ो माथो, नीं तो थांरै टोपी आळो खीलो। इण गीत में सगो उथळो देवै— वाह, वाह सगीजी, वाह! सग्यां पाछी फिरै— बोल्यो रे बोल्यो, गाळ्यां रै कारण बोल्यो, कैण कैयो सो बोल्यो माळजादी रा। पै'र सगीजी रो घाघरो, सग्यां में आटो पीसै रे। सगो बोलै— हूं। सग्यां घिरै— हूं रे हूं, थारै घाघरियै में जूं, थारी मा रो मांटी हूं, कैण कैयो सो बोल्यो, माळजादी रा।

इणी भांत मोकळा ई चूंठिया, गाळ्यां, आड्यां, बंध अर आण गाईजै। कैईजै। बकारीजै। आं सगळां में अपार रस। रिस्ता नै नैड़ा करण रो सामरथ। घर-आंगणै में भी औखाणा कैईजै। बाबो मरयो गीगली जाई, रैया तीन रा तीन। दादी रो चूड़ो फूट्यो, सुवासण्यां नै सीरो भावै। बेटी जाई रै सुभ राज, उण रा होया नीचा हाथ। काको काकी लारै, बाकी म्हारै लारै। टाबरिया ई घर बसावै तो बाबो बूढळी क्यूं ल्यावै। काको ल्यायो काकड़ी, काकी मांग्या बीज, काकै मारी लात री, काकी गाया गीत। लुगाई रो न्हावणो, मरद रो खावणो। तिरिया रै दो आसरा— का पीहर का सासरा। तिरिया तेरै, नर अठारै। लुगाई भली लुकाई। भलाई रांड कुत्तां री बहू। दादी परणी तो दोहिती नै फेरा भावै। जच्चा जिस्या बच्चा, बेटी अर बळद जूवो नीं न्हाखै।

⌘⌘

आपां रो कल्पतरु

सृजन रै अलावा साहित्यकार रा कीं सामाजिक सरोकार ई हुवै; बो समाज नै सई दिसा दिखावै-बतावै अर समाज री समझ रै अनुरूप भाषा रो बरतारो करै अर सीधी-साधी जाणकारी ई आपरी सामरथ मुजब देवै।

आज खेती में नूंवी-नूंवी तकनीकां अपणाईजण लाग रैयी है। सिंचाई रा साधन ई बध्या है तो खाद-बीज में ई प्रयोग होय रैया है। कैवण नै देस में 'हरित क्रांति' रै बाद खेती बधी है पण ओ साच है कै राजस्थान रा किसान हाल काळ री मार झेल रैया है। मरुधरा माथै उण 'हरित क्रांति' रा धुंधळा चितराम साला, दोय साला, चार साला, छह साला काहां रै फटकारै सूं घणी बार मिटता-सा देखां। पुराणै खेती चिंतन रै मुजब खेती ठौड़ विशेष, जळवायु अर जमीन मुजब ई करणी चाइजै। धोरां में बाजरी री ठौड़ बिदाम लगायां उपज नीं मिलै। जकी जमीन बिरखा नै मानै बीं माथै नहरां काम नीं सारै।

मरुधर माथै परंपरागत खेती, परंपरागत सिंचाई अर परंपरागत फसल ई फळदायी होय सकै। सिंचाई सारू बिरखामान 'बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति' मरुधरा माथै कारगर होय सकै। मोठ, बाजरी, मूंग, तिल, जौ, मक्की, काचर, मतीरा, टींडसी, कैर, कूकटा अर खेजड़ी री फसलां लाभदायक रैवै। जीरो, धणियो, मैथी, ग्वारपाठो अर बोरियां री खेती नै भी मुरधरा खूब मानै। इणमें सूं कईक तो जाबक काळ में भी फळापै। आ बात कुणसो राजस्थानी नीं जाणै कै काळ में कैर, बेर, रोहिड़ा अर खेजड़ी कित्ता घणा बधै? राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति में आं री ठौड़ निरवाळी है। लोकगीतां में तो वनखंड, खेती अर आं परंपरागत फसलां रो भरपूर जिकर मिलै। लोकगीतां में फसलां, फळां, रूंखां, अन्न अर औषधां रै नांव रो जिकर कोई तो मांयनो राखतो हुवैला?

मुरधरा रै खास रूंख खेजड़ी री बात करां तो केई चितराम आंख्यां साम्हीं आवै। कित्तो ई काळ हुवै, खेजड़ी दूणी बधै। इण अकाळग्रस्त प्रान्त सारू खेजड़ी अेक

इसो कल्पतरु है जिकै री सगळी चीजां काम आवै। इणरो लूंग (पत्ता) पसुआं रो पौष्टिक चारो है। धीनेड़्यां नै खळ, बिनोळा अर गुवार री दरकार ई नीं रैवै जे बांनै चरण सारू दोनूं टैम लूंग मिल जावै। खेजड़ी रो छांगण निरधूम बहीतो है जकी दूजी लकड़्यां सूं बेसी आंच देवै। खेजड़ी रो फळ 'सांगरी' काची, पाकी अर सूकी तीनूं रूपां में सांतरी सब्जी। पाका फळ खोखां रो तो कैवणो ई कांई! पुराणी खेजड़ी रा 'गरेड़ा' रो धूप अर हवन सामग्री बणै। खेजड़ी नै शम्मी भी कैवै अर शम्मी वृक्ष रो धार्मिक अर तांत्रिक महत्त्व ई बोत है। हवन में खेजड़ी री लकड़ी रो महत्त्व खास है। पूजा-पाठ में खेजड़ी रा पत्ता, डाळी अर सूकी लकड़ी काम आवै। यानी खेजड़ी री रूं-रूं कीमती है।

प्रकृति काळ सूं जूझण सारू राजस्थान्यां नै खेजड़ी हथियार रूप देई है। राजस्थानी भाषा रा चावा कवि मोहन आलोक बतावै कै अेक बीघै खेजड़ी सूं अेक किसान नै पैंतीस हजार रिपियां री फसल मिल सकै। बियां ताण मारां तो बीघै दीठ ८ मण अनाज ई दौरो झड़ै जको फगत छह-सात हजार रिपियां रो हुवै। कृषि वैज्ञानिक बतावै कै खेजड़ी रा पत्ता धंवर नै आप कानी खींच'र धरती माथै पाणी बणाय'र बरसा देवै जकै सूं खेजड़ी रै अेड़ै-गेड़ै फसलां चोखी हुवै। खेजड़ी रै नीचै खिंड्योड़ा पाका पान खाद रो जबरो काम करै जका डी.अे.पी. अर यूरिया नै दूर बैठावै।

राजस्थानी संस्कृति में तो खेजड़ी रो भोत महत्त्व है। खेजड़ी री रक्षा सारू बिश्नोई समाज री सैकड़ूं लुगायां बलिदान दिया है। बिश्नोई समाज तो 'रूंख साटै सिर' देवण री परंपरा राखै। वनदेवी अमृता कैवै— ''जीव दया बिरछां री पूजा, सरिस धरम नीं दूजा।'' खेजड़ली रा अमर बलिदान किण सूं छाना है। हिंदू दर्शन में तो धन री देवी लिछमी रो निवास ई खेजड़ी में मानीज्यो है। आपां आमतौर पर देखां कै खेजड़ी नीचै गोगाजी, हरिरामजी, भोमियाजी, खेतरपाळजी, जांभोजी, भैरूंजी, हड़मानजी, रामदेवजी, मावड़्यांजी, नखत बन्ना सा, बिग्गाजी आद लोकदेवतावां रा थान गांव-गांव में मिलै। गांवां में तो औखाणा कैईजै कै 'गांव-गांव खेजड़ी अर गांव-गांव गोगा'। खेजड़ी रै नीचै लोकदेवतावां रा थान बणावण रै लारै ई धन बरसावण वाळै रूंख नै बचावण री दीठ रैयी होवैला।

आज उत्तरी अर पच्छमी राजस्थान में नहरां रा जाळ है, पण काळ तो आपरा रंग दिखायां बिना नीं टळै। घणकरो राजस्थान बिरखा रै अधीन ई खेती करै। बिरखा रा ई गीत गावै। बिरखा नीं होयां सांपड़तै काळ नाचै। इण स्थिति सूं बचण रो सांगोपांग

इलाज है कै राजस्थान रा किसान खेजड़ी री खेती करै। खेजड़ी रा छांगण, लूंग, गूंद, सांगरी, खोखा, गरेड़ा, छोडा, लकड़ी रो बिणज करै तो काळ सामो ई नीं जोय सकै, क्यूं कै ज्यूं-ज्यूं काळ पड़ै अर अनावृष्टि हुवै, खेजड़ी दूणी बधै। हरियाळी बध्यां बिरखा नै भी नीचै उतरणो पड़ै। स्यात राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति में खेजड़ी नै घणो महत्त्व इणी कारण ई है। लोकचेतना सारू आज रै साहित्य में खेजड़ी नै ठौड़ मिलणी ई चाइजै।

⌘⌘

सावण री डोकरी : बूढी माई

समूळो राजस्थान अेक ई संस्कृति अर परंपरा रो धणी। भाषा ई समूळै राजस्थान री अेक है। आपणी मीठी मायड़ भाषा राजस्थानी। इण भाषा में ठौड़-ठौड़ न्यारी-न्यारी बोलियां। चीज-बस्त अर जीव-जंत रा नांव अेकसा ई। न्यारी-न्यारी बोलियां में उच्चारण रा पण भेद। मुहावरा, कहावत, कौथ, कैबा, लोककथा, लोकगीत, लोकभजन, लोकदेवता, तीज-तिंवार तो सगळा अेकसा ई है। न्यारा-न्यारा इलाकां री न्यारी-न्यारी बोलियां रै ताण आपणै कनै अेक ई चीज रा दो सौ-ढाई सौ तांई पर्यायवाची। इत्ता पर्यायवाची दुनियां री किणी भाषा में नीं लाधै। आ आपणी भाषा राजस्थानी री ताकत है।

अेक छोटो-सो बरसाती कीड़ो! नांव— बूढी माई! ओ कीड़ो बिरखा रै दिनां चौमासै में निकळै। लाल-लाल! मखमल रो फोवो सो! देख्यां जीव हरखै। आ बूढी माई बरसाळै में निकळै। आसोज सूं लेय'र भादवै तांई यानी समूळै चौमासै। बिरखा होई नीं कै आ आई नीं! इण रा अलेखूं नांव! आओ, आपां इण नांव जाणां।

इण बरसाती कीड़ै नै राजस्थानी भाषा में भोत नांवां सूं जाणीजै— 1. बूढी माई 2. सावण री डोकरी 3. बूढी नानी 4. तीज 5. मखमली बाई 6. ममोल 7. इंद्राणी, 8. ममोलियो 9. ममोलण।

भारत में बूढी माई हरेक जाग्यां मिलै। उत्तर भारत रै हिंदी राज्यां में इण नै वीरबहूटी अर इंद्रवधु कथीजै। अंग्रेजी में बूढी माई नै 'रेडवेलवेटमाइट' नांव सूं जाणीजै।

जीव-विज्ञान में भी बूढ़ी माई री न्यारी पिछाण है। जीव विज्ञान इणनै 'संधिपाद विभाग री लूना श्रेणी अर वरुथि वर्ग में द्रोम्बी डायोडी परिवार रै डायनाथोम्बियम वंश रो अेक जीव कथीजै। इण लाल सोवणै-मोवणै कीड़ै री खास बातां— 1. इणरै पांसळ्यां नीं होवै। 2. चौमासै में इंडा देवै। 3. बचिया 24 घंटा में इंडा सूं बारणै आ जावै। 4. इणरै आठ पग होवै। 5. ओ कीड़ो यानी बूढी माई भोत संकाळु जीव होवै, 6. बूढी माई खासकर आसाढ में दिखै पण समूळै चौमासै री धिराणी बजै।

बात-बात में कित्ती जोर री बात होयगी। बूढी माई रा कित्ता नांव साम्हीं आयग्या। आओ, बूढी माई रै नांवां री अेक और लिस्ट बांचां— 1. लाल गाय 2. लाल डोकरी 3. रामजी री डोकरी 4. इंद्र-वधु 5. इंद्रगोप 6. वीरधूटी 7. वीरबहूटी 8. ममूलियो।

बिरखा रै दिनां में बूढी माई अचाणचक परगट हुवै। खेतां में। खुलै ताल में। धरती माथै मस्ती सूं भंवै। लाल-लाल रेसम रो फोवो हुवै जाणै। इयां लागै जाणै विधना मखमल नै गूंथ बणाई हुवै। इणनै देख टाबरिया हरखै। इण रा कोड करै। हाथ सूं उठाय हथाळी में धरै। हथाळी में धरतां ई आ पग भेळा कर गांठड़ी बण जावै। टाबर देख-देख राजी हुवै। ताळी बजावै। बूढी माई टाबरां री हथाळी सूं उतर पाछी चाल पड़ै। बूढी माई जाणै टाबरां नै बिलमावण नै ई धरती माथै आई हुवै। बूढी माई असल में धरती री स्यान है। इणनै इणीज कारण वीर बाला अर वीरबहूटी भी कैईजै। 'वीरबहूही' रो मायनो सुभट बीनणी। हिंदी में योद्धा वधु। वीर=योद्धा अर बहूटी=वधु।

बूढी माई लोक में चावी ठावी। इणीज कारण लोक में जबरी पिछाण। इण माथै साहित्यकारां कवितावां लिखी। चावा-ठावा कथाकार अर कवि रामस्वरूप किसान सांतरा दूहा लिख्या है। किसान रो दूहो—

बूढी माई आ नहीं, झूठो बोलै जग्ग।
इंदराणी रै नाथ रो, पड़ग्यो होसी नग्ग।।

इणीज भांत बूढी माई माथै म्हारा ई कीं दूहा है। आपरी निजरां है तीन दूहा—

अंबर इंदर गाजियो, धरती करै बणाव।
मखमल गाभा पैरनै, बूढो पूरै चाव।।
बूढी माई आयगी, देख भरंता ताल।
इंदराणी री नाथ सूं, पड़गी जाणै लाल।
अंबर लालां मोकळी, बरसै सागै मेह।
म्हारै खेतां डोकरी, राखै कितरो नेह।।

⌘⌘

बातां रुळगी भाषा लारै

राजस्थानी संस्कृति रा ठरका निराळा। संस्कृति पण कांण राख्यां। कांण रैवै राख्यां। हाल घड़ी बडेरां कांण राख राखी है। पण कीं अरथां में मोळी पड़ती लखावै। सरुआत आंगणै सूं। आंगणै सूं सबद खूट रैया है। काको, मामो, मासो, फूंफो, कुलफी आळै भेळो अंकल। मामी, मासी, भूआ, काकी, नरसां भेळी अंटी बणगी। देखतां-देखतां ई आपणी संस्कृति खुर रैयी है। ढाबै कुण? मोट्यार तो अंग्रेजी रा कुरला करै। सो-कीं भूल'र माइकल जैकसन रा नातेदार बण ढूक्या है।

बात नातां-रिस्तां री। नातेदार बै जका आपरी पांचवीं पीढी सूं पैली फंटग्या। पण भाईपो कायम। रिस्तेदार बो जकै सूं आपरो खून रो रिस्तो। यानी चौथी पीढी सूं लेय'र आप तांई। गिनायत कैवै खुद रै गोत नै टाळ आपरी जात रै दूजै लोगां नै। जिण सूं आपरा ब्याव-संबंध ढूक सकै। कड़ूंबो कैवै दादै रै परिवार नै। लाणो-बाणो हुवै खुद रो परिवार। गनो होवै संबंध। जियां म्हारी छोरी रो गनो व्यासां रै ढूक्यो है। तो ओ होयो गनो। छोंरै अर छोरी रै सासरै आळा होया सग्गा। अै बातां अब कुण जाणै?

आजकाल कीं रिस्ता-नाता तो इलाजू कळा जीमगी। कूख मौत होवण सूं काका-काकी, बाबो-बडिया, भाई-भौजाई, मासो-मासी, फूंफो-भूआ, नणद-नणदोई, जेठ-जेठाणी, देवर-देराणी, काकी सासू, बडिया सासू, भूआ सासू, मासी सासू, मामी सासू जैड़ा सबद आंगण में लाधणा दौरा होग्या। जद अै नामी रिस्तेदार, नातेदार अर गिनायत ई नीं लाधसी तो टाबरियां री ओळ कठै!

भेळप अर अै कठ राजस्थान्यां री आण, पण अब तो ब्याव रै तुरता-फुरती न्यारी होवण री भावना। कुण जाणै कै देवर रो छोरो देरुतो, छोरी देरुती, जेठ रो बेटो जेठूतो, बेटी जेठूती, नणद रा बेटा-बेटी नाणदो अर नाणदी, काकै अर भूआ रा बेटा-बेटी, भतीजा-भतीजी, आजकाल अेक छोंरै रो चलण। छोरी तो होवण ई नीं देवै। अेक छोंरै रै अेक छोरो। बाकी रिस्तां रै लागै मोरो। आ होयगी भावना। घणकरै दिनां में टाबर पूछसी, ''पापा ये भूआ और फूंफा क्या होता है? मासा-मासी किसे कहते

हैं?'' ना साळा-साळी रैसी, ना मासा-मासी अर ना मामा-मामी। काका-काकी, भूआ-फूंफा अर बाबा-बडिया सोध्यां ई नीं लाधैला।

दूसरो ब्याव करणियो दूजबर, किणी रै बिना ब्याव बैठणै, चूड़ी पैरणो बजै। इण नै नातो कैवै। नातै जावण आळी लुगाई नै नातायत। नातै गयोड़ी लुगाई रै लारै आयोड़ै टाबर नै गेलड़ कैवै। जद रिस्ता-नाता, गन्ना अर कड़ूंबै रो ग्यान नीं तो संस्कारां रो ध्यान कठै! बडै रै पगाणै बैठणो, सिराणै नीं। भेळा जीमतां टाबर पछै जीमणो सरू करै पण चळू पैली करै। बडेरो आदमी जीमणो पैली सरू करै पण चळू छेकड़ में करै। सवारी माथै लुगाई लारलै आसण बैठै। आगलै पासै बैन, भौजाई, मा, दादी, काकी, बडिया, भूआ आद बैठै। अब पण अै बातां तो भाषा रै लारै ई रुळगी। मायड़ भाषा नै मानता मिलै तो पाछी बावड़ै। अब बांचो रिस्ता जाणण री दो ओळ्यां—

(1)

पीपळी रै चोर बंध्यो, देख पणियारी रोई।
कांई थारै सग्गो लागै, कांई लागै थारै सोई।।
नीं म्हारै सग्गो लागै, नीं लागै म्हारै सोई।
ईं रै बाप रो बैन्दोई, म्हारै लागतो नणदोई।।

(बेटी)

(2)

जांतोड़ा रै जांतोड़ा, थारै कड़ियां लाल लपेटी।
आ आगलै आसण बैठी, थारै बैन है का बेटी।।
नीं म्हारै आ बैन है, नीं है आ म्हारी बेटी।
ईं री सासू अर म्हारी सासू, है आपस में मां-बेटी।।

(बेटै री बहू)

⌘⌘

आपणा अजब-गजब सवाल

जठै जकी भाषा में भणाई हुवै बठै उणी'ज भाषा में ग्यान-विग्यान अर गणित हुवै। कोई भाषा खुरण ढूकै तो उणरो व्याकरण, ग्यान-विग्यान अर गणित भी सांवटीजण लागै। आपणै देस में संस्कृत भाषा बौवार में नीं रैयी तो वैदिक गणित अर ज्योतिर्विग्यान भी अदीठ हुयग्या। आजादी सूं पै'ली राजस्थान री रियासतां में भणाई राजस्थानी भाषा में होवती। उण घड़ी गणित, विग्यान, सामाजिक ग्यान, इतिहास आद सगळा राजस्थानी में होवता। अंग्रेज आया तो भणाई में पच्छम री रेळपेळ होयगी। आजादी पछै तो जाबक ई बदळाव आयग्यो। पण बूढै-बडेरां री जबान माथै हाल मुहारणी-पावड़ा तिरै। टाबरां नै रमावता-बिलमावता अै डैण आज भी बिसरी बातां सुणावै। टाबरां नै बुलावै— ''पंदरै अेकै पंदरै, पंदरै दूणा तीस। तिंयाड़ा-पैंताळा, चौकां साठ। पांण पिचेतर, छक्कड़ा नब्बै। सत्त पिचड़ोत्तर, अंठां बीसे। नब्बड़ पैंतीसे, पंदरा धाया डोढ सै!'' गिणती-पहाड़ां री राग सुणनजोग हुवै। राग में गायोड़ा पहाड़ा चटकै ई कंठां हुवै। टाबरां सूं कटवां पहाड़ा पूछै, ''बताओ किसै पहाड़ै में तीनूं भाई अेकसा?'' टाबरां री बोली बंद। तो खुद ई बतावै डोकरो, सैंतीस रै पहाड़ै में अेका, दूवा अर तीया अेकसा भाई हुवै। सैंतीस तीया अेक सौ इग्यारा (111), सैंतीस छक्का दोय सौ बाईस (222) अर सैंतीस नौका तीन सौ तैंतीस (333)। पण अब कुण याद करै सैंतीस तक रा पहाड़ा। पाव, आधो, पूणो, सवायो, डोढो, ढूंचो तक रा पहाड़ां री रागां न्यारी-निरवाळी। राजस्थान री पौसाळां सूं राजस्थानी भाषा अळगी होयी तो अै रागां भी जीवती रैयी। अब री भणाई जूना लोगां रै अर जूनी पढाई आज रै टाबरां रै भेजै को ढूकै नीं। राजस्थानी रो गणित तो और भी निरवाळो। कटवां पहाड़ा अर कटवां गिणती रा जोड़। अल-जबर, अकल-चरख अर लीलावती रा सवाल। अल-जबर में बीज गणित रा सवाल हुवै। अल-जबर स्यात अंग्रेजी आळो 'एलजेबरा' ई है। अल-जबर रा दोय सवाल आपरी निजर—

(1)

आधी रोकड़ ब्याव में, चौथाई बाजार।
हंसा-पांती सौळवां, पोतै पांच हजार।।

(2)

आधी पड़ी कीचड़ में, नवों भाग सींवार।
बावन गज बारणै पड़ी, कैवो सिल्ला विस्तार।।

इणी भांत अकल-चरख रा सवाल है। आं सवालां नै सुणतां अकल चरखै चढ जावै। उथळो ढूंढण में भोडकी भुंवाळी खावण लागै। दोय सवाल देखो—

(1)

अेक लुगाई पांच सेर सूत लेय'र हाट माथै गई। परचूणियै सूं बोली, ''म्हनै पांच सेर सूत सट्टै पांच सेर परचूण इण भांत देय देवो—

सूत सवाई सूंठ दे, आधी दे अजवाण।
घिरत बराबर तोल दे, दूणो दे मीठास।।

(2)

अेकर री बात। सौदागर री नार दरपण में मूंढो देख हार पैरयो। हार दाय नीं आयो। उण हार नै तोड़ बगायो। हार में आधा अटक्या। सेज में पंदरा पटक्या। गोद में रैया चाळीस। पल्लै में रैया सवाया। तीजो भाग पड़्यो भू पर। हिस्सा नौ का पता न लाग्या। गणित सार में जे हो चतर तो बताओ, हा कित्ता मोती? अकल-चरख रा सवाल तो म्हे अंवेर लिया। उथळा पण थे सोधो। कीं भोडकी पाठकां नै भी घुमावणी चाईजै। लीलावती रा कीं सवाल भी हा। आपरै ओळै-दोळै जे अकल-चरख, अल-जबरा अर लीलावती रा सवाल लाधै तो अंवेरो।

आओ, छेकड़ में गणित री अेक आडी बांचां—

अेक घरां घणा बटाऊ आया। मनवार होयी। बेळू, मतलब रात रै जीमण पछै पोढण री बेळ्यां आई। मांचा कमती पड़ग्या। दोय-दोय बटाऊ भेळा सोवै तो अेक मांचो बधै। न्यारा-न्यारा सोवै तो अेक बटाऊ बधै। बताओ, कित्ता मांचा अर कित्ता बटाऊ?

⌘⌘

आपणा इलाका : आपणा नांव

राजस्थान जूनो प्रदेश। जूनी मानतावां। जूनो इतिहास। जूनी भाषा। जूनी परापर। परापर अैड़ी कै आज तक इकलग चालै। खावणै-पीवणै, उठणै-बैठणै अनै बोवार री आपरी रीत। रीत में ठरको। ठरकै में इतिहास री ओळ।

ग्यान-विग्यान अर भूगोल री ओळ। बात-बोवार अर नांव में राजस्थानी री सौरम। इण सौरम रो जग हिमायती। आजादी सूं पैली राजस्थान में घणा ठिकाणा। घणा ई राज। राजपूतां रा राज। इणी पाण राजपूतानां। राजा राज करता, पण धरती प्रजा री। प्रजा राखती नांव धरती रा। नांवकरण में ध्यान धरती रै गुण रो। राजवंश, फसल, माटी, पाणी, फळ, पसु-पखेरू धरती रा धणी। आं री ओळ में थरपीजता इलाकै रा नांव।

बीकानेर रा संस्थापक राव बीकाजी रै नांव माथै बीकाणो। बीकाणै में बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ, चूरू, भटिंडा, अबोहर, सिरसा अर हिसार। राव शेखाजी रै नांव माथै शेखावाटी में चूरू, सीकर अर झुंझुणू। मारवाड़ में जोधपुर, पाली, जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर। मेवाड़ में उदयपुर, चित्तौड़गढ, भीलवाड़ा अर अजमेर। वागड़ में बांसवाड़ा अर डूंगरपुर। ढूंढाड़ में जयपुर, दौसा, टोंक, कीं सवाईमाधोपुर। मेवात में अलवर, भरतपुर। जैसलमेर में माड़धरा, हनुमानगढ नै भटनेर, करौली-धोलपुर नै डांग, अलवर नै मतस्य, जयपुर नै आमरे, अजमेर नै अजयमेरु, उदयपुर नै भीलनगरी, बीकानेर नै जांगळ अर बागड़ भी केईजै। राजस्थान रै हर खेतर रा न्यारा-निरवाळा नांव। कीं नांव बिणज-बोपार माथै। कीं नांव जमीन री खासियतां रै पाण। बीकाणै में भंडाण, थळी, मगरो अर नाळी जैड़ा नांव सुणीजै। अै हाल तो बूढै-बडेरां री जबान माथै है। बंतळ में उथळीजै। पण धीरै-धीरै बिसरीज रैया है। आओ, आपां जाणां आं नांवां री महिमा।

भंडाण : भंडाण बीकानेर जिलै री लूणकरणसर, बीकानेर अर कीं कोलायत तहसील रै उण गांवां नै कैवै जकां रै छैकड़ में 'अेरा' लागै। जियां— हंसेरा, धीरेरा, दुलमेरा, खींयेरा, वाडेरा।

भंडाण रा मतीरा नांमी होवै। अठै री आल जबर मीठी होवै। आल लांबै मतीरै नै कैवै। भंडाण री गायां-भैंस्यां, भेड़-बकरियां अर ऊंट नांमी। भंडाण रो घी, मावो अर मोठ नांमी। मतीरो भंडाण रो सै सूं सिरै। अठै रै मतीरै सारू कैबा है—

खुपरी जाणै खोपरा, बीज जाणै हीरा।
बीकाणा थारै देस में, बडी चीज मतीरा।।

थळी : चूरू जिलै रै रतनगढ अर सुजानगढ रै खेतर नै कैवै। इण खेतर रा लोग थळिया। थळी री बाजरी, मोठ, काकड़िया, मतीरा नांमी हुवै। थळी री बाजरी न्हानी अर मीठी होवै। थळी रा वासी मोटो अनाज खावै। काम में चीढा अर जुझारू अर तगड़ा जिमारा होवै। थळी सारू कैबा है— खाणै में दळिया, मिनखां में थळिया।

मगरो : बीकानेर जिलै री कोलायत तहसील अर इणरै लागता जैसलमेर रा कीं गांवां नै मगरो कैवै। अठै री जमीन कांकरा रळी। मगर दांई समतल। पधर। इण कारण नांव धरीज्यो मगरो। मगरै रा ऊंट, गाय-भेड़ अर बकरी नांमी। कोलायत धाम भी मगरै में पड़ै।

नाळी : हनुमानगढ, सूरतगढ, पीळीबंगा, अनूपगढ, विजयनगर अर हरियाणा रै सिरसै जिलै रै गांवां नै नाळी कैवै। अठै बगण आळी वैदिक नदी सुरसती जकी नै आजकाल घग्घर भी कैवै। इण नदी खेतर नै नाळी कैईजै। इण इलाकै रो नांव नाळी क्यूं थरपीज्यो। इण सूं जुड़्योड़ी अेक रोचक बात है। आओ बांचां—

जद घग्घर में पाणी आवतो। बीकानेर रा राजा नदी पूजण हनुमानगढ आवता। अेकर राजाजी हनुमानगढ आयोड़ा हा। लारै सूं अेक जणो अरदास लेय'र महलां पूग्यो। राजाजी नीं मिल्या। पूछ्यो तो लोगां बतायो, नदी पूजण गया है। बण पूछ्यो, नदी के होवै ? अेक कारिंदै जमीन माथै माटी में घोचै सूं लीकटी बणाई। लोटै सूं उण में पाणी घाल्यो, बतायो, नदी इयां होवै। बण कैयो, अे डोफा ! आ क्यांरी नदी ? आ तो नाळी है, नाळी। बस, उण दिन रै बाद इण इलाकै रो नांव नाळी पड़ग्यो। नाळी रा चावळ, कणक अर चीणा जग में नांमी। नाळी री जमीन घणी उपजाऊ होवै।

⌘⌘

मरुधर महिमा मोकळी

राजस्थानी भाषा बातां री धिरयाणी। बातां में बातां। पण बातां में तंत। तंत भी इत्तो कै अंत नीं। बोल्यां मूंडै मिठास। अंगेज्यां उच्छब। अर बपरायां हिमळास। पण बोलण में सावचेती री दरकार। दुनियां में राजस्थानी ई अैड़ी भाषा जकी में हरेक क्रिया सारू निरवाळा सबद। संज्ञावां रा न्यारा विशेषण। क्रिया अर संज्ञा सबदां री आपरी कांण। आ कांण राख्यां ई सरै। नींस अरथ रो अनरथ होय जावै।

राजस्थानी भाषा में फूल नै पुहुप कैईजै। जे आपां कैवां कै म्हैं फूल ल्यायो हूं, तो बडेरा मिनख टोकसी कै फूल ल्या बडेरां रा। ओ तो पुहुप का पुस्ब है। पटाखो फूटै नीं, छूटै। बंदूक भी चालै नीं, छूटै। भांडा साफ नीं करीजै, मांजीजै। फूस बुहारीजै अर झाड़ू काढीजै। मोती चमकै नीं, पळकै। ढोल ढमकै। बाजा बाजै। बंदोरो कढै नीं, नीसरै। विदाई नीं, सीख दिरीजै का लिरीजै। नेग दिरीजै-लिरीजै।

जिनावरां री बोली रा भी सबद न्यारा-न्यारा। डेडर-डर-डर। चीड़ी चीं-चीं का चींचाट करै। कागलो कांव-कांव। घोड़ी हींसै। गा ढांकै। गोधो दड़ूकै। ऊंठ आरड़ै-गरळावै। भैंस रिड़कै। गधियो भूंकै। कुत्तो भूंसै। सांढ झेरावै। बकरियो बोकै।

जिनावरां रै बच्चियां रा नांव भी रिवाळा। कुत्ते रो कुकरियो, हूचरियो का कूरियो। सांढ रो टोडियो-तोडियो। भैंस रो पाडियो। भेड़ रो उरणियो। गा रो बछड़ियो, टोगड़ियो, लवारियो, केरड़ो। आं रा स्त्रीलिंग-कूरड़ी-हूचरड़ी, टोडकी-तोडकी, पाडकी, बछड़ती। डांगरां रा नांव ओज्यूं है। गा-बैड़की। भैंस-पाडी, झोटी। सांढ-टोरड़ी। घोड़ी बछेरी।

पसुवां रै गरभ धारण करण रा भी पाखती नांव। भेड़ तुईजै। सांढ लखाइजै। गाय हरी होवै। धीणै होवै, दूळ रळै, नूंई होवै, कामल होवै, साखीजै, गोधै रळाइजै, गोधै भेळी करीजै। भैंस गड़ीजै। पाडो छोडीजै। पाळै आवै। घोड़ी ठाण देवै। आंनै काबू करण रा नांव भी न्यारा-न्यारा तरीका, न्यारा-न्यारा नांव। गाय रै नाजणो-न्याणो। भैंस रै पैंखड़ो। घोड़ी रै लंगर। ऊंठ रै नोळ बीड़णी। घोड़ी रै रेवर। बळधां रै दावणा देईजै।

राजस्थानी में उच्छबां रा, तीज-तिंवारां रा, मेळा-मगरियां रा, रीत-परंपरा सारू आपरा सबद। बनड़ो गाईजै। जल्लो गाईजै। चंवरी मंडै। हथळेवो जुड़ै। घोड़ो घेरीजै। बारणो रोकीजै। सामेळो-समठूणी करी। तागा तोड़ीजै। पागा पूजीजै। ढूंढ माथै तेड़ीजै। जच्चा गाईजै। भाषा भाखीजै। कूंत करीजै। झाळ अर तिरवाळा आवै। होळी मंगळाईजै। बीनणी बधारीजै। कूं-कूं चिरजीजै। धोक लगाईजै। पगां लगाईजै। पगां पड़ीजै। जात लगाईजै। फेरा देईजै। झड़ूलो उतारीजै। चेजो चिणाईजै। माल-बस्त मोलाईजै। गांवतरो करीजै। खळो काढीजै। इण बात माथै बांचो धोंकळसिंह चरला रो ओ दूहो—

धन धोरा धर धोळिया, धन मरुधर री माय।
मरुधर महिमा मोकळी, वरणन करी न जाय।।

⌘⌘